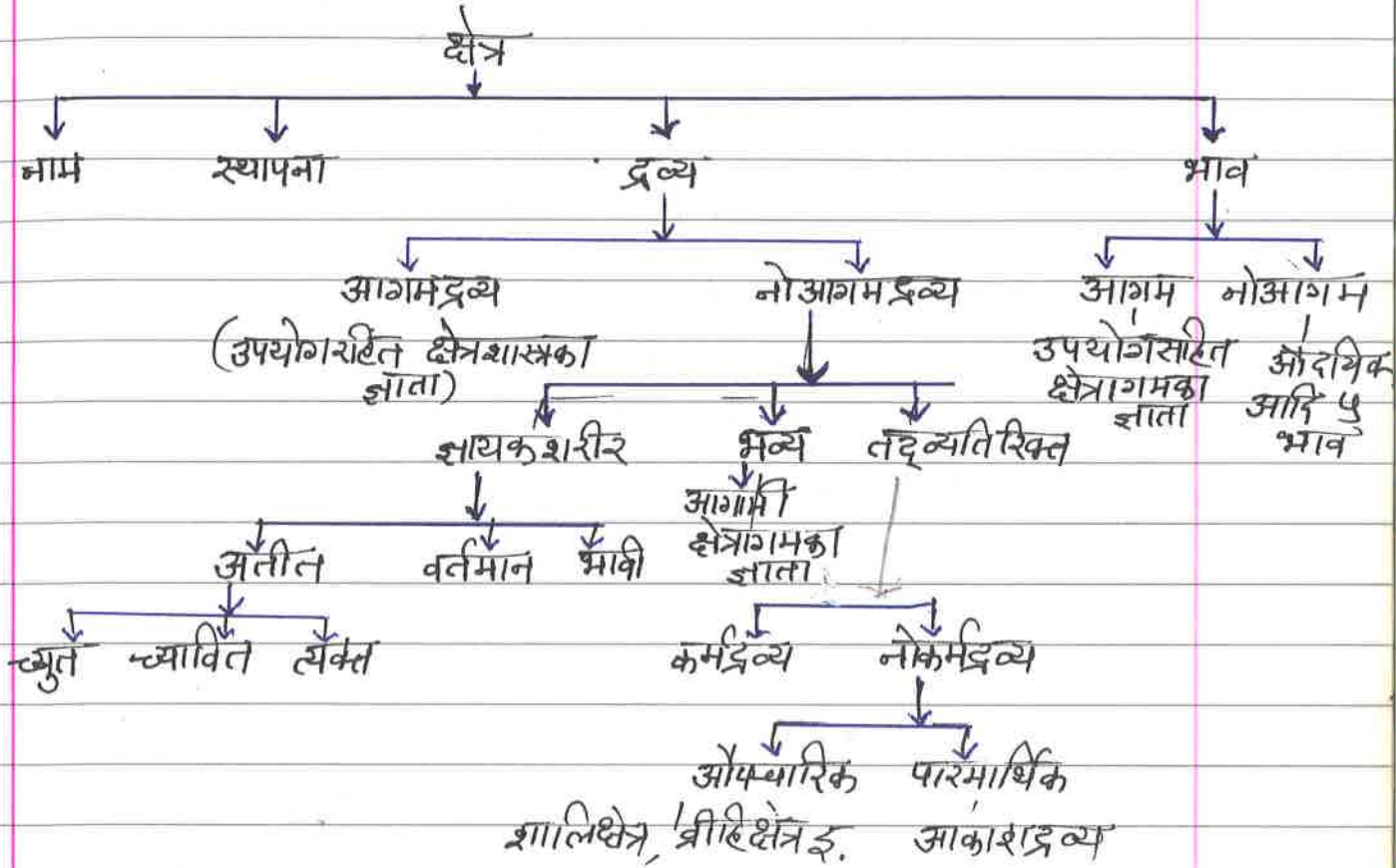


लोया लोयपयासं गोदमथेरं पुणो जिणं कीरं।
ठामिऊण खेतसुत्तं जहोवएसं पयासेमो ॥



नामनिक्षेप द्रव्यार्थिक नयका विषय है - इसमें तीन हेतु दिये हैं -

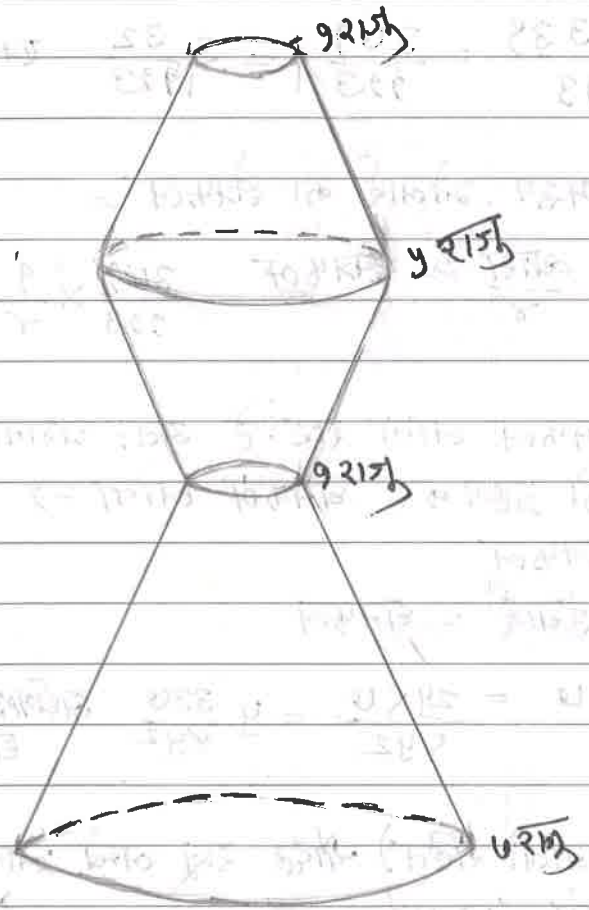
- 1) वचन और वाच्यके नित्य संबंधके निश्चय किये बिना नामनिक्षेप नहीं होता है अर्थात् इस शब्दसे यह पदार्थ जन्मना चाहिए इस प्रकारका नित्य संकेत ग्रहण करके शब्द अपने वाच्यका वाचक होता है।
- 2) नामनिक्षेप लक्षण सामान्य और सादृश्य सामान्य के निमित्तसे होता है।
लक्षणसामान्य - पूर्वपर कालमें होनेवाले क्षेत्रशब्दोंमें समान प्रतीतिकारण
सादृश्यसामान्य - किसी एक कालमें विभिन्न क्षेत्रोंमें समानताकी प्रतीति का
- 3) इस शब्दमें वाच्य और वाचकरूप दो शक्तियाँ पायी जाती हैं।
शब्द अपने वाच्यभूत मर्थको बतता है इसलिए वाचक है और शब्द स्वयंको बतता करता है इसलिए वाच्य भी है।

स्थापना निक्षेप द्रव्यार्थिक नयका विषय है - इसमें दो हेतु दिये हैं -

- 1) स्थापना निक्षेप सद्भाव और असद्भावरूपसे सर्व द्रव्योंमें व्याप्त है।
- 2) प्रधान और अप्रधान द्रव्योंकी एकता का कारण है। जिस वस्तुकी

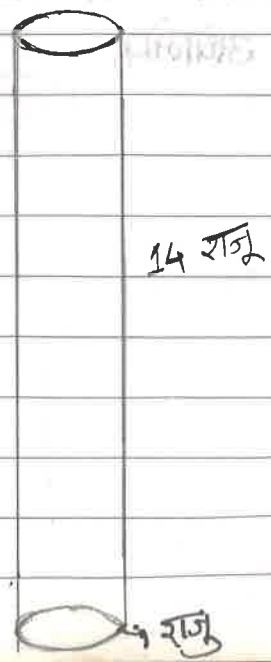
स्थापना की जाती है वह प्रधान द्रव्य और जिस वस्तुमें स्थापना की जाती है वह अप्रधान द्रव्य कहलाता है। दोनों में एकल की स्थापना द्व्यार्षिक नयका विषय है।

ओधनिर्देशकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव सर्व लोकमें रहते हैं।
मृदंगाकार लोक -



गोलाकार लोक का धनफल -
चौदह राजू प्रमाण आयत
एक राजू प्रमाण विस्तृत
गोल आकारवाली ऐसी
मृदंगाकार लोककी सूचीको
लोकके मध्यसे निकालकर
पृथक् स्थापन करना।

त्रसनाली →



अधोलोक का घनफल \rightarrow

एक राजू विष्कम्भरूप गोल त्रसनाली की परिधि \rightarrow

सूक्ष्म परिधि निकालने का सूत्र \rightarrow

$$\frac{\text{व्यास} \times 9E + 9E}{993} + \frac{\text{व्यास} \times 3}{9} = \text{सूक्ष्म परिधि}$$

$$\frac{9 \times 9E + 9E}{993} + \frac{9 \times 3}{9} = \frac{32}{993} + \frac{993 \times 3}{993}$$

$$\frac{32 + 339}{993} = \frac{371}{993} = 3 \frac{32}{993} \quad \text{एक राजू गोल की सूक्ष्म परिधि}$$

एक राजू विष्कम्भरूप गोलाई का क्षेत्रफल =

$$\text{परिधि} \times \frac{\text{व्यास}}{2} = \text{क्षेत्रफल} \quad \frac{371}{993} \times \frac{9}{2} = \frac{371}{892} \text{ क्षेत्रफल}$$

अधोभाग का घनफल लाना इष्ट है अतः त्रसनाली का नीचे के सात राजू प्रमाण लंबाई को ग्रहण कर घनफल लाना \rightarrow

अर्ध अधोभाग का घनफल

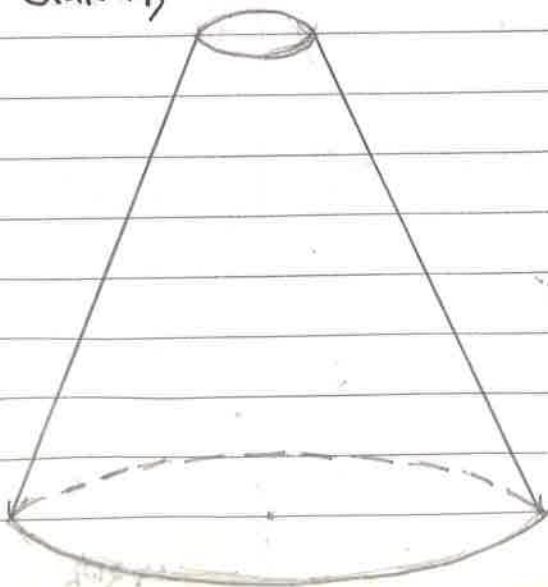
$$\text{क्षेत्रफल} \times \text{उंचाई} = \text{घनफल}$$

$$\frac{371}{892} \times 6 = \frac{2496}{892} = 2 \frac{336}{892}$$

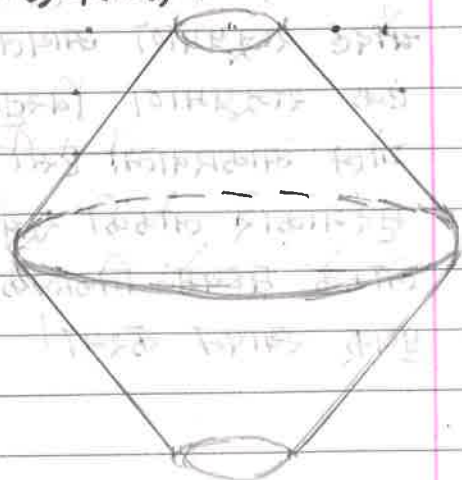
अर्धभाग प्रमाण नीचे की गाली का घनफल

सूची रहित (त्रसनाली रहित) चौदह राजू लम्बे लोकरूप क्षेत्र के मध्यलोक के पास से दो खंड करना।

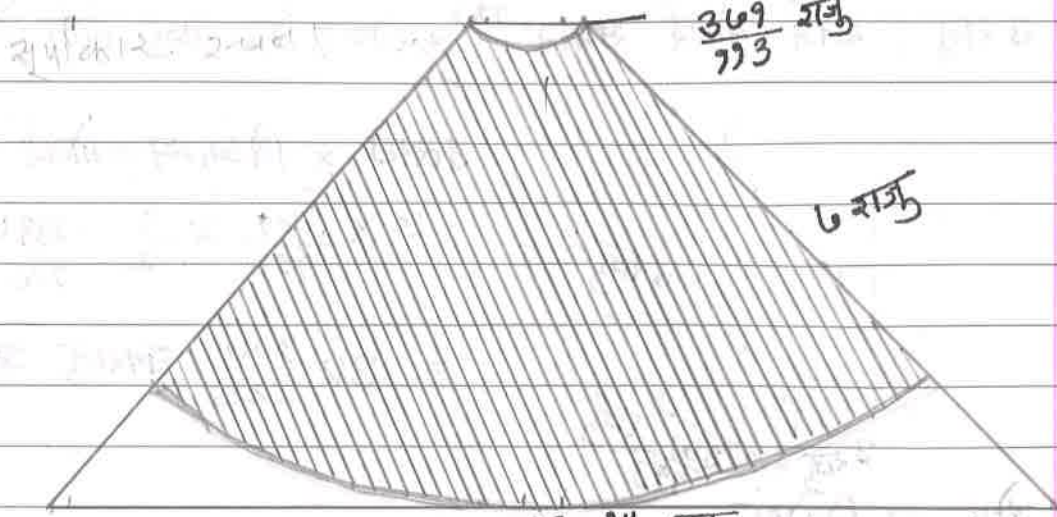
अधोलोक



उर्ध्वलोक



अधोलोक संबंधी खंडको ग्रहण कर ऊपरसे लगाकर नीचे तक काटकर पसारने पर सूर्य (रूप) के आकारवाला क्षेत्र हो जाता है।



इस सूर्यकार क्षेत्रके मुखका विस्तार $\frac{369}{993}$ है।
 तलका विस्तार $22 \frac{14}{993}$ राजु प्रमाण है।
 लोककी नीचेकी गोलाईका विष्कंभ 6 राजु है उसकी परिधि का प्रमाण निकालने पर तलका विस्तार प्रमाण $\frac{2509}{993}$ आता है।
 6 राजु गोलाईकी ^{सूर्य} परिधि \rightarrow

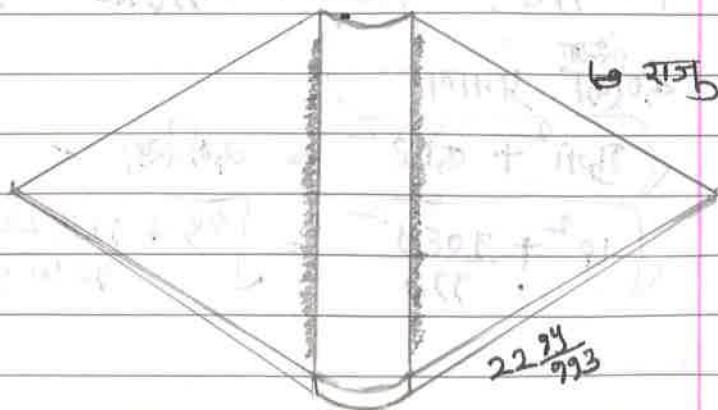
$$\frac{\text{व्यास} \times 9\text{E} + 9\text{E}}{993} + \frac{\text{व्यास} \times 3}{9} = \text{सूर्य परिधि}$$

$$\frac{6 \times 9\text{E} + 9\text{E}}{993} + 6 \times 3 = \frac{992 + 9\text{E}}{993} + \frac{29 \times 993}{993} = \frac{124 + 2993}{993}$$

$$= \frac{2509}{993} = 22 \frac{14}{993} \text{ राजु, सूर्य परिधि प्रमाण}$$

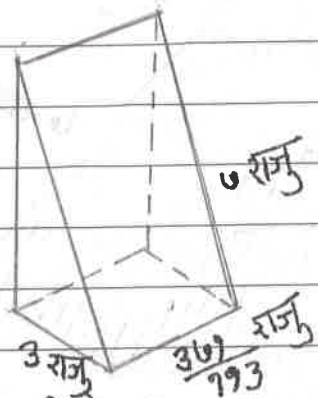
इसलिए इस गोलाईरूप परिधिको काटकर पसारने पर तलविस्तार $22 \frac{14}{993}$ आता है।
 दो त्रिकोण क्षेत्र और एक आयत क्षेत्र

इसे मुखविस्तारके अन्तसे लगाकर दोनों ओर सात राजु लम्बा नीचेकी ओर खेदने पर दो त्रिकोण क्षेत्र और एक आयत-चतुर्भुज क्षेत्र, इस प्रकार तीन क्षेत्र हो जाते हैं।



आयत चतुरस्र आकारवाले मध्यवर्ती क्षेत्र का धनफल \rightarrow
(ऊंचाई) उल्लेख = 6 राजु , विष्कम्भ = $\frac{369}{993}$ राजु ; मोटाई = एक प्रदेशप्रमाण, तलभागमे 3 राजु , सर्वत्र मोटाई समान करनेपर उठ राजु होती है।

② समीकरण

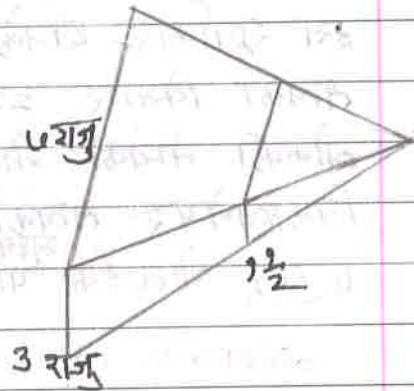
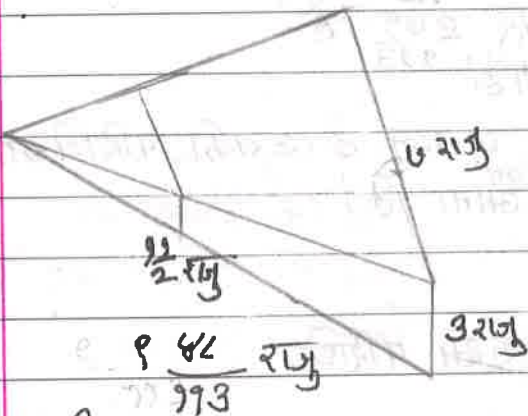


उल्लेख \times विष्कम्भ \times मोटाई = धनफल

$$6 \times \frac{369}{993} \times \frac{3}{2} = \frac{2496 \times 3}{993 \times 2} = \frac{6687}{228}$$

$$= 38 \frac{906}{228} \text{ धनराजु आयत चतुरस्र का धनफल}$$

शेष दो त्रिकोण =



कोटी 6 राजु , भुजा $9 \frac{42}{993}$ राजु

तलभागका विस्तार $22 \frac{94}{993}$ राजु था उसमेंसे आयत क्षेत्र का विस्तार $\frac{369}{993}$

कम करके 2 से भाग देनेपर त्रिकोण का अधोविस्तार (भुजाका) का प्रमाण आता है

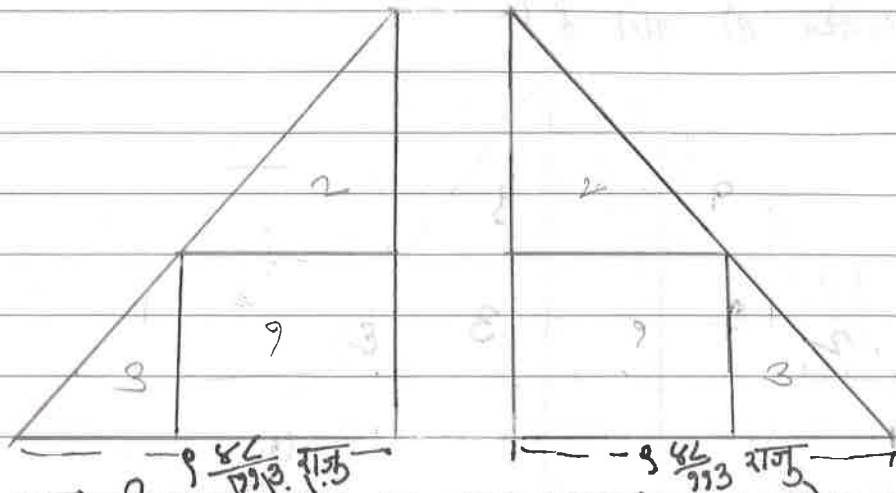
$$\frac{2409}{993} - \frac{369}{993} = \frac{2930}{993} \cdot \frac{9064}{993 \times 2} = \frac{9064}{993} = 9 \frac{42}{993} \text{ राजु भुजा}$$

कर्णका प्रमाण
 $\sqrt{\text{भुजा}^2 + \text{कोटी}^2} = \text{कर्णरेखा}$

$$\sqrt{6^2 + \frac{9064}{993}} = \sqrt{89 + \frac{9938224}{92689}} = \sqrt{\frac{89 \times 92689 + 9938224}{92689}} = \sqrt{\frac{9049504}{92689}}$$

इन दोनों त्रिकोण क्षेत्रोंको कर्णभूमिसे लेकर दोनों ही दिशाओंमें बीचमेंसे काटनेपर तीन तीन क्षेत्र हो जाते हैं।

एक-एक



इ उक्त तीन क्षेत्रोंमें एक एक आयत चतुरस्रक्षेत्र और दो त्रिकोणक्षेत्र जानना चाहिये

दो आयत चतुरस्र का धनफल \rightarrow

$$\text{उत्सेध} = \frac{6}{2} \text{ राजु}, \text{ विष्कम्भ} = 8 \frac{90E9}{22E}, \text{ बाह्य} = 3 \text{ राजु}$$

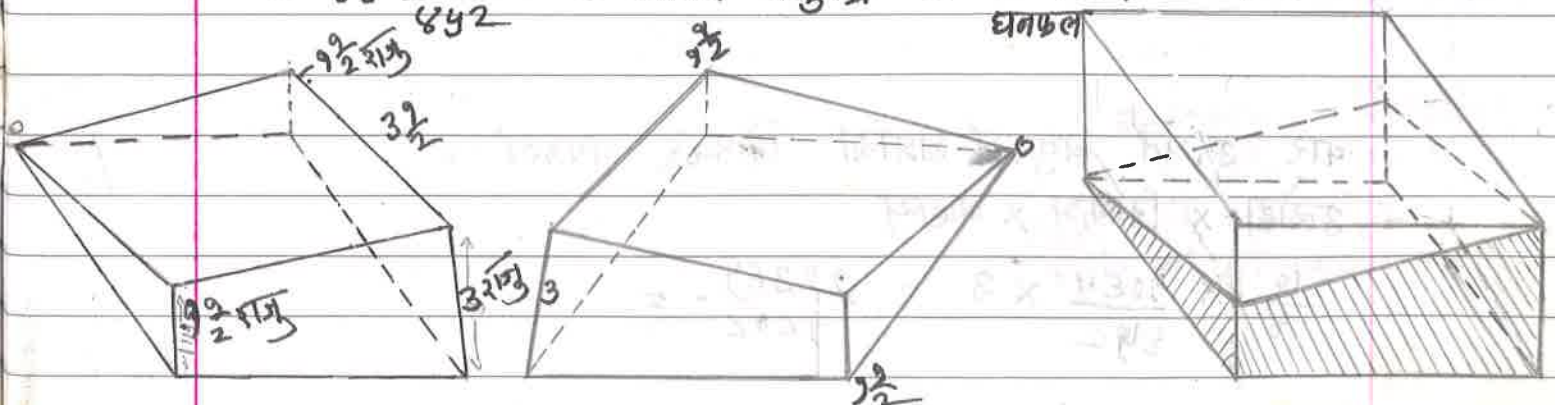
3 राजु, दो कोणोंपर $9\frac{1}{2}$ राजु, अवशिष्ट कोणपर एक प्रदेश प्रमाण अन्यत्र क्रमसे वृद्धिको प्राप्त बाह्य है।

इन दोनों आयत चतुरस्र क्षेत्रोंको लेकर उनमें एक क्षेत्रके ऊपर दूसरे क्षेत्रको उलटा करके स्थापित करनेपर सर्वत्र तीन राजु बाह्यवाला क्षेत्र हो जाता है।

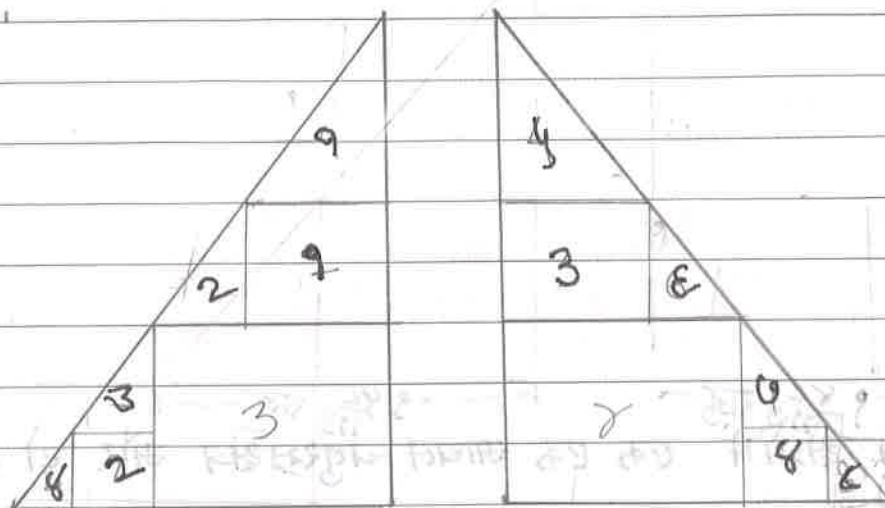
$$\text{उत्सेध} \times \text{विष्कम्भ} \times \text{मोटाई} = \text{धनफल}$$

$$\frac{6}{2} \times 8 \frac{90E9}{22E} \times 3 = \frac{6}{2} \times \frac{90E9}{22E} \times 3 = \frac{6844 \times 3}{842} = \frac{223E4}{842}$$

$$= 85 \frac{296}{842} \text{ दो आयत चतुरस्र का मिलकर धनफल}$$



अवशिष्ट जो चार त्रिकोण क्षेत्र हैं, वे साढ़े तीन राजु उल्लेखवाले और ५१६१ राजु भुजावाले हैं। उन्हें कर्णक्षेत्रसे लगाकर दोनों ही पार्श्वभागोंमें बीचसे छिन्न करनेपर चार आयत चतुरस्रक्षेत्र और आठ त्रिकोण क्षेत्र हो जाते हैं।



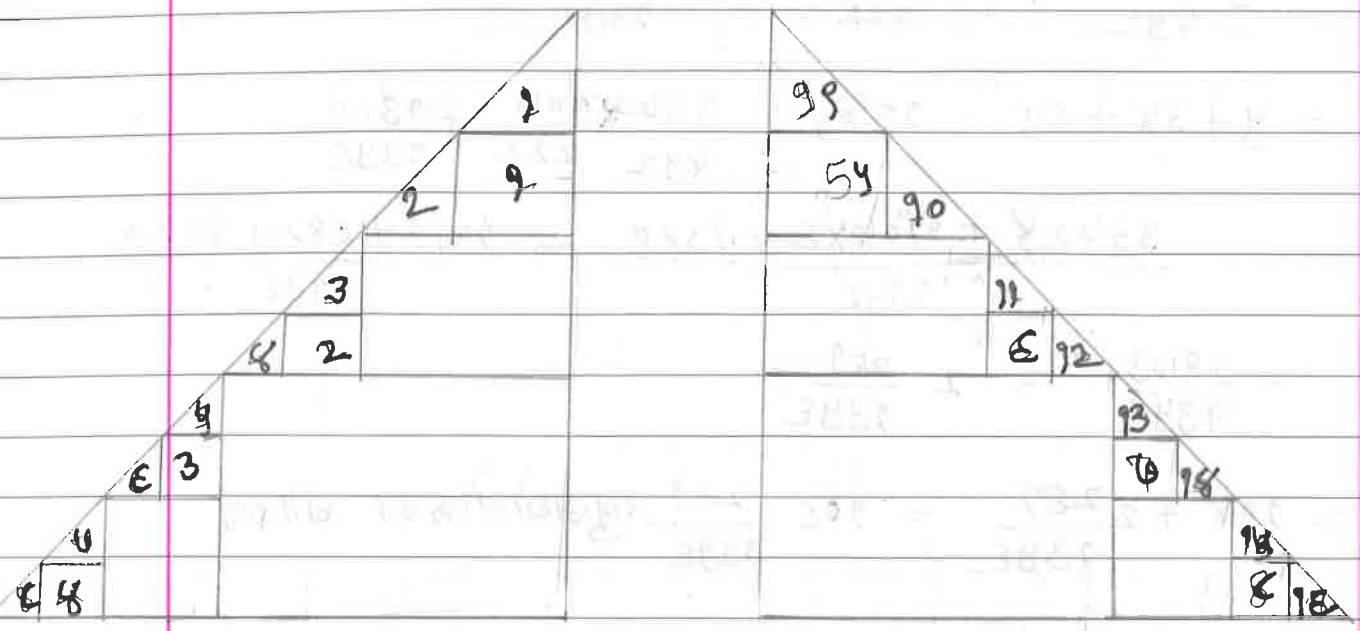
यहांपर चारों ही आयत चतुरस्र क्षेत्रोंका धनफल पहलेके दोनो आयत चतुरस्र क्षेत्रोंके धनफलके चतुर्थ भाग मात्र होता है क्योंकि चारों ही क्षेत्रोंको बालत्यके अविरोधसे इकड़ा करनेपर अर्थात् यथाक्रमसे विपर्यास कर उलटा रखनेपर तीन राजु बालत्य और पहलेके क्षेत्रके विष्कंभ और आयामसे अर्धमात्र विष्कंभ और आयाम-वाला क्षेत्र पाया जाता है।

चार आयत चतुरस्र

चार आयत चतुरस्र क्षेत्रोंका मिलकर धनफल →
उल्लेख × विष्कंभ × बालत्य

$$\frac{6}{4} \times \frac{9064}{892} \times 3 = \frac{22364}{9102} =$$

अब शेष रहे आठ त्रिकोण क्षेत्रोंको पूर्वके समान ही खंडित करनेपर उनमें सोलह त्रिकोणक्षेत्र और आठ आयत चतुरस्र क्षेत्र हो जाते हैं।



इन आयत चतुरस्रोंका ^{मिलकर} उत्सर्ग और विष्कम्भ पूर्व चतुरस्र क्षेत्रोंसे आधा और बालत्य उ राजु ही है। इसलिए इनका धनफल पूर्व चार आयत चतुरस्र क्षेत्रोंके धनफलका चतुर्थ भागमात्र होता है।

इसी प्रकार सोलह, बत्तीस, चौसठ आदिक्रमसे आयत चतुरस्र क्षेत्र पहले पहलेके आयत चतुरस्र क्षेत्रके धनफलोंके चतुर्थ भागमात्र धनफलवाले होते हुए तब तक चले जायेंगे जबतक कि एक प्रदेश नहीं प्राप्त हो जायगा।

समस्त आयत चतुरस्र क्षेत्रोंके धनफलोंका जोड़ =

$$\frac{(\text{अंतधन} \times \text{गुणकार}) - \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 1} = \text{गुणकाररूप संख्याओंका संकलन धन}$$

यह अंतधन प्रथम दो आयत चतुरस्रोंका धनफल है क्योंकि आगेकी संख्याएँ उसका चतुर्थ भागमात्र होती गयी है। गुणकारका प्रमाण ४

समीकरण
③

$$\frac{22384 \times 4}{452 \times 3} = \frac{29880}{9358} = 84 \frac{9320}{9358} \text{ सब आयत चतुरस्रोंका संकलित धनफल}$$

यहां अदिप्रमाण को घटाया नहीं है। एकको न गिनकर संकलन निकाला है ऐसा लगता है।

अर्ध त्रसनाली का घनफल + 9 आयत-चतुर्भुज घनफल + शेष आयत-चतुर्भुजों का घनफल = अधोलोक का घनफल

$$y \frac{336}{452} + 38 \frac{906}{228} + 8y \frac{9320}{9358}$$

$$= y + 38 + 8y = 908 \quad \frac{336 \times y + 906}{452 \times 228} + \frac{9320}{9358}$$

$$\frac{336 \times y + 906 \times 8 + 9320}{9358} = \frac{9099 + 882 + 9320}{9358}$$

$$= \frac{2963}{9358} = 2 \frac{289}{9358}$$

$$= 908 + 2 \frac{289}{9358} = 908 \frac{289}{9358} \text{ राजु अधोलोक का घनफल}$$

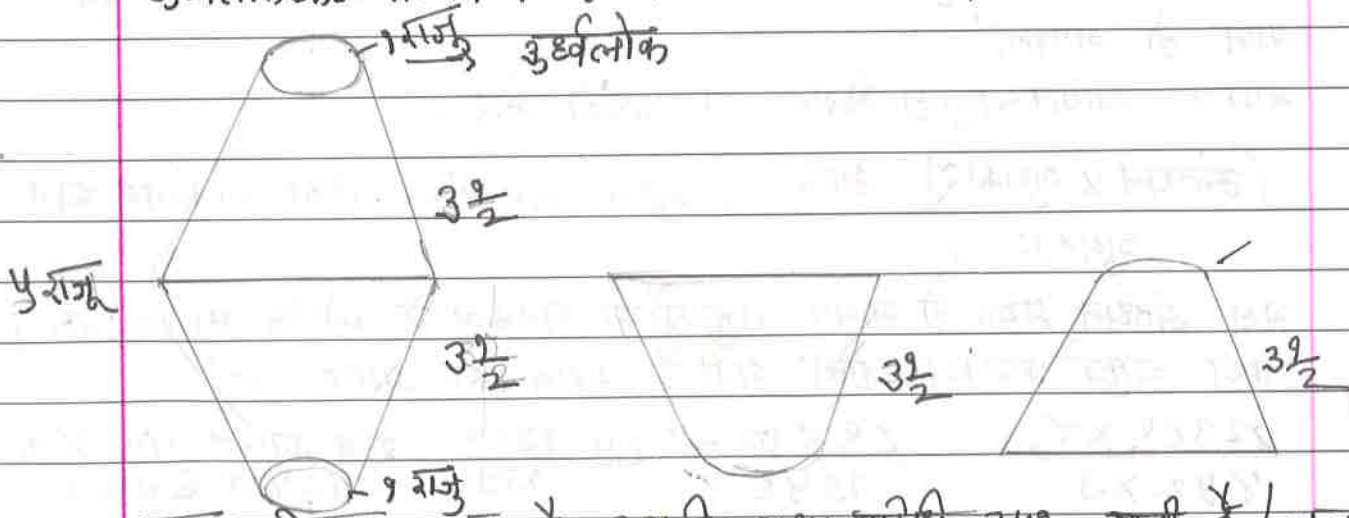
मृदंगाकार उर्ध्वलोक रूप क्षेत्र का घनफल →

उर्ध्वलोक के बीच में एक राजु चौड़ी, सात राजु लम्बी गोल आकारवाली त्रसनाली है उसका घनफल पहले अधोलोक में कहे गये विधानसे

① निकालने पर $y \frac{336}{452}$ राजु होता है।

इस सूचीको उर्ध्वलोकके मध्यभागसे निकालकर पृथक् स्थापन करना चाहिये।

उर्ध्वलोकको मध्यमेंसे दो विभाग करना →

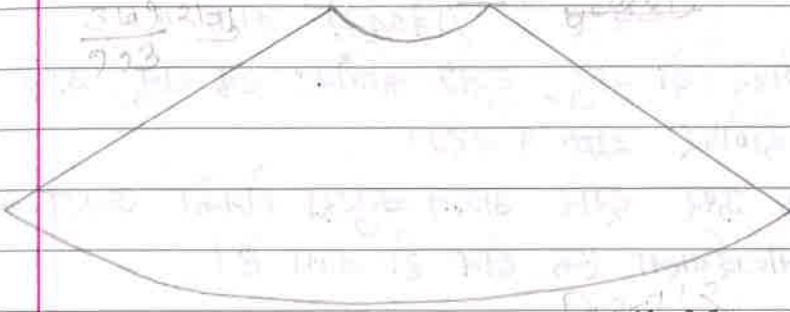


मुख का विस्तार 9 राजु है उसकी सूक्ष्म परिधि $\frac{309}{193}$ जाती है। तलविस्तार 5 राजु है उसकी सूक्ष्म परिधि =

$$\frac{y \times 98 + 98}{993} + \frac{y \times 3}{1} = \frac{98}{993} + \frac{9y}{1} = \frac{98 + 9y \times 993}{993} = \frac{98 + 989y}{993}$$

$$= \frac{7699}{993} = 94 \frac{86}{993}$$

मु. ऊर्ध्वलोकके अर्धभागको ऊपरसे नीचेतक फाड़नेपर पसारनेसे सूर्यके आकारवाला क्षेत्र होता है ऊर्ध्वलोकका अर्धभाग सूर्यकार



$$94 \frac{86}{993}$$

इस सूर्य क्षेत्रके मुखमें मोटाई आकाशके एक प्रदेश प्रमाण है वह क्रमसे बढ़ती हुई तलके मध्यभागमें दो राजु मोटाई है पुनः क्रमसे कम होती हुई इसी तलभागके दोनों कोनों पर आकाशके एक प्रदेश प्रमाण मोटाई है।

इस सूर्यक्षेत्रको मुखविस्तार प्रमाण विष्कंभसे खंडित करनेपर दो त्रिकोण क्षेत्र और एक आयत-चतुरस्र क्षेत्र हो जाते हैं।

आयत-चतुरस्र क्षेत्रका घनफल →

उल्लेख = $3\frac{1}{2}$ राजु, विष्कंभ = $\frac{369}{993}$ राजु, मोटाई = तलमें 2 राजु, मुखमें एक आकाशप्रदेश प्रमाण, सर्वत्र मोटाई को समान करनेपर 9 राजु होती है।

$$\text{उल्लेख} \times \text{विष्कंभ} \times \text{मोटाई} = \text{घनफल}$$

$$(2) \quad \frac{6}{2} \times \frac{369}{993} \times 9 = \frac{2496}{228} = 99 \frac{99}{228} \text{ राजु आयत-चतुरस्र क्षेत्रका घनफल}$$

दो त्रिकोण क्षेत्र -

$$(कोटी) \text{ डेचाई } \frac{6}{2} \text{ राजु; भुजा} = 6 \frac{32}{993}$$

भुजा निकालनेके लिए

तलविस्तार - आयत-चतुरस्र का विष्कंभ = त्रिकोणकी भुजा का प्रमाण

$$\frac{7699}{993} - \frac{369}{993} = \frac{7330}{993 \times 2} = \frac{690}{993} = 6 \frac{32}{993}$$

दो त्रिकोण क्षेत्रोंको मध्यमेंसे खंडित करनेपर चार त्रिकोण क्षेत्र और दो आयत चतुरस्र क्षेत्र होते हैं।

दो आयत चतुरस्र क्षेत्रोंका धनफल →

ऊंचाई $\frac{6}{4}$ राजु, विष्कंभ = $3\frac{9E}{923}$ (पूर्व आयतचतुरस्र से अर्धप्रमाण ऊंचाई और विष्कंभ होता है)

बाह्य तलके एक कोणपर दो राजु, दूसरे कोणपर एक राजु, उपर एक कोण पर 9 राजु, दूसरे कोणपर 9 प्रदेश।

एक आयत चतुरस्र क्षेत्रके उपर दूसरे आयत चतुरस्र क्षेत्रको उलटा करके रखनेपर दो राजुकी मोटाईवाला एक क्षेत्र ही जाता है।

ऊंचाई x विष्कंभ x मोटाई = धनफल

$\frac{6}{4} \times \frac{344}{993} \times \frac{2}{7}$ राजु

विष्कंभ

$3\frac{9E}{923} = \frac{335+9E}{923} = \frac{344}{923}$

$= \frac{344 \times 98}{842} = \frac{8560}{842} = 90\frac{840}{842} = 90\frac{224}{222}$ राजु दो आयत चतुरस्र क्षेत्रोंका धनफल

चार त्रिकोण क्षेत्रोंका मध्यसे विभाग करनेपर चार आयत चतुरस्र क्षेत्र व आठ त्रिकोण क्षेत्र उत्पन्न होते हैं। उन चार आयत चतुरस्र क्षेत्रोंका धनफल निकालनेपर पूर्व आयत चतुरस्र क्षेत्रके धनफलका चतुर्थभागमात्र प्राप्त होता है। इसका स्पष्टीकरण अधोलोकके समान जानना।

त्रिकोण क्षेत्रोंका तबतक विभाग करना जबतक एक प्रदेश प्रमाण प्राप्त नले। सब आयत चतुरस्र क्षेत्रोंके धनफलोंका संकलन →

(अंतधन x गुणकार) - आदि संकलनधन
गुणकार - 9

अंतधन $90\frac{840}{842}$ अर्थात $\frac{8560}{842}$, गुणकार 8

③ $\frac{8560 \times 8}{842 \times 3} = \frac{95680}{934E} = 98\frac{68E}{934E} = 98\frac{88E}{E66}$ राजु धनफल

पूर्वकत

आयत चतुरस्रका और त्रिकोणोंका

क्रमसे

$99\frac{999}{222}$

$98\frac{88E}{E66}$

अधोलोकके अर्धभागके धनफल इतना ही अर्धभागका प्रमाण लानेके लिए

इन दोनों प्रमाणोंको इना करमा $99\frac{999}{222} \times 2 = 22\frac{222}{222}$

$$98 \frac{884}{864} \times 2 = 2 \times \frac{884}{864} = 29 \frac{294}{864}$$

पूर्वोक्त त्रसनाली, आयत चतुरस्र, त्रिकोणों के आयत चतुरस्र क्षेत्रों के संकलित घनफल को जोड़ने पर संपूर्ण ऊर्ध्वलोक का घनफल आता है।

$$9 \frac{336}{842} + 22 \frac{222}{228} + 29 \frac{294}{864} = \text{ऊर्ध्वलोक का घनफल}$$

$$= 9 + 22 + 29 = 58$$

$$\frac{336}{842} + \frac{222}{228} + \frac{294}{864} = \frac{336 \times 3 + 222 \times 6 + 294 \times 2}{9348}$$

$$= \frac{1099 + 1332 + 588}{9348} = \frac{2999}{9348} = 2 \frac{66}{9348}$$

$$= 58 + 2 \frac{66}{9348} = 58 \frac{66}{9348} \text{ ऊर्ध्वलोक का समस्त घनफल}$$

ऊर्ध्वलोक घनफल + अधोलोक घनफल = गोलाकार लोक का घनफल

$$58 \frac{66}{9348} + 906 \frac{281}{9348} = 964 \frac{320}{9348} \text{ राजु " "}$$

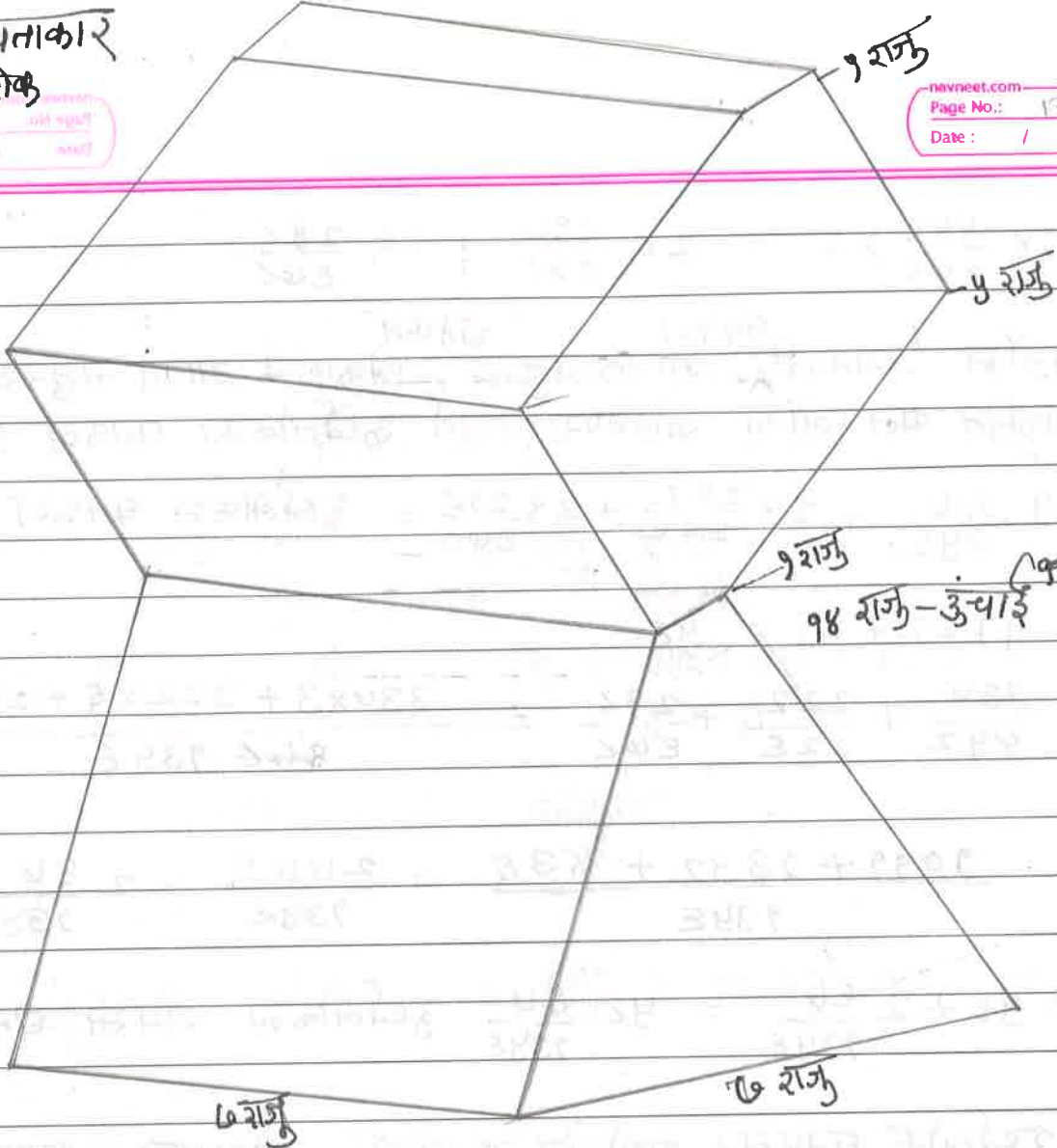
घनलोक का प्रमाण 343 घनराजु है और गोलाकार रूप से माने हुए लोक का घनफल $964 \frac{320}{9348}$ घनराजु आता है यह घनलोक का संख्यातवा भागही

आता है।

7 राजु के घनप्रमाण लोक का विस्तार इस प्रकार है -

लोक सर्व आकाश के मध्य में स्थित है, उसकी ऊंचाई चौदह राजु, पूर्व-पश्चिम तलभाग सात राजु, सात राजु ऊपर जाने पर मध्यलोक में एक राजु, साडे दस राजु ऊपर जाने पर ब्रह्मलोक के पास पांच राजु, पूरे चौदह राजु ऊपर जाकर लोक के अंतिम भाग में एक राजु विस्तार है। लोक का उत्तर दक्षिण विस्तार सर्वत्र सात राजु है। इस प्रकार के लोक के बीच एक राजु चौड़ी चतुष्कोण और चौदह राजु ऊंची त्रसनाड़ी है। इस प्रकार का लोक सात राजु के घनप्रमाण है।

आयताकार
लोक

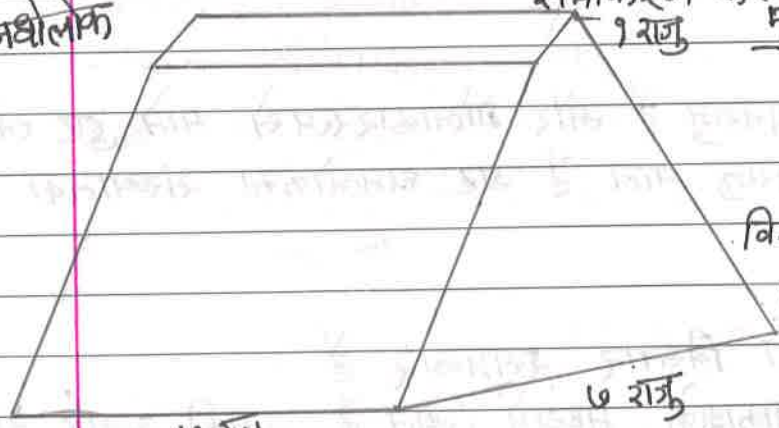


1.20

वेप्रसारूप अधोलोकका धनफल →

मुखविस्तार = 9 राजु, तलविस्तार = 6 राजु, कुंवाई 6 राजु, मोटाई = 6 राजु

अधोलोक



समीकरण करनेपर
मुख + तलविस्तार = $\frac{\text{सर्वत्र}}{2}$ विस्तार समानरूप

$$\frac{9+6}{2} = \frac{6}{2} = 8$$

विस्तार x कुंवाई x मोटाई = अधोलोकका धनफल

$$8 \times 6 \times 6 = 192 \text{ धनराजु}$$

उर्ध्वलोकका धनफल -

उर्ध्वलोक बीचमें मोटा और ऊपर नीचे सकडा होनेसे मृदंगाकार क्षेत्र कहलाता है। इस मृदंगाकार उर्ध्वलोकका मूलभागसंबंधी विस्तार 9 राजु, मध्यभागसंबंधी विस्तार 6 राजु, ऊपर विस्तार 9 राजु, कुंवाई और मोटाई 6 राजु है।

विस्तार का समीकरण करने का विधान =

$$\frac{(\text{मुखविस्तार} \times \text{मध्यविस्तार}) + \text{मुखविस्तार}}{2} = \text{सर्वत्र समान विस्तार}$$

$$\frac{(9 \times 9) + 9}{2} = \frac{81 + 9}{2} = \frac{90}{2} = 45 \text{ राजु " " "}$$

उर्ध्वलोक

ध्वल पुराकर
सर्व पृष्ठ संश्लेष
प्रति ५

1 राजु

विस्तार \times ऊंचाई \times मोटाई = धनफल

$$3 \times 6 \times 6 = 108 \text{ धनराजु}$$

उर्ध्वलोकका धनफल

अधोलोक + उर्ध्वलोक = सर्वलोकका धनफल

$$108 + 108 = 216 \text{ धनराजु}$$

माहात्म्य \rightarrow

भागमात्र क्षेत्रमें सूक्ष्म निगोदिया जीवकी अवगाहन

प्रत्येक प्रदेशपर अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणे

भागमात्र औदारिक शरीरके परमाणु रहते हैं।

औदारिक शरीर परमाणु

आ

धनला

- 3) औदारिक शरीर अनन्त = तैजस शरीरके परमाणु
 - 4) तैजस शरीर परमाणु अनन्त = कर्म परमाणु (जीवके एक-एक प्रदेशपर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवे भागमात्र कर्मपरमाणु)
 - 5) औदारिक शरीर तैजसशरीर और कर्मणशरीरके प्रत्येक परमाणुपर उन्ही तीनोंके विस्रसोपचय जीवराशिसे अनन्तगुणे हैं।
 - 6) उत्सेधके धनांगुलके असंख्यातवे भागमात्र जधन्य अवगाहनाक्षेत्रमें समान अवगाहनावाले अनन्तानन्त जीव रहते हैं।
 - 7) उसी क्षेत्रमें प्रत्येक जीवके तैजसशरीरके परमाणु, कर्मणशरीरके परमाणु और उन दोनोंके विस्रसोपचय भी अवगाहित हैं।
 - 8) उसी क्षेत्रमें उसके मध्यवर्ती प्रदेशको अपनी अवगाहनाका अन्तिम प्रदेश करके उत्पन्न हुआ। इस जीवकी अवगाहनामें समान अवगाहनावाले अनन्तानन्त जीव रहते हैं।
 - 9) उसी क्षेत्रमें धनलोकमात्र जीवके प्रदेशोंमेंसे प्रत्येक प्रदेशपर अनन्त औदारिक शरीरके परमाणु, उससे अनन्तगुणे तैजसशरीरके परमाणु, उससे अनन्तगुणे कर्मणशरीरके परमाणु, इन तीनों शरीरोंके विस्रसोपचय जीवोंसे अनन्तगुणित हैं।
- इसप्रकारसे लोकके परिपूर्ण होनेतक सभी दिशाओंमें लोकका एक-एक प्रदेश बहते

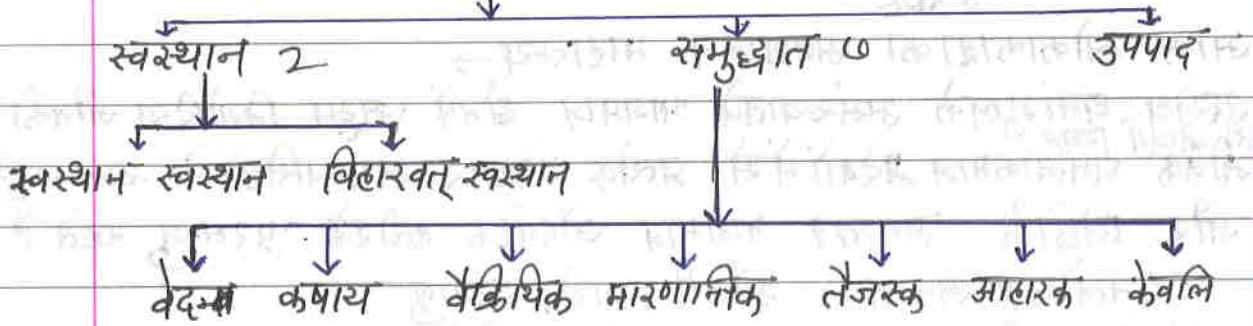
जाना चाहिये।

उल्लेख घनांगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण एक एक अवगालनामें स्थित जीवोंका अल्पबहुत्व

1) तैजस्कायिक जीव	सबसे सोक	असंख्यात	लोकप्रमाण
2) पृथिवीकायिक जीव	विशेष अधिक	"	"
3) जलकायिक जीव	" "	"	"
4) वायुकायिक जीव	" "	"	"
5) वनस्पति कायिक	अनन्तगुणे	अनन्त	"

पृ. 26

जीवकी अवस्था 3



- 1) स्वस्थान स्वस्थान → अपने उत्पन्न होनेके ग्राममें, नगरमें, अरण्यमें रहना।
- 2) विहारवत् स्वस्थान → अपने उत्पन्न होनेके ग्राम आदिको छोड़कर अन्यत्र रहना।
- 3) वेदना समुद्धात → नेत्रवेदना, शिरोवेदना आदिके द्वारा जीवोंके प्रदेशोंका विसर्पण।
- 4) कषाय " → क्रोध, भय आदिके द्वारा जीवोंके प्रदेश फैलना।
- 5) वैक्रियिक " →
- 6) मारणान्तिक समुद्धात → अपने वर्तमान शरीरको न छोड़ते हुए, ऋजुगतिसे अथवा विग्रहगतिसे आगे जहां उत्पन्न होना है उस क्षेत्रतक आत्माके प्रदेश जाकर अन्तर्मुहूर्त तक आत्माके प्रदेश रहते हैं। उसे मारणान्तिक समुद्धात कहते हैं।
- 7) तैजस्क समुद्धात → निस्सरणात्मक तैजसशरीरके साथ आत्माके प्रदेश फैलना।
- 8) आहारक समुद्धात → आहारक ऋद्धिधारी मुनियोंके मस्तकसे उत्पन्न हुए आहारक शरीरके साथ आत्माके प्रदेश फैलना।
- 9) केवलि समुद्धात → दंड, कपाट, प्रतर और लोकपूरण रूपसे आत्माके प्रदेश फैलना।
- 10) उपपाद - उत्पन्न होनेके पहले समयमें ही उपपाद होता है।

पृ. 26 भारतीय वैदिक साहित्य में वेदना व कषाय समुदात अंतर्भूत नहीं होते क्योंकि
उसमें विशेषता है।

वेद भारतीय वैदिक साहित्य में

वेदना व कषाय समुदात

- 1) बद्धायुष्क जीवोंके ही होते हैं।
- 2) उत्पन्न होनेकी क्षेत्रकी दिशाके अभिमुख
- 3) लंबाई अपने उत्पद्यमान क्षेत्रके अंततक

- 1) बद्धायुष्क, अबद्धायुष्क दोनोंके होते हैं।
- 2) दशां दिशाओंमें गमन
- 3) कोई नियम नहीं है।

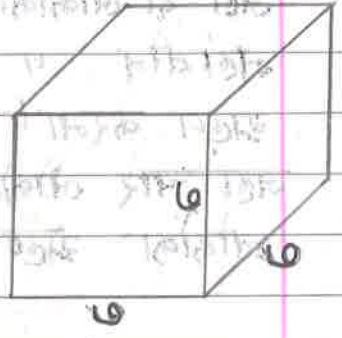
पृ. 39 लोक पांच प्रकारका है -

- 1) सामान्यलोक 2) अधोलोक 3) ऊर्ध्वलोक 4) तिर्यक्लोक 5) मनुष्यलोक

1) सामान्यलोक = 343 धनराजु प्रमाण सर्वलोक

$$6 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} = 343 \text{ धनराजु}$$

संपूर्ण लोकके कम अधिक विष्कम्भको समान करनेपर 6 राजु लंबा, 6 राजु चौड़ा और 6 राजु मोटा चौरस तैयार होता है।

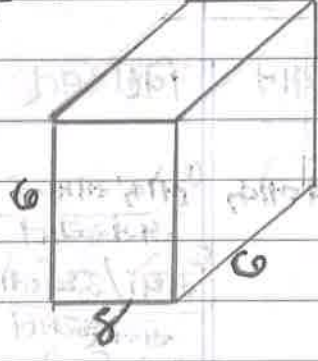


2) अधोलोक → लोकका अधोभाग, पहले इसका

धनफल निकाला है।

$$6 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 8 \text{ राजु} = 996 \text{ धनराजु}$$

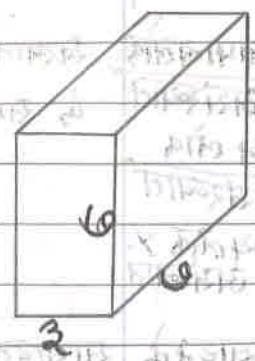
तलमें 6 राजु और मुखमें एक राजु विस्तार है उसको समान करनेपर सर्वत्र 8 राजु विस्तार होता है।



3) ऊर्ध्वलोक → लोकका ऊर्ध्वभाग

$$6 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 3 \text{ राजु} = 996 \text{ धनराजु}$$

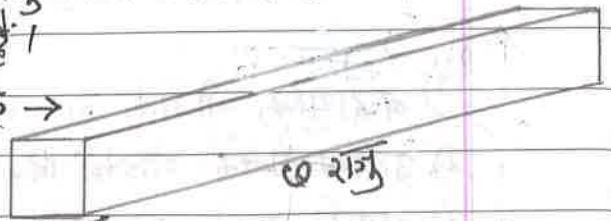
ऊर्ध्वलोकका विस्तार प्रारंभमें कम मध्यमें अधिक ऊपर घटता हुआ लोकके अंतमें 9 राजु है उस सबको समान करनेपर 3 राजु विस्तार होता है।



4) तिर्यक्लोक - ऊर्ध्वलोक और अधोलोकके मध्यमें स्थित, पूर्व-पश्चिम दिशामें

एक राजु चौड़े, उत्तर-दक्षिण दिशामें सात राजु लम्बे और एक लाख योजन ऊंचे क्षेत्रको तिर्यक्लोक या मध्यलोक कहते हैं।

तिर्यक्लोक →



मनुष्यलोक - दार्ई द्वीपप्रमाण विस्तृत अर्थात् पैतालीस लाख योजन चौड़े और एक लाख योजन ऊंचे क्षेत्रको मनुष्यलोक कहते हैं।

जहां सर्वलोक क्षेत्र बताया जावे वहां सामान्यलोकका ग्रहण करना।

जहां दो लोकोंका निर्देश किया जावे वहां अधोलोक और ऊर्ध्वलोकका ग्रहण करना।

जहां तीन " " " " " " ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्लोकका ग्रहण करना।

जहां चार लोकोंका निर्देश किया जाय वहां मनुष्यलोकको छोड़कर शेष चारों लोकोंका ग्रहण करना।

गुणस्थान	स्वस्थान	विहारवत्	वेदना	कषात्	वैक्रियिक	माशान्तिक	उपपाद
मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	① लोक सामान्य असंख्यात ② अधो/ऊर्ध्वलोक असंख्यात ③ तिर्यक्लोक संख्यात ④ मनुष्यलोक X असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक	विहारवत्स्व-स्थानके समान	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादन साम्यदृष्टि असंख्यत सायभ्यदृष्टि	सामान्यलोक असंख्यात तीन लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	स्वस्थान-स्वस्थान के समान	स्वस्थान-स्वस्थान के समान	स्वस्थान-स्वस्थान के समान	स्वस्थान-स्वस्थान के समान	स्वस्थान-स्वस्थान के समान	स्वस्थान-स्वस्थान के समान
मिश्र	सासादनके समान	सासादनवत्	सासादनवत्	सासादनवत्	सासादनवत्	X	X
संयतासय त्	सासादनवत्	सासादनवत्	सासादनवत्	"	"	सासादनवत्	X

गुणस्थान	स्वस्थान	स्वस्थान	विहारवत्	वेदना	कषाय	वैक्रियिक	मारणान्तिक	तेजस	आहारक
प्रमत्तसंयत	१) चार लोकोंका असंख्यातवा भाग २) मनुष्यलोक संख्यात	स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान	१) चार लोक असंख्यात २) मनुष्यलोक X असंख्यात	स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान
अप्रमत्त	प्रमत्तवत्	प्रमत्तवत्	X	X	X	प्रमत्तवत्	X	X	
६ उपवामक	१) X	X	X	X	प्रमत्तवत्	X	X		
४ क्षापक	१) X	X	X	X	X	X	X		
अयोगकेव ली	१) X	X	X	X	X	X	X		

	स्वस्थान	स्वस्थान	विहारवत्	दण्ड समुद्घात	कपार समुः	प्रतर समुः	लोकपूरण
सुयोग केवली	प्रमत्तवत्	प्रमत्तवत्	प्रधार लोकोंका असंख्यातवा भाग २) मनुष्यलोक X असंख्यात	सामान्यादि तीन लोकोंका असंख्यातवा भाग २) तिथिलोक संख्यात ३) मनुष्य लोक X असंख्यात	लोकका असंख्यात बहुभाग	सर्वलोक	
किस गुणस्थानमें कितने पद होते हैं उसका विवरण							

गुणस्थान	पदसंख्या	पदोंका विवरण
१, २, ४	७	तेजस, आहारक व केवलि समुद्घात के बिना शेष पद
३	५	तेजस, आहारक, मारणान्तिक, केवलि समुद्घात व उपपाद के बिना शेष पद
५	६	" " केवल समुद्घात व उपपाद के बिना शेष पद
६	८	केवलि समुद्घात व उपपाद के बिना शेष पद
७	३	स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत् स्वस्थान व मारणान्तिक ये ३ पद
८, १०, ११	२	स्वस्थानस्वस्थान व मारणान्तिक समुद्घात ये २ पद
उपवामक ४ क्षापक, १४ गुण सं १३	१	" " विहारवत्, केवलि समुद्घात ये ३ पद
	३	

पद	जीवराशिका प्रमाण
स्वस्थान स्वस्थान वेदना, कषाय समुद्घात मारणान्तिक समुद्घात	सर्व जीवराशिके संख्यातवे भागसे न्यून सर्व जीव राशि सर्व जीवराशिके संख्यातवे भागप्रमाण " " " " " " " "
उपपाद विहारवत् स्वस्थान वैक्रियिक समुद्घात	सर्व जीवराशिके असंख्यातवे भागप्रमाण त्रसकार्यिक पर्याप्तिकोंके संख्यातवे भागप्रमाण उद्योतिष्क देवोंके संख्यातवे भागप्रमाण

पृ. 32 विहारवत् स्वस्थान मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र \rightarrow लोक अधोलोक
असंख्यात , उर्ध्वलोक , तिर्यग्लोक , असंख्यात
असंख्यात , इस संख्यात , मनुष्यलोक x असंख्यात

इसका खुलासा -
त्रसकार्यिक पर्याप्तिक जीव ही विहार करते हैं क्योंकि
उन्हींको विहायोगति नामकर्मका उदय होता है। त्रस पर्याप्तिक
जीवराशिके संख्यातवे भागप्रमाण जीव एकसाथ विहार करनेवाले पाये
जाते है।

$$\text{त्रसकार्यिक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल संख्यात}}$$

$$\text{विहारवत् स्वस्थान जीवराशि} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल संख्यात}} \times \text{संख्यात}$$

$$\text{एक त्रसकार्यिक पर्याप्त जीवकी अवगाहना} = \text{संख्यात घनांगुल}$$

$$\begin{aligned} \text{विहारवत् स्वस्थान क्षेत्र} &= \text{विहारवत् स्वस्थान जीवराशि} \times \text{संख्यात घनांगुल} \\ &= \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल संख्यात}} \times \text{संख्यात घनांगुल} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{असंख्यात}} \end{aligned}$$

$$\text{अधोलोकका प्रमाण} = 4 \text{ राजू} \times \text{जगत्प्रतर प्रमाण}$$

$$\text{उर्ध्वलोकका प्रमाण} = 3 \text{ राजू} \times \text{जगत्प्रतर}$$

$$\text{अधोलोक} = 4 \text{ राजू} \times \text{जगत्प्रतर} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{असंख्यात}}$$

$$\text{विहारवत् स्वस्थान क्षेत्र} = \frac{\text{जगत्प्रतर} \times \text{संख्यात घनांगुल}}{\text{प्रतरांगुल संख्यात}} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{असंख्यात}}$$

उर्ध्वलोक = अगत्प्रेणी
विहारवत्स्वस्थानक्षेत्र असंख्यात

इससे जाना जाता है कि विहारवत्स्वस्थानक्षेत्र अधोलोक और ऊर्ध्वलोकका असंख्यातवा भाग है।

यहांपर स्वयंभूमनगोन्द्र पर्वतके परभागमें स्थित त्रसकायिक पर्याप्त जीवराशि मुख्य है क्योंकि यह राशि इतर कर्मभूमिज जीवोंकी अपेक्षा दीर्घायु और बड़ी अवगाहनात्मी, संख्यामें अधिक है।

त्रस पर्याप्त^{जीकों}की उत्कृष्ट अवगाहना और उसके स्वामि

जीव	उत्कृष्ट अवगाहनाका स्वामि	आयाम	विष्कम्भ	उत्सेध	धनफल
द्वीन्द्रिय	स्वयंभूमण क्षेत्रोत्पन्न शंख	12 यो.	४ यो.	$\frac{5}{8}$ यो.	385 योजन
त्रिन्द्रिय	" " गोप्ही	$\frac{3}{2}$ यो.	$\frac{3}{32}$ यो.	$\frac{3}{88}$ यो.	$\frac{24}{1952}$ "
चतुरिन्द्रिय	" " भ्रमर	१ यो.	$\frac{3}{2}$ यो.	$\frac{1}{2}$ यो.	$\frac{3}{2}$ "
पंचेन्द्रिय	" समुद्रवर्ती महामत्स्य	१००० यो.	५०० यो.	२५० यो.	१२५०००००० योजन

योजनों और कोसोंमें कही गई इन अवगाहनाओंको धनांगुल प्रमाणसे करनेपर संख्यात धनांगुल होते हैं।

पृ. 38 भ्रमर क्षेत्र के धनफल निकालनेका विधान —

भ्रमरका आयाम १ योजन, उत्सेध $\frac{1}{2}$ योजन, विष्कम्भ $\frac{3}{2}$ योजनकी परिधि $\frac{1}{2}$ योजनकी स्थूल परिधि $1\frac{1}{2}$ योजन अर्थात् $\frac{3}{2}$ यो.

धनफल निकालनेका सूत्र - आयाम \times $\frac{\text{विष्कम्भ}}{2}$ \times उत्सेध = $\frac{\text{भ्रमरका}}{\text{धनफल}}$

योजनका धनांगुल में रूपांतर करना - $1 \times \frac{3}{2 \times 2} \times \frac{1}{2} = 1 \times \frac{3}{8} \times \frac{1}{2} = \left[\frac{3}{16} \text{ योजन} \right]$

उपर्युक्त प्रमाण उत्सेध योजनमें है

१ उत्सेध योजन = ७,६८,००० उत्सेध सूच्यंगुल

१ उत्सेध धन योजन = ७,६८००० \times ७६८००० \times ७६८००० धनांगुल

" " " = ४५२९८४८३२०००००००००० धनांगुल

उत्सेध घनांगुलकों प्रमाण घनांगुलमें रूपांतर करनेके लिए पाचसौ के घनका भाग देना क्योंकि उत्सेधयोजने प्रमाणयोजन ५०० गुणा बड़ा होता है।

५०० उत्सेधांगुल = १ प्रमाणांगुल होता है।

उपर्युक्त उत्सेधघनांगुल = प्रमाण घनांगुलप्रमाण अवगारहना

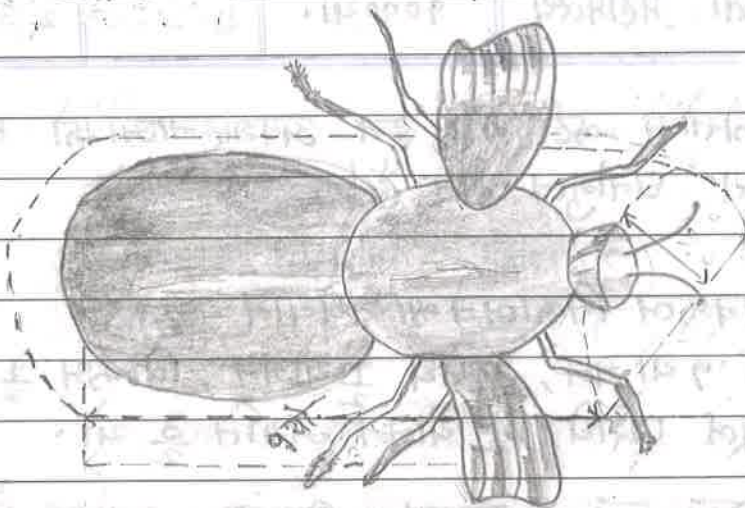
$$\frac{500^3}{500 \times 500 \times 500} = 382366459 \text{ प्रमाण घनांगुल}$$

१ उत्सेधघनयोजन के प्रमाण घनांगुल

उपर्युक्त ३ के राशि १५३६ के घनप्रमाण है।

$1536^3 = 382366459$ एक उत्सेधयोजन के प्रमाण घनांगुल भ्रमर का घनफल $\frac{3}{2}$ योजन $\times 382366459$ (एक योजनके प्रमाणांगुल) = १३५८९५४९६ प्रमाण घनांगुलप्रमाण भ्रमरक्षेत्रका घनफल।

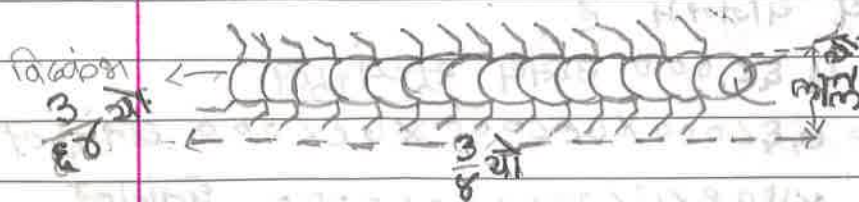
भ्रमर -



गोमहीका घनफल निकालनेका सूत्र -

आयाम \times विष्कंभ \times उत्सेध = घनफल

$$\frac{3}{4} \times \frac{3}{32} \times \frac{3}{64} = \frac{27}{8192} \text{ घनयोजन}$$



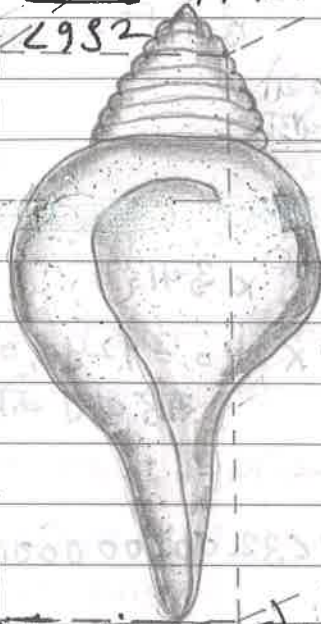
एक उत्सेध घनयोजन = ३८२३६६४५९ प्रमाण घनांगुल

उपर्युक्त उल्लेख धनयोजनों को प्रमाण धनांगुलों में परिवर्तित करने के लिए परस्पर गुणा करना।

शंख →

$\frac{2\frac{1}{2}}{2952}$ धनयोजन \times $3E23L6L6Y E$ धनांगुल = 9958353E

इतने प्रमाण धनांगुलप्रमाण गोम्हीका धनफल



मुख ४ योजन

विवर्धन ५

(व्यास) आयाम = 92 योजन

चोड़ाई (विवर्धन) = ५ योजन

मुख = ४ योजन

प्रथम शंखका क्षेत्रफल निकालनेका सूत्र =

$$\left\{ \left(\frac{\text{व्यास}^2 - \text{मुख}}{2} \right) + \left(\frac{\text{मुख}}{2} \right)^2 \right\} \times 2 = \text{शंख क्षेत्रफल}$$

$$\left\{ \left(\frac{92^2 - 4}{2} \right) + \left(\frac{4}{2} \right)^2 \right\} \times 2 = (984 - 2) + 4 \times 2$$

$$= \frac{982 + 8}{2} \times 2 = 985 \times 2 = \frac{252}{4} = 63 \text{ शंखका क्षेत्रफल}$$

(उल्लेख - मुख) + उल्लेख \times क्षेत्रफल = धनफल

$$(92 - 4) + 92 \times 63 = \frac{8 + 92}{2} \times 63 = 20 \times 63 = 63 \times 4 = 365 \text{ योजन शंखका धनफल}$$

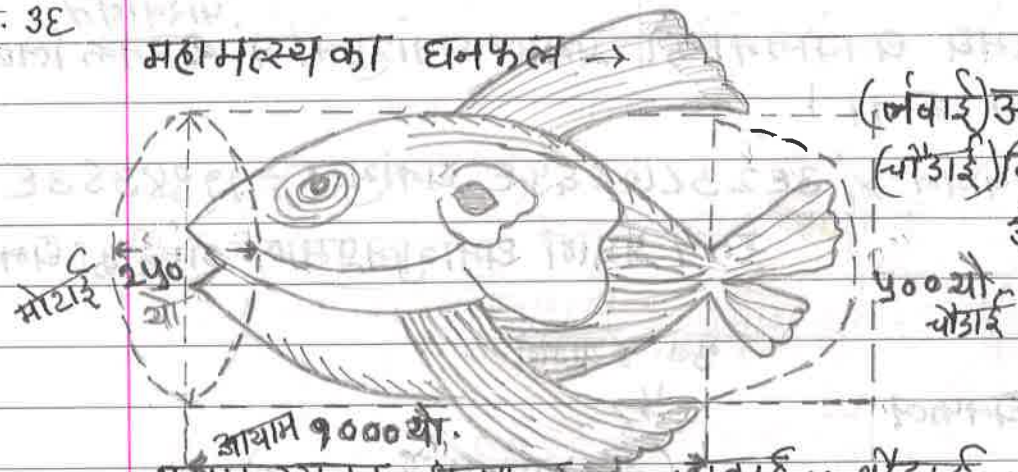
इसका प्रमाण धनांगुलों में परिवर्तित करने के लिए एक योजन के प्रमाण धनांगुलों से गुणा करना

इतने प्रमाण धनांगुल

$$3EY \times 3E23L6L6Y E = 9322695605880 \text{ मात्र शंखक्षेत्रका धनफल}$$

पृ. 3E

महामत्स्य का घनफल →



(लंबाई) आयाम = 9000 योजन
(चौड़ाई) विष्कंभ = 500 योजन
ऊंचाई = 250 योजन

महामत्स्य का घनफल = लंबाई × चौड़ाई × ऊंचाई

$$9000 \times 500 \times 250 = 11250,000,000 \text{ योजन साठे बारा कोटि योजन}$$

इसका प्रमाणांगुली में रूपांतर करने पर —

$$11250,000,000 \times 3E23C0L6YE = 4529L8C32000000000 \text{ प्रमाण घनांगुल मात्र महामत्स्य का घनफल}$$

$$\frac{\text{उत्कृष्ट अवगाहना} + \text{जघन्य अवगाहना}}{2} = \text{मध्यम अवगाहना}$$

$$\left(\frac{\text{संख्यात घनांगुल} + \text{घनांगुल}}{\text{संख्यात}} \right) \div 2 = \text{संख्यात घनांगुल}$$

इसलिए विहारवत्स्वस्थानशिक्षा गुणकार संख्यात घनांगुल स्थापित किया है। इस प्रकार उत्कृष्ट अवगाहना रूपसे आये हुए इन प्रमाण घनांगुली में घनांगुलके संख्यातवे भागप्रमाण जघन्य अवगाहनाको मिलाकर उसे उ दो से छिन्न करनेपर भी मध्यम अवगाहनाका प्रमाण संख्यात घनांगुल ही प्राप्त जाता है यह सिद्ध हुआ।

विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र में तिर्यग्लोक क्षेत्रकी प्रधानता नहीं है किन्तु देवक्षेत्रकी ही प्रधानता है क्योंकि प्रतरांगुलके संख्यातवे भागप्रमाण विष्कंभ और मिथ्यादृष्टि उत्सेधरूपसे विहार करनेवाले देवोंकी संख्यात हजार योजन प्रमाण अवगाहनामें घनफलरूपसे संख्यात घनांगुल पाये जाते हैं।

असंख्यात योजनप्रमाण विहार करनेवाले देव सर्व देवराशिके असंख्यातवे भागमात्र हैं अतः उनकी यहांपर प्रधानता नहीं है।

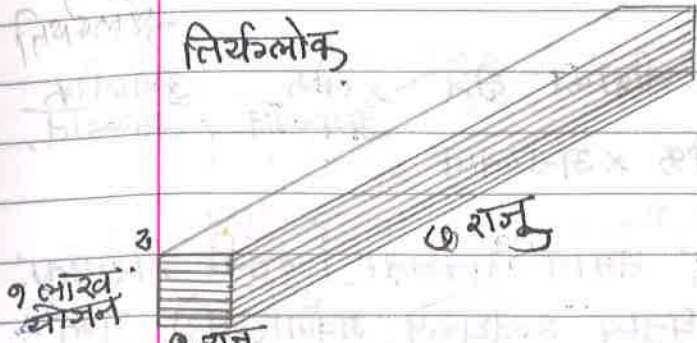
पृ. 3G

मिथ्यादृष्टि विहारवत्स्वस्थान राशि तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्रमें रहती है। उसका स्पष्टीकरण —

प्र. 37

तिर्यग्लोकका प्रमाण \rightarrow पूर्व-पश्चिम एक राजु चौड़ा, उत्तर-दक्षिण सात राजु लम्बा और एक लाख योजन ऊंचा है।

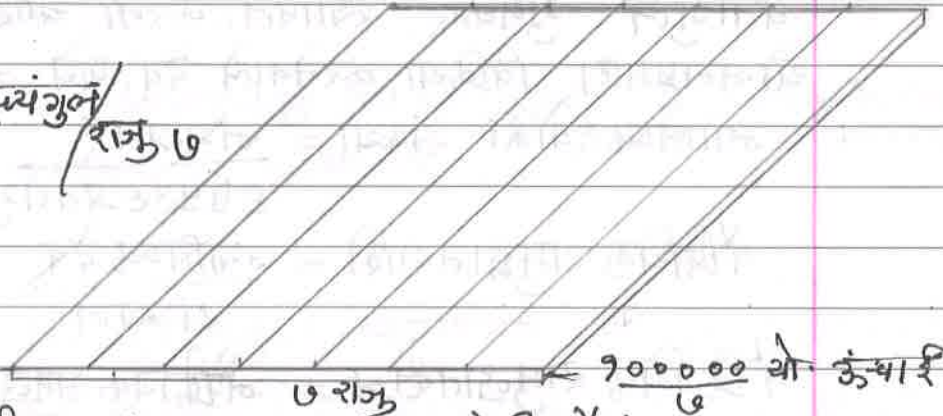
तिर्यग्लोक



इसे जगत्प्रतररूपसे करने के लिए एक लाख योजन ऊंचाई में सात भाग करना। पूर्व-पश्चिम एक राजु विस्तार है उसके आगे ही एक एक भाग पसारकर रखनेसे पूर्व-पश्चिम विस्तार भी सात राजु होगा। दक्षिण-उत्तर विस्तार सात राजु है ही। सात राजु \times सात राजु = जगत्प्रतर होता है।

तिर्यग्लोकका प्रमाण \rightarrow

$9096982469 \frac{3}{6}$ सूच्यंगुल
प्रमाण जगत्प्रतर राजु 7



ऊंचाई एक लाख योजनका सातवा भाग होती है। इस प्रकार एक लाख योजनके सातवें भागमें जितने सूच्यंगुल होते हैं तत्प्रमाण बाल्यरूप (ऊंचाईरूप) जगत्प्रतरप्रमाण तिर्यग्लोक आ जाता है।

1 योजन = 664000 अंगुल

$9,00,000$ यो \times $664000 = 664000000000$ इतने एक लाख योजनके सूच्यंगुल होते हैं इसमें 7 का भाग देनेपर

$$\frac{664,00,000,000}{7} = 9096982469 \frac{3}{6} \text{ सूच्यंगुल}$$

इतने सूच्यंगुलप्रमाण जगत्प्रतर तिर्यग्लोकका प्रमाण जानना

$$\text{विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र} = \frac{\text{जगत्प्रतर} \times \text{संख्यात घनांगुल}}{\text{प्रतरांगुल} \times \text{संख्यात संख्यात}} = \frac{\text{संख्यात सूच्यंगुल}}{\text{जगत्प्रतरप्रमाण}}$$

घनांगुलमें प्रतरांगुल का भाग देनेपर सूच्यंगुल आता है।

अतः विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवा भाग है यह सिद्ध है।

विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र मनुष्य लोकसे असंख्यात गुणा है क्योंकि ४५,००० योजन के घनफलमें संख्यात प्रमाण घनांगुल ही होते हैं।

पृ. 36

वैक्रियिक समुद्घात वात मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र → लोक असंख्यात, ऊर्ध्वलोक असंख्यात, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक x असंख्यात संख्यात

इसका विवरण विहारवत्स्वस्थान के समान समझना। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिक समुद्घातमें सात धनुष्य उत्सेधरूप अवगाहनासे युक्त ज्योतिष्क देवराशि प्रधान है इसलिए ज्योतिष्क देवोंके संख्यातके भाग-प्रमाण वैक्रियिक समुद्घातयुक्त राशिका क्षेत्र लानेके लिये संख्यात घनांगुल गुणकार स्थापित करना चाहिये, क्योंकि संख्यात हजार योजनप्रमाण विक्रिया करनेवाले देव पाये जाते हैं।

$$\text{ज्योतिष्क देवोंकी संख्या} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{६५५३६ \text{ प्रतरांगुल}}$$

$$\text{वैक्रियिक समुद्घातराशि} = \frac{\text{ज्योतिष्क देव संख्यात}}{\text{संख्यात}} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{६५५३६ \text{ प्रतरांगुल} \times \text{संख्यात}}$$

$$\begin{aligned} \text{वैक्रियिक समुद्घातक्षेत्र} &= \text{वैक्रियिक समुद्घातराशि} \times \text{संख्यात घनांगुल} \\ &= \frac{\text{जगत्प्रतर}}{६५५३६ \text{ प्रतरांगुल} \times \text{संख्यात}} \times \text{संख्यात घनांगुल} = \frac{\text{संख्यात}}{\text{सूच्यंगुल प्रमाण जगत्प्रतर}} \end{aligned}$$

इससे उपर्युक्त बात सिद्ध होती है कि वैक्रियिक समुद्घातक्षेत्र तीन लोकोंका असंख्यातवा भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवा भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा है।

तिर्यग्लोकके संख्यात सूच्यंगुलोंसे विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र व वैक्रियिक समुद्घात क्षेत्र के संख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कम है।

पृ. 80

आसादन, मिश्र और असंघत सम्यग्दृष्टिका स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान वेदना समुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिक समुद्घातकी अपेक्षा क्षेत्र-चार लोकोंका असंख्यातवा भाग और अटई द्वीपसे असंख्यातगुणा है।

इन तीन गुणस्थानोंमें सौधर्म और ऐशानकल्पसंबंधी देवराशि प्रधान है। उनकी अवगाहना सात हाथ इंचारूप है। और इसके दशव भागरूप विष्कम्भ है १ हाथमें २४ अंगुल होते हैं अतः $७ \times २४ = १६८$ अंगुल होते हैं

अतः ऊंचाई 9६८ अंगुल, विष्कंभ $\frac{9६८}{90}$ अंगुल

$$\begin{aligned} \text{घनफल} &= \left(\frac{\text{विष्कंभ}}{2} \right)^2 \times 2 \times \text{ऊंचाई} \\ &= \left(\frac{9६८}{90 \times 2} \right)^2 \times 2 \times 9६८ = \frac{9६८ \times 9६८ \times 2 \times 9६८}{20 \times 20} = \frac{9४८३२६४}{४००} \end{aligned}$$

इसको प्रमाण गुण में करने के लिए ५००^३ का भाग देना

$$\frac{9४८३२६४}{४०० \times ५००^३} = \frac{9४८३२६४}{४०० \times ५०० \times ५०० \times ५००} = \frac{9४८३२६४}{१९५३१२५}$$

यह राशि प्रमाण घनांगुलके संख्यातवे भाग है।

सौधर्म ईराकन स्वर्गकी आसादनादि तीन गुणस्थानवर्ती जीवराशि \times उपर्युक्त अवगाहना
= सासादनादि तीन गुणस्थानों का स्वस्थानादि क्षेत्र

वेदना समुद्घात और कषाय समुद्घात का क्षेत्र =

① तीन गुणस्थानवर्ती जीवराशि \times उपर्युक्त ^{मूल} अवगाहना $\times ९ =$ $\frac{\text{प्रमाण}}{\text{असंख्यात संख्यात}} \times \text{घनांगुल} \times ९$

क्योंकि वेदना और कषाय समुद्घात में उत्कृष्टरूपसे शरीरसे तिगुना विस्तार पाया जाता है। अथवा वेदना समुद्घात आदिके द्वारा शरीरसे तिगुने समुद्घातको करनेवाले स्वल्प है इसलिए मध्यम गुणकारों के साधेरूप साधेचर होता है

② तीन गुणस्थानवर्ती जीवराशि \times मूल अवगाहना $\times \frac{९}{२} =$ वेदना, समुद्घात व कषाय
पल्यका असंख्यातवा भाग \times ^{प्रमाण} घनांगुल $\times \frac{९}{२}$ समुद्घातका क्षेत्र

तीन गुणस्थानवर्ती जीवराशि \times संख्यात घनांगुल = विहारवत्स्वस्थान व वैक्यिक
पल्यका असंख्यातवा भाग \times संख्यात घनांगुल समुद्घातका क्षेत्र

पूर्वोक्त स्वस्थानादि क्षेत्रके प्रमाणसे लोकके भाजित करनेपर जो लब्ध आने उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति लोकको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेपर प्रत्येक विरलनके प्रति जो एक भाग प्राप्त होता है उतना इनसे रुद्ध क्षेत्र होता है। इसप्रकार ४ राजू जगत्प्रतर प्रमाण अधोलोकको, ३ राजू जगत्प्रतरप्रमाण उर्ध्वलोकको, १ लाख योजन के सातवे भागप्रमाण तिर्यग्लोकको पूर्वोक्त क्षेत्रोंसे भाग देकर विरलन देय करना चाहिये। चारो लोकोंको पूर्वोक्त क्षेत्रोंसे भाग देनेपर

असंख्यात लब्ध आता है इसलिए पूर्वोक्त क्षेत्र चारों लोकों का असंख्यातवा भागप्रमाण बताया है।

पैतालीस लाख योजन विष्कंभरूप और एक लाख योजन ऊंचा मानुषलोक है। वृत्ताकार क्षेत्रकी सूक्ष्मतर परिधि निकालनेका सूत्र -

$$\left(\frac{\text{व्यास} \times 9\text{ए} + 9\text{ए}}{993} \right) + \frac{\text{व्यास} \times 3}{9} = \text{सूक्ष्म परिधि}$$

उदाहरण १ राजु व्यासके वृत्तक्षेत्रकी परिधिका प्रमाण -

$$\left(\frac{9 \times 9\text{ए} + 9\text{ए}}{993} \right) + \left(\frac{9 \times 3}{9} \right) = \frac{32}{993} + \frac{993 \times 3}{993} = \frac{32 + 339}{993} = \frac{371}{993}$$

$$= \left[3 \frac{32}{993} \right] \text{ राजु } \rightarrow 9 \text{ राजु व्यास वृत्तकी सूक्ष्मपरिधि}$$

अटाई द्वीपकी परिधि

$$\left(\frac{84,000.00 \text{ या.} \times 9\text{ए} + 9\text{ए}}{993} \right) + \frac{84,000.00 \times 3}{993}$$

$$= \frac{62000000 + 9\text{ए}}{993} + \frac{93400000 \times 993}{993}$$

$$\frac{6200009\text{ए}}{993} + \frac{93244000000}{993} = \frac{9432400009\text{ए}}{993}$$

$$= \frac{9432400009\text{ए}}{993} \times \frac{90\text{ए}}{993} = \text{अटाई द्वीपकी सूक्ष्म परिधि}$$

$$\text{परिधि} \times \text{व्यास} = \text{क्षेत्रफल} \quad \frac{9432400009\text{ए}}{993} \times 8400000$$

$$= \frac{6\text{ए}969400620,00000}{842} \quad \text{अटाई द्वीपका क्षेत्रफल}$$

$$\text{क्षेत्रफल} \times \text{ऊंचाई} = \text{घनफल} \quad \frac{6\text{ए}969400620000000}{842} \times 900000$$

$$\frac{6\text{ए}96940062000000000000}{842}$$

इनको अंगुलोंमें रूपंतरित करनेपर संख्यात घनांगुल आते हैं। इसप्रकार पूर्वोक्त सासादनादि तीन गुणस्थानवर्तीयोंका स्वस्थानादि क्षेत्र अटाईद्वीपसे असंख्यातगुणा है यह बात सिद्ध होती है क्योंकि अटाई द्वीपका घनफल संख्यात घनांगुलप्रमाण आता है और सासादनादि गुणस्थानवर्तीका क्षेत्र पृथक्का असंख्यातवा भागसे गुणित संख्यात घनांगुल आता है।

उपपादगत सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि योंका क्षेत्र =

$$\frac{\text{सासादन अथवा असंयत सम्यग्दृष्टि राशि} \times \left(\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} - 9 \right) \times \text{संख्यात} \times \frac{1}{2}}{\text{प्रतरांगुल राशि}}$$

ओष सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवराशि के आवलिके असंख्यातवे भागप्रमाण राशि उपपाद करती है। तथा इस उपपादराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण जीव विभ्रहगतिसे उपपाद करते है। इसलिए दो बार आवली असंख्यातवे भाग प्रमाण ओषराशिके भागहार स्थापित करने चाहिये। और बहुभाग ^{निकायने} के लिए एक कम आवलीके असंख्यातवे भागप्रमाण गुणकारको स्थापित करना चाहिए। अब इस जीवराशिको एक जीवके उपपाद क्षेत्र प्रमाणसे गुणित करना चाहिए।

मध्यलोकसे सौधर्मकल्प डेढ राजु उंचा है और एक जीवकी अवगाहना प्रतरांगुल का संख्यातवा भाग

मारणान्तिक समुद्धात ^{क्षेत्र} भी इसी प्रकार जानना चाहिये। इतनी विशेषता है कि अपने अपने गुणस्थानसंबंधी राशिके असंख्यातवे भागप्रमाण राशि मारणान्तिक समुद्धात करती है। ^{देवराश}

सासादन मारणान्तिक समुद्धातका क्षेत्र बताते समय देवराशिकी प्रधानता है और ^{गुणस्थानका} उपपादमें तिर्यचराशि प्रधान है। सासादन गुणस्थानवर्ती देव मरण करके तिर्यचोंमें उत्पन्न होते है। असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसंबंधी मारणान्तिक समुद्धातमें तिर्यच प्रधान है उपपादमें देव प्रधान है। क्योंकि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती तिर्यच मरण करके देवोंमें उत्पन्न होते है; किन्तु असंयत देव मरण करके तिर्यचोंमें उत्पन्न नहीं होते। वे मनुष्योंमें उत्पन्न होते है। मनुष्य संख्यात ही है और उनका क्षेत्र संख्यात घनांगुलप्रमाण ही है।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें मारणान्तिक समुद्धात और उपपाद नहीं होते है।

संयतासंयतोंका स्वस्थान स्वस्थान, विहारवार्स्वस्थान, वेदना, कषाद्य समुद्धातका क्षेत्र ^{वक्रियिक समुद्धात और मारणान्तिक समुद्धात का क्षेत्र} चार लोकोंका असंख्यातवा भाग और अढाई द्वीपसे असंख्यात गुणा है। संयतासंयतोंकी अवगाहना का गुणकार घनांगुल है। मारणान्तिक समुद्धातमें प्रतरांगुल गुणकार है।

संयतासंयतों के उपपाद नहीं होता है क्योंकि अपर्याप्त काल में संयमासंयम गुणस्थान नहीं पाया जाता है।

पृ ४५, ४६
प्रमत्तसंयतों का स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक, आहारक समुद्घातका क्षेत्र चार लोकों का असंख्यातवा भाग और मनुष्यलोकका संख्यातवा भाग है। -

इसमें विदेहक्षेत्रस्य संयतराशि प्रधान है क्योंकि वह सबसे अधिक होती है। विदेह में ५०० धनुष ऊंचाई नियमसे होती है।

$$\text{ऊंचाई } ५०० \text{ धनुष, विष्कंभ} = \frac{\text{ऊंचाई}}{९} = \frac{५००}{९}$$

$$\text{परिधि} = \left(\frac{\text{विष्कंभ} \times १६ + १६}{११३} \right) + \text{विष्कंभ} \times ३$$

$$= \left(\frac{५०० \times १६ + १६}{११३} \right) + \left(\frac{५०० \times ३}{९} \right) = \frac{८००० + १६ \times ९}{९} + \frac{१५००}{९} = \frac{८००० + १४४ - १५००}{९}$$

$$\frac{८१४४}{९ \times ११३} + \frac{१५०० \times ११३}{९ \times ११३} = \frac{८१४४ + १६९५००}{१०१७} = \frac{१७०६४४}{१०१७} \text{ परिधि}$$

$$\frac{\text{परिधि}}{२} \times \frac{\text{विष्कंभ}}{२} = \text{क्षेत्रफल} \quad \frac{१७०६४४}{१०१७ \times २} \times \frac{५००}{९ \times २} = \frac{८८२२००० \text{ वर्ग } ३६६९२ \text{ धनुष}}{\text{क्षेत्रफल}}$$

क्षेत्रफल \times ऊंचाई = धनफल

$$\frac{८८२२०००}{३६६९२} \times ५०० = \frac{४४११००००००}{३६६९२} \text{ धनुष धनफल}$$

इन धनुष्यों का अंगुल में रूपांतर करने के लिए ३६ से गुणा करना। एक धनुष्य में ३६ अंगुल होते हैं। २४ अंगुलों का एक हाथ और ४ हाथों का एक धनुष्य होता है। $२४ \times ४ = ३६$

$$\frac{४४११००००००}{३६६९२} = ३६ \times ३६ \times ३६$$

$$३६६९२$$

$$= \frac{३९२९२०९०४९६००००}{३६६९२} \text{ धनांगुलप्रमाण धनफल}$$

इन संख्यात धनांगुलों से अपनी अपनी राशिके गुणित करने पर इच्छित गुणस्थान संबंधी क्षेत्र होता है।

मारगान्तिक समुद्घातका क्षेत्र = अपनी राशि \times संख्यात प्रतरांगुल \times ७ राजु
प्रमत्तसंयतराशि \times संख्यात प्रतरांगुल \times ७ राजु
संख्यात

संयत जीव सौधर्मकल्पसे लेकर सर्वार्थसिद्धिपर्यन्त उत्पन्न होते हैं। अतः उनका वलांतक मारणान्तिक क्षेत्र समुद्घात भी कर सकते हैं। सर्वार्थसिद्धि मध्यलोकसे लगाकर कुछ कम ७ राजु ऊंची है। एक संयतकी अवगाहना संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण है। यहाँ ऊँचाई ७ राजु लैना है। अतः ^{अवगाहनाका} क्षेत्रफल निकालकर है अतः संख्यात प्रतरांगुल लब्ध आया है। उसे ७ राजुसे गुणा करनेपर मारणान्तिक समुद्घात क्षेत्र लेता है।

मनुष्यलोक ४५ लाख चौड़ा और १ लाख योजन ही ऊँचा है अतः संयतोंका मारणान्तिक समुद्घातका क्षेत्र मनुष्यलोकसे असंख्यात गुणा है। तैजस समुद्घातका क्षेत्र →

९ योजनप्रमाण विष्कम्भ, १२ योजन प्रमाण आयाम

$9 \times 12 = 108$ योजन तैजस दारीरका क्षेत्रफल

१०८ प्रतरयोजनके संगुल करनेके लिए 664000^2 से गुणा करना.

१ योजन = ६६४००० संगुल, वगैरुप संख्याके गुणकार भी वगैरुप होते हैं।

$$108 \times 664000 \times 664000 = 473600992000000$$

इसको सूच्यंगुलके संख्यातवे भागप्रमाण बाल्क्यसे गुणित करनेपर ^{एक} तैजस समुद्घातका क्षेत्र होता है।

इसे $4736009920000000 \times \frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{प्रतरांगुल} \times \text{संख्यात}} =$ एक तैजस समुद्घातका क्षेत्र इसे योग्य संख्यातसे गुणित करनेपर तैजससमुद्घातका सर्वक्षेत्र होता है।

पृ. ४८ प्रयोगिकेवलीकी स्वस्थान स्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र चार लोकोंका असंख्यातवा भाग और मनुष्यलोकका संख्यातवा भाग है।

स्थित दंड समुद्घातका क्षेत्र → चार लोकोंका असंख्यातवा भाग, मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा १२ अंगुल विष्कम्भ, कुछ कम चौदह राजु ऊँचाई

$$\text{सूक्ष्मपरिधि} = \frac{\text{विष्कम्भ} \times 92 + 92}{993} + \frac{\text{विष्कम्भ} \times 3}{9} = \frac{92 \times 92 + 92}{993} + 12 \times 3 =$$

$$\frac{952 + 92}{993} + \frac{36 \times 993}{993} = \frac{204 + 35832}{993} = \frac{36036}{993} = 36 \frac{84}{993} \text{ अंगुल}$$

$$\text{क्षेत्रफल} = \frac{36036}{993} \times \frac{92}{2} = \frac{36036 \times 3}{993} = \frac{92826}{993} \text{ प्रतरांगुल}$$

$$\text{घनफल} = \text{क्षेत्रफल} \times \text{ऊंचाई} = \frac{92626}{993} \times \text{कुछ कम 98 राजु}$$

यह एक केवलीके दंडसमुद्घातका क्षेत्र होता है

एक साथ समुद्घात करनेवाले संख्यात केवली होते हैं अतः उपर्युक्त प्रमाणको संख्यातसे गुणा करनेपर दंडसमुद्घातका सर्वक्षेत्र आता है।

$$\frac{92626}{993} \text{ प्रतरांगुल} \times \text{कुछ कम 98 राजु} \times \text{संख्यात}$$

उक्त क्षेत्र प्रमाणको चारो लोकोंसे भाजित करनेपर लोकका असंख्यातका भागप्रमाण दंडक्षेत्र आता है। उक्त दंडक्षेत्रको मानुषलोकसे भाजित करनेपर असंख्यात मानुषक्षेत्र लब्ध आते हैं।

केवलीके
उत्पत्तिकासनसे (बैठे हुए) दंडसमुद्घातका क्षेत्र -
विष्कम्भ \rightarrow 92 अंगुलसे तिगुना अर्थात् 36 अंगुल

$$\text{परिधि} = \frac{36 \times 92 + 92}{993} + \frac{36 \times 13}{993} = \frac{408 + 92 + 468 \times 13}{993}$$

$$= \frac{492 + 12204}{993} = \frac{12696}{993} = 12 \frac{26}{993} \text{ परिधि}$$

$$\text{क्षेत्रफल} = \frac{12696}{993} \times \frac{12}{2} = \frac{12696 \times 3}{993} = \frac{38388}{993}$$

$$\text{घनफल} = \frac{38388}{993} \text{ प्रतरांगुल} \times \text{कुछ कम 98 राजु}$$

$$\text{उपविष्ट दंडसमुद्घातका सर्वक्षेत्र} = \frac{38388}{993} \text{ प्रतरांगुल} \times \text{कुछ कम 98 राजु} \times \text{संख्यात}$$

पृ. 88 कपाट समुद्घात प्राप्त केवली का क्षेत्र = सामान्य लोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवा भाग, तिर्यग्लोक \div संख्यात, अट्टाई द्वीप \times असंख्यात

पूर्वाभिमुख कायोत्सर्ग में स्थित केवलीका कपाट समुद्घातका क्षेत्र -
लंबाई \rightarrow कुछ कम 98 राजु \times 6 राजु चौड़ाई \times 12 अंगुल मोटाई

$$98 \text{ राजु} = 2 \text{ जगत्त्रेणी} \cdot \text{अतः}$$

$$2 \text{ जगत्त्रेणी} \times 9 \text{ जगत्त्रेणी} \times 12 \text{ अंगुल}$$

$$\text{जगत्त्रेणी} \times \text{जगत्त्रेणी} = \text{जगत्प्रतर} \quad 92 \times 2 \text{ जगत्प्रतर} = 28 \text{ अंगुल प्रमाण जगत्प्रतर}$$

पूरुवाभिमुख पत्यंकासनमेंस्थित केवलीका कपाट समुद्धान क्षेत्र \rightarrow
 खडे हुएसे बैठे हुए की चौड़ाई तिगुनी होती है अतः $92 \times 3 = 36$ अंगुल
 चौड़ाई लेना।

$$98 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 36 \text{ अंगुल}$$

$$= 2 \times \text{जगत्प्रेणी} \times \text{जगत्प्रेणी} \times 36 \text{ अंगुल}$$

$$= \text{जगत्प्रतर} \times 2 \times 36 \text{ अंगुल} = 62 \text{ अंगुल प्रमाण जगत्प्रतर}$$

उत्तराभिमुख कायोत्सर्गसे समुद्धान करनेकाले केवलीका कपाट क्षेत्र \rightarrow

$$\text{अधोलोकका क्षेत्रफल} = \frac{\text{मुख} + \text{भूमि}}{2} \times \text{पद}$$

$$\frac{9 \text{ राजु} + 6 \text{ राजु}}{2} \times 6 \text{ राजु}$$

6 राजु = जगत्प्रेणी
 होती है अतः

$$\frac{6}{2} = 3 \text{ राजु} \times \text{जगत्प्रेणी प्रमाण}$$

$$\text{उर्ध्वलोकका क्षेत्रफल} = 9 \text{ राजु} \times 4 \text{ राजु} \times \frac{6}{2} \text{ राजु}$$

$$\frac{3 \times 6 \text{ राजु}}{2} \times \frac{6}{2} = 3 \text{ राजु} \times \frac{6}{2} \text{ राजु} = \text{आधे उर्ध्व लोकका क्षेत्रफल}$$

$$\text{उपर्युक्त क्षेत्रफल} \times 2 = \text{संपूर्ण उर्ध्वलोकका क्षेत्रफल}$$

$$3 \text{ राजु} \times \frac{6}{2} \times 2 \text{ राजु}$$

$$3 \text{ राजु} \times \text{जगत्प्रेणी प्रमाण} = \text{उर्ध्वलोकका क्षेत्रफल}$$

$$\text{अधोलोकका क्षेत्रफल} + \text{उर्ध्वलोकका क्षेत्रफल} = \text{संपूर्ण लोकका क्षेत्रफल}$$

$$4 \text{ राजु} \times \text{जगत्प्रेणी} + 3 \text{ राजु} \times \text{जगत्प्रेणी}$$

$$\text{जगत्प्रेणी} \times (4 \text{ राजु} + 3 \text{ राजु})$$

$$= \text{जगत्प्रेणी} \times 7 \text{ राजु} = \text{जगत्प्रेणी} \times \text{जगत्प्रेणी} = \boxed{\text{जगत्प्रतर}} \text{ संपूर्ण लोकका क्षेत्रफल}$$

उत्तराभिमुख केवलीके कपाट समुद्धान में

एक जीवके प्रदेश वास्तव्यथ विना लोकप्रमाण लम्बे होते हैं। पूरव पश्चिम लोककी चौड़ाई प्रमाण चौडे होते हैं और मोटाई 92 अंगुल प्रमाण होती है।
 अतः कपाट समुद्धानका क्षेत्र $\boxed{92 \text{ अंगुल मोटा जगत्प्रतर प्रमाण}} \text{ है।}$

पल्यंकासन स्थित केवलीका कपाट समुद्रघात क्षेत्र
कायोत्सर्गसे पल्यंकासन की उत्तरदक्षिण चौड़ाई तिगुनी होती है। अतः
 $92 \text{ अंगुल} \times 3 = 36 \text{ अंगुल चौड़ाई होती है। इसीलिए}$
पल्यंकासन केवली का कपाट समुद्रघात का क्षेत्र \rightarrow
 $36 \text{ अंगुल मोटा जगत्प्रतरप्रमाण होता है।}$

पृ. 50

प्रतर समुद्रघात प्राप्त केवलीका क्षेत्र \rightarrow

सामान्य लोकका असंख्यात बहुभागप्रमाण

अपूर्ण लोक - वातवलयसे रुका हुआ क्षेत्र = प्रतर समुद्रघातका क्षेत्र
वातवलयसे रुका हुआ क्षेत्र लोकका असंख्यातवा भाग है।

धनलोकका प्रमाण 383 धनराजु है।

लोकके पर्यन्त वातवलयसे व्याप्त क्षेत्रके लानेकी विधि -

लोकके तलभागमें तीनों वायुओंमेंसे प्रत्येक वायुका वाहत्य बीस हजार
योजन प्रमाण है।

अधोलोकका तलभाग 7 राजु लम्बा और 7 राजु चौड़ा है अतः

$$7 \text{ राजु} \times 7 \text{ राजु} = \text{जगत्प्रतर}$$

प्रत्येक वातवलय 20000 हजार योजन मोटा है अतः तीनों वातवलयोंकी
मोटाई $20,000 \times 3 = 60,000$ योजन

$60,000 \text{ योजन} \times \text{जगत्प्रतर} = \text{तलभागके वातवलय रुद्ध क्षेत्रका धनफल}$
पूर्व पश्चिम चौड़ाई में क्रमसे हानि होनेसे कुछ हीनता है इसलिए जगत्प्रतर
कुछ कम है लेकिन यहां उसको न गिन्ते हुए जगत्प्रतर कहा है।

अधोलोकके तलभागसे ऊपर एक राजुप्रमाण वातवलय से रुके हुए क्षेत्रका धनफल \rightarrow

उत्तर और दक्षिण संबंधी दोनों ही पार्श्वभागोंमें स्थित वातक्षेत्र -

पूर्व उत्तर और दक्षिण में पूर्वसे पश्चिम तक \times जगत्प्रेणी प्रमाण लंबा,
9 राजु ऊंचा, 60000 योजन मोटा वातके अवरुद्ध क्षेत्र है।

$$7 \text{ राजु} \times 9 \text{ राजु} \times 60,000 = \text{एक दिशाके वात का धनफल}$$

$$7 \text{ राजुप्रतर} \times 60,000 \text{ योजन}$$

$$\text{दोनों तरफ का } 7 \text{ राजुप्रतर} \times 60,000 \times 2 =$$

$$= 9,20,000 \times \text{जगत्प्रतर}$$

$$7 \text{ राजुप्रतर} = \text{जगत्प्रतर}$$

9,20,000 योजनोंके प्रमाणमें 7 का भाग देनेपर 96982 2 6 योजन आता है
अतः 96982 2 6 जगत्प्रतरप्रमाण उत्तर दक्षिण दिशामें वातक्षेत्र प्राप्त होता है।
पूर्व पश्चिम

इस घनफलको पहले तलभागके घनफलरूपसे आये हुए क्षेत्रमें मिला देनेपर पांच लार्न वालीस हजार योजनोंके सातवें भागप्रमाण बाल्क्यरूप जगत्प्रतर होता है।

$$\frac{60000 + 920000}{6} = \frac{60000 \times 6 + 920000}{6}$$

$$= \frac{420000 + 920000}{6} = \frac{1340000}{6} \text{ योजन मोटा जगत्प्रतर}$$

4.82 अधोलोकके तलभागासे ऊपर एक राजुप्रमाण वातवलकसे रुके हुए उत्तर पूर्व और पश्चिम दिशासंबंधी दोनों पार्श्वभागोंमें बंधी वातक्षेत्रका घनफल \rightarrow ऊंचाई = 9 राजु, लंबाई \rightarrow तलभागमें सात राजु, एक राजुके ऊपर जाकर मुरगमें $6\frac{2}{3}$ राजु, मोटाई \rightarrow 60000 योजन इन सबका क्षेत्रफल \rightarrow सर्वत्र समान लंबाई करने के लिए

$$\frac{\text{मुख+भूमि}}{2} = \frac{9 + 6\frac{2}{3}}{2} = \frac{15 + 4}{2} = \frac{19}{2} \text{ राजु इसका आधा}$$

$$\frac{19}{2 \times 2} = \frac{19}{2} \text{ राजु}$$

दो पार्श्वभागोंका निकालने के लिए दो से गुणा करना

$$\frac{19}{2} \times 2 = 19 \text{ इसको ऊंचाई से गुणा करनेपर}$$

$$\frac{19}{2} \times \frac{19}{2} = \text{इसमें 60000 योजन मोटाई का गुणा करनेपर}$$

$$\frac{19}{2} \times \frac{19}{2} \times 60000 = \frac{19 \times 19 \times 60000}{4} = \frac{21690000}{4} = 5422500 \text{ जगत्प्रतर प्रमाण}$$

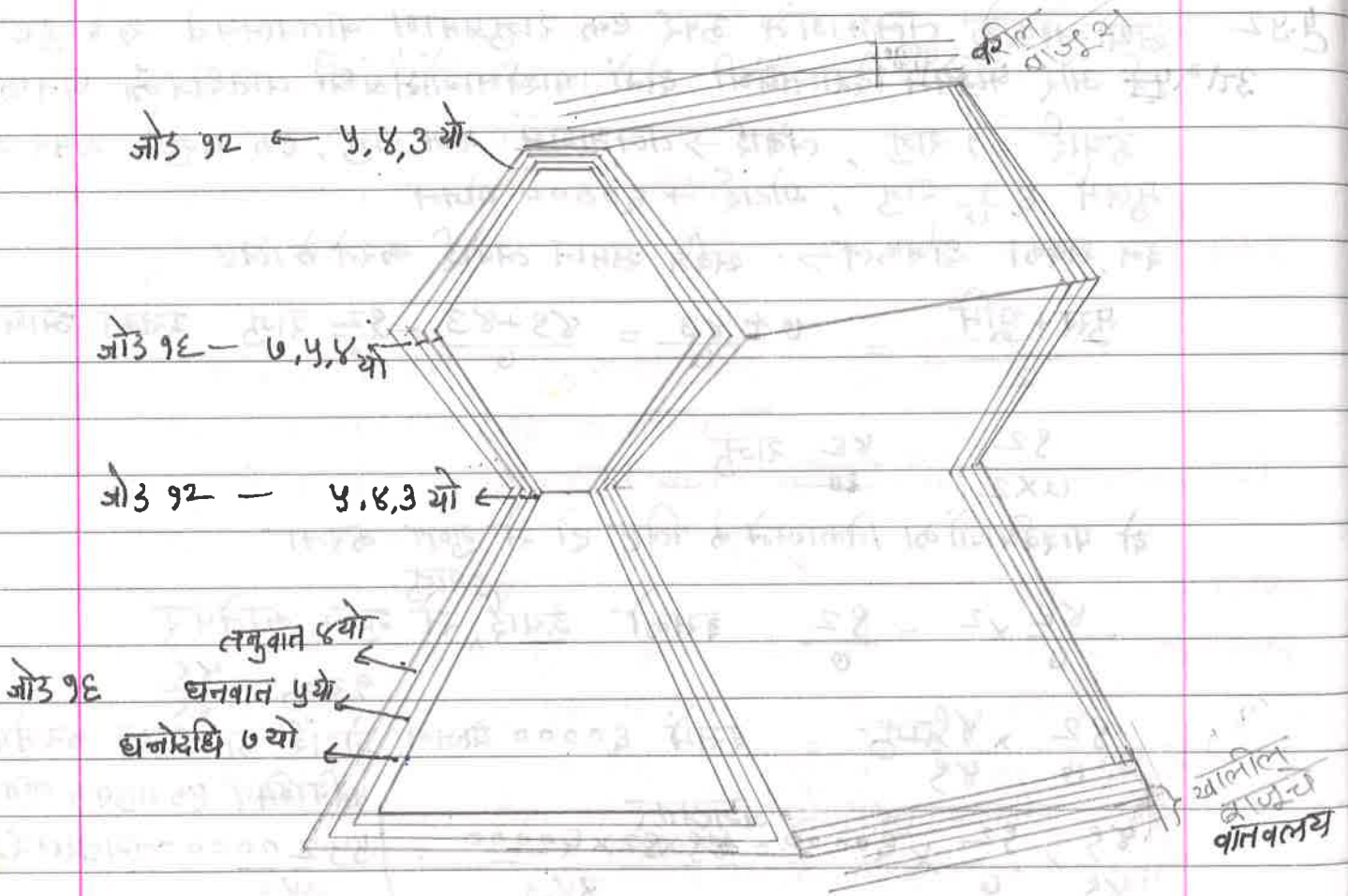
इसका स्वरूप 19 जगत्प्रतर स्वरूप है अतः 19 के स्थानपर जगत्प्रतर लिखा

पूर्वोक्त घनफल + पूर्व पश्चिम वातक्षेत्रका घनफल =

$$\frac{1340000}{6} + \frac{5422500}{4} = \frac{1340000 \times 4 + 5422500 \times 6}{24}$$

$$\frac{21440000 + 5422500 \times 6}{24} = \frac{21440000 + 32535000}{24} \text{ योजन मोटा जगत्प्रतर}$$

दोनों पार्श्व भागों में एक राजु के ऊपर सप्तम पृथ्वी के निकट घनोदधिवात-
 वलय सातयोजन, घनवातवलय पाँच योजन और तनुवातवलय चार योजन
 मोटाईवाले हैं। इस सप्तम पृथ्वी के ऊपर क्रमसे धरते हुए तिर्यग्लोक के
 समीप तीनों वातवलय क्रम से पाँच, चार और तीन योजन बाहल्यवाले
 तथा यहाँसे ब्रह्मलोकपर्यंत क्रमसे बढ़ते हुए, सात, पाँच, चार योजन बाहल्य-
 वाले हो जाते हैं तथा ब्रह्मलोकसे क्रमसे तीन होते हुए तीनों वातवलय
 ऊर्ध्वलोक के निकट पाँच, चार और तीन योजन बाहल्यवाले हो जाते हैं।



पृ. ५४ उत्तर और दक्षिण में सातवी पृथिवीसे लेकर लोकान्त तक वातरुद्ध क्षेत्र का
 घनफल \rightarrow ऊंचाई \rightarrow १३ राजु, चौड़ाई \rightarrow ७ राजु, मोटाई \rightarrow $१६+१२=२८$
 अधोलोकमें १६ और १२, ऊर्ध्वलोकमें १६, १२ दोनों को जोड़कर अर्धा करना
 $१६+१२=२८$ $२८ \div २ = १४$ सर्वत्र समांतर करने पर १४ योजन मोटाई
 होती है।

ऊंचाई \times चौड़ाई \times मोटाई = घनफल
 $१३ \times ७ \times १४ = ११९ \times १४ = १२७४$ एक त्रफ का वातक्षेत्र का घनफल

दोनों तरफका वातक्षेत्र का धनफल निकालने के लिए दो से गुणा करना।

$$9208 \times 2 = 24816 \text{ इसे जगत्प्रतररूपसे करनेके लिए सातसे}$$

गुणा करे और 8 तीनसौ लेतालीस का भाग दे। 383 भागहारमें उतर लाने के लिए ऐसा किया। सोधा 49 से भाग देनेपर जगत्प्रतर का प्रमाण होता है।

$$\frac{24816 \times 6}{383} = \frac{90636}{383} \text{ इतने योजन मोटा जगत्प्रतर आता है।}$$

उत्तर और दक्षिण में सातवी पृथिवीसे लोकान्तक वातक्षेत्र का धनफल

3 कर दक्षिण पूर्व और पश्चिममें सातवी पृथिवीसे मध्यलोकतक वायुरुद्ध क्षेत्रका धनफल → 8

ऊंचाई → 6 राजु, चौड़ाई → सातवी पृथ्वीके पास 6 राजु + 9 = $\frac{42+9}{6}$ 43, मध्यलोकके पास एक राजु, सर्वत्र चौड़ाई समान करनेके लिए

$$\frac{\text{मुख+भूमि}}{2} = \frac{43}{6} + 9 = \frac{43}{6} + \frac{54}{6} = \frac{97}{6} \div 2 = \frac{97}{12}$$

पूर्व पश्चिम दोनों तरफका निकालने के लिए दो से गुणा करना

$$\frac{97}{12} \times 2 = \frac{97}{6} \text{ चौड़ाई}$$

मोटाई = 98, 92 सर्वत्र समान करनेके लिए $\frac{98+92}{2} = \frac{190}{2} = 95$ मोटाई

$$\text{ऊंचाई} \times \text{चौड़ाई} \times \text{मोटाई} = \text{धनफल}$$

$$6 \text{ राजु} \times \frac{97}{6} \text{ राजु} \times 95 \text{ योजन} = \frac{5800}{6} \times 6 = \frac{58000}{6}$$

इसे उनपचास का भाग देनेपर जगत्प्रतर में लब्ध आता है।

$$\frac{58000}{6 \times 49} = \frac{58000}{383} \text{ इतने योजनप्रमाण जगत्प्रतर पूर्वपश्चिम सातवी पृथिवीसे मध्यलोकतकका वातक्षेत्रका धनफल}$$

पूर्व और पश्चिममें मध्यलोकसे लोकान्तक वातक्षेत्रका धनफल →

ऊंचाई - 6 राजु, चौड़ाई → मध्यलोकके पास 9 राजु, मध्यलोकके पास 9 राजु, लोकान्तमें 9 राजु सर्वत्र समान करनेके लिए

$$9+9 = 18 \div 2 = 9 \text{ राजु चौड़ाई}$$

$$\text{मोटाई} = 98, 92 \text{ सर्वत्र समान करनेपर } \frac{98+92}{2} = \frac{190}{2} = 95 \text{ मोटाई}$$

कुंचाई x चौडाई x मोटाई = धनफल

6 x 3 x 18 = 29 x 18 = 298

दोनों तरफ का निकालने के लिए दो से गुणा करना

298 x 2 = 596

इसे जगत्प्रतिरप्रमाणसे करने के लिए 85 का भाग देने पर

596 इतने 85 योजनप्रमाण जगत्प्रतिर उर्ध्वलोकके पूर्व और पश्चिम दिशाओंके वातरुद्ध क्षेत्र का धनफल होता है।

प्र. 55 लोकके उपरिमभागका वातरुद्ध क्षेत्रका धनफल ->

विस्तार = 9 राजु, आयाम = 6 राजु, मोटाई = कुछ कम एक योजन

अर्थात् 2 कोस + 9 कोस + 9500 धनुष्य = 820 धनुष्य कम 9 योजन मोटाई

2000 धनुष्य = 2000 धनुष्य का 1 कोस होता है अतः

8000 + 2000 + 9500 धनुष्य = 19500 धनुष्य

1000 धनुष्यों का एक योजन होता है तो 19500 धनुष्यों का कितने योजन योजन होता है।

प्रमाण	इच्छा	फल	लब्ध
1000	9	19500	$\frac{9 \times 19500}{1000} = \frac{303}{320}$ योजन मोटाई प्राप्त होती है

अतः 9 राजु x 6 राजु x $\frac{303}{320}$ यो =

9 राजु x 6 राजु = 6 राजुप्रतिर, 6 राजुप्रतिर अर्थात् जगत्प्रतिरका भाग

अतः $\frac{\text{जगत्प्रतिर}}{6} \times \frac{303}{320} = \text{जगत्प्रतिर} \frac{303}{2280}$ योजन

$\frac{303}{2280}$ योजनप्रमाण जगत्प्रतिर लोकके अग्रभागके वातरुद्धक्षेत्रका धनफल

सर्व धनफलोंका जोड़ -

$$\frac{3950000}{383} + \frac{96038}{383} + \frac{8200}{383} + \frac{596}{85} + \frac{303}{2280}$$

$$= \frac{3950000 + 96038 + 8200}{383} + \frac{596 \times 6}{85 \times 6} = \frac{3200208}{383} + \frac{4998}{383}$$

$$= \frac{3200892}{383} + \frac{303}{2280} = \frac{3200892 \times 320}{383 \times 320} + \frac{303 \times 85}{3240 \times 85}$$

$$= \frac{9028996680 + 98660}{909000} = 90$$

$$= \frac{9028996680}{909000} = 9932 \frac{42300}{909000}$$

इतने योजन मोटे रूप जगत्प्रतर = लोकके चारों ओर वालरुद्ध क्षेत्रका घनफल लेना है।

पृ. 58

धनलोक — वालरुद्धक्षेत्र = प्रतर समुदागत केवलीका क्षेत्र

अगत्प्रोणीके जिलमे प्रदेश हो उनमे जगत्प्रतरप्रमाण सर्वलोक है। अगत्प्रोणी × जगत्प्रतर = लोकके जगत्प्रोणी × जगत्प्रतर — $\frac{9028996680}{909000} \times \frac{\text{योजन}}{\text{जगत्प्रतर}}$ = प्रतर समुदागत क्षेत्र

प्रतरसमुदागत क्षेत्र अधोलोकके प्रमाणरूपसे करनेपर कुछ अधिक अधोलोकके चौथे भाग से कम हो अधोलोकके प्रमाण लेता है।

$$\text{प्रतरसमुदागत क्षेत्र} = (\text{अधोलोक} \times 2) - \left(\frac{\text{अधोलोक}}{3} + \frac{9028996680}{909000} \right)$$

उर्ध्वलोकके प्रमाणसे करनेपर उर्ध्वलोकके कुछ कम तीसरे भागसे अधिक हो उर्ध्वलोकके प्रमाण लेता है।

$$\text{प्रतरसमुदागत क्षेत्र} = \text{उर्ध्वलोक} \times 2 + \left(\frac{\text{उर्ध्वलोक}}{3} - \frac{9028996680}{909000} \right)$$

$$\text{संपूर्ण लोक} = (\text{अधोलोक} \times 2) - \frac{\text{अधोलोक}}{3}$$

$$383 \text{ धनराजु} = (95 \text{ धनराजु} \times 2) - \frac{95}{3}$$

$$\text{अधोलोक} = 95 \text{ धनराजु}$$

$$\text{सर्वलोक} = 383 \text{ धनराजु}$$

$$392 - 9 = 383 \text{ धनराजु}$$

यहांपर प्रतरसमुदागतका क्षेत्र निकालना है इसलिए वालरुद्धक्षेत्र को भी दुगुणे अधोलोकमेंसे घटाया है।

$$\text{संपूर्ण लोक} = (\text{उर्ध्वलोक} \times 2) + \frac{\text{उर्ध्वलोक}}{3}$$

$$\text{उर्ध्वलोक} = 986 \text{ धनराजु}$$

$$= 986 \times 2 + \frac{986}{3}$$

$$= 298 + 99 = 383 \text{ धनराजु}$$

यहांपर प्रतरसमुदागतका क्षेत्र निकालनेके लिए वालरुद्धक्षेत्र को उर्ध्वलोक के तीसरे भागमेंसे कम करके जो बचा शेष बचा उसे दुगुणे उर्ध्वलोकमें मिलाया।

लोकपूरण समुदागत क्षेत्र = संपूर्ण लोक

नरक गति मार्गणामें क्षेत्र

पृ. 46

नरक गति में नारकियों में 9 से 8 गुणस्थानवर्ती जीवों का क्षेत्र → लोक असंख्या
मिथ्यादृष्टि नारकियों का स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना समुद्घात, कषाय
समुद्घात, वैक्रियिक समुद्घात क्षेत्र → सामान्यादि 8 लोकों का असंख्यातवा भाग,
मेनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा
इसका स्पष्टीकरण करने के लिए प्रथम नारकियों की अवगलना कहते हैं।
प्रत्येक पृथ्वी में परलोक की संख्या

पृथ्वी क्र.	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	सप्तम
परलसंख्या	93	99	9	6	5	3	9

प्रथम पृथ्वी के प्रथम परलमें नारकियों की ऊंचाई 3 हाथ हैं और तेरहवें परलमें
6 धनुष, 3 हाथ, 6 अंगुल है।

बीचके परलों में नारकियों की ऊंचाई का प्रमाण निकालना है। उसके लिए
प्रत्येक परलमें वृद्धिका प्रमाण निकालना चाहिए। उसको निकालने का सूत्र →

$$\frac{\text{भूमि-मुख}}{\text{पद}} = \text{वृद्धिका प्रमाण}$$

अंतिम परलको भूमि हों कहते हैं और द्वितीयादि नरकों में प्रथमादि नरकों के
अंतिम परलके नारकियों की ऊंचाई मुख हो जाती है, परन्तु प्रथम नरक में प्रथम
परलके नारकियों की ऊंचाई ही मुख है। प्रथम पृथ्वी के प्रथम परलके नारकि-
यों की ऊंचाई का प्रमाण निकालना नहीं है अतः वहां पदका प्रमाण 92 है
और शेष नरकों में जहां जितने परल हैं वहां उतना पदका प्रमाण लेना।
प्रथम नरक में दूसरा परल प्रथम और अंतिम परल बारहवा गिना जायेगा।
प्रत्येक पृथ्वी के अंतिम परल में नारकियों की ऊंचाई पूर्व पृथ्वी के अंतिम परलसे
इनी इनी है।

पृथ्वी क्र.	अंतिम परलमें नारकियों की ऊंचाई
प्रथम	6 धनुष्य 3 हाथ 6 अंगुल = 6 धनुष्य 3 हाथ 6 अंगुल
द्वितीय	98 धनुष्य 6 हाथ 92 अंगुल = 99 धनुष्य 2 हाथ 92 अंगुल
तृतीय	30 धनुष्य 4 हाथ 28 अंगुल = 39 धनुष्य 9 हाथ 0
चतुर्थ	82 धनुष्य 2 हाथ 0 = 82 धनुष्य 2 हाथ
पंचम	928 धनुष्य 8 हाथ 0 = 929 धनुष्य
षष्ठ	250 धनुष्य 0 0 = 250
सप्तम	500 धनुष्य 0 0 = 500

28 अंगुल = 1 हाथ
 8 हाथ = 9 धनुष्य

९६ अंगुल = एक धनुष्य

पृ. ५८

प्रथम पृथिवी के प्रत्येक परलकी ऊंचाई में वृद्धिका प्रमाण =

$$\frac{\text{भूमि-मुख} = \text{वृद्धि}}{\text{घट}$$

$$\frac{650-62}{92} = \frac{588}{92}$$

$$= 58 \frac{1}{2} \text{ अंगुल}$$

अंगुलों को हाथों में रूपांतर करने के लिए 28 का भाग देना

$$\frac{58}{28} = 2 \text{ हाथ } 2 \text{ अंगुल} \quad \text{ऊपरका } \frac{1}{2} \text{ अंगुल उसमें मिलाना}$$

2 हाथ $2 \frac{1}{2}$ अंगुल प्रथम पृथ्वी में वृद्धिका प्रमाण

के नारकियों की प्रथमादि परलकी ऊंचाई में वृद्धिका प्रमाण मिलाने पर द्वितीयादि परलके नारकियों की ऊंचाई का प्रमाण आता है।

प्रथम पृथ्वी में 93 परलों में नारकियों की ऊंचाई का प्रमाण

परल क्र	पूर्व परल के नारकियों की ऊंचाई + वृद्धिका प्रमाण	लक्ष्य ऊंचाई		
		धनुष्य	हाथ	अंगुल
प्रथम			2 हाथ	
द्वितीय	3 हाथ + 2 हाथ + $2 \frac{1}{2}$ अंगुल = 5 हाथ $2 \frac{1}{2}$ अंगुल	9	9	$2 \frac{1}{2}$
तृतीय	9 ध. 9 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 9 ध. 3 हा. 9 अं.	9	3	90
चतुर्थ	9 ध. 3 हा. 9 अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 9 ध. 5 हा. 29 $\frac{1}{2}$ अं	2	2	9 $\frac{1}{2}$
पांचवा	2 ध. 2 हा. 9 $\frac{1}{2}$ अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 2 ध. 4 हा. 90 अं	3	0	90
छठा	3 ध. 90 अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 3 ध. 2 हा. 92 $\frac{1}{2}$ अं.	3	2	92 $\frac{1}{2}$
सातवा	3 ध. 2 हा. 92 $\frac{1}{2}$ अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 3 ध. 4 हा. 20 अं.	4	9	3
आठवा	4 ध. 9 हा. 3 अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 4 ध. 3 हा. 99 $\frac{1}{2}$ अं.	4	3	99 $\frac{1}{2}$
नववा	4 ध. 3 हा. 99 $\frac{1}{2}$ अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 4 ध. 5 हा. 20 अं	5	9	20
दसवा	5 ध. 9 हा. 20 अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 5 ध. 3 हा. 22 $\frac{1}{2}$ अं.	5	0	4 $\frac{1}{2}$
ग्यारहवा	5 ध. 4 $\frac{1}{2}$ अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 5 ध. 2 हा. 93 अं.	5	2	93
बारहवा	5 ध. 2 हा. 93 अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 5 ध. 4 हा. 29 $\frac{1}{2}$ अं.	6	0	29 $\frac{1}{2}$
तेरहवा	6 ध. 29 $\frac{1}{2}$ अं + 2 हा. $2 \frac{1}{2}$ अं = 6 ध. 2 हा. 30 अं	6	3	6

किसी भी पटल में कुंवाई का प्रमाण सीधा निकालना ही तो उसको निकालने का सूत्र
 (विवक्षित पटल × वृद्धि का प्रमाण) + मुख का प्रमाण = विवक्षित पटल में कुंवाई का प्रमाण

कुंवाई = $(8 \times 2 \text{ हाथ } \times \frac{1}{2} \text{ अंगुल}) + 3 \text{ हाथ} = 2 \text{ हाथ} + 3 \text{ हाथ} = 5 \text{ हाथ}$
 $\frac{5 \text{ हाथ} \times 28}{28} = 1 \text{ हाथ } 90 \text{ अंगुल} = 1 + 90 = 91 \text{ हाथ } 90 \text{ अंगुल} = 3 \text{ धनुष्य } 90 \text{ अंगुल}$

सर्वत्र 8 हाथ हो जाने पर उसको धनुष्य में रूपांतर करके धनुष्य में
 बिछाना, 28 अंगुल हो जाने पर उसका हाथ में रूपांतर करके हाथ में बिछाना।
 यह प्रक्रिया करने से पूर्वोक्त प्रमाण प्राप्त होते हैं।

पृ. 95 दूसरी पृथ्वी में वृद्धि का प्रमाण =

भूमि - मुख = वृद्धि पद	भूमि = 95 धनुष्य 2 हाथ 92 अंगुल अंगुलों में रूपांतर $(95 \times 4 + 2) \times 28$ $1062 \times 28 = 29736 + 56 \text{ अंगुल} = 29792 \text{ अंगुल}$
$\frac{9500 - 650}{99}$	मुख = 650 अंगुल पद = 99
$= \frac{650}{99} = 6 \frac{56}{99} \text{ अंगुल वृद्धि}$	

हाथों में रूपांतर = $\frac{56}{28} = 2 \text{ हाथ } 20 \text{ अंगुल } + \frac{2}{99} \text{ अंगुल}$

2 हाथ 20 $\frac{2}{99}$ अंगुल = दूसरी पृथ्वी में वृद्धि का प्रमाण

दूसरी पृथ्वी के ग्यारह पटलों में नारकियों की कुंवाई का प्रमाण

पटल क्र.	पूर्व पटल में कुंवाई + वृद्धि का प्रमाण	विवक्षित पटल में कुंवाई प्रमाण
	धनुष्य हाथ अंगुल + हाथ अंगुल = ध. हा. अंगुल	धनुष्य हाथ अंगुल
प्रथम	6 हा. 3 $\frac{56}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 6 हा. 5 $2 \frac{2}{99}$	2 2 $\frac{2}{99}$
दूसरा	2 2 $2 \frac{2}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 2 हा. 4 $2 \frac{4}{99}$	8 0 $22 \frac{4}{99}$
तीसरा	5 0 $22 \frac{4}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 5 हा. 4 $4 \frac{6}{99}$	9 3 $12 \frac{6}{99}$
चौथा	9 3 $12 \frac{6}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 9 हा. 5 $14 \frac{8}{99}$	10 2 $14 \frac{8}{99}$
पांचवा	19 0 $14 \frac{8}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 19 हा. 8 $16 \frac{10}{99}$	11 1 $10 \frac{10}{99}$
छठा	11 1 $16 \frac{10}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 11 हा. 3 $18 \frac{12}{99} = 31 \frac{2}{99}$	12 0 $10 \frac{12}{99}$
सातवा	12 0 $18 \frac{12}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 12 हा. 2 $20 \frac{14}{99}$	12 3 $3 \frac{14}{99}$
आठवा	12 3 $20 \frac{14}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 12 हा. 4 $22 \frac{16}{99}$	13 1 $23 \frac{16}{99}$
नववा	13 4 $22 \frac{16}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 13 हा. 3 $24 \frac{18}{99}$	14 0 $19 \frac{18}{99}$
दसवा	14 3 $24 \frac{18}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 14 हा. 2 $26 \frac{20}{99}$	14 3 $15 \frac{20}{99}$
ग्यारहवा	14 3 $26 \frac{20}{99}$ + 2 $20 \frac{2}{99}$ = 14 हा. 4 $28 \frac{22}{99} = 38 \frac{2}{99}$	15 2 12

प्र. ६० तीसरी पृथ्वीमें वृद्धिका प्रमाण =

$$\frac{\text{भूमि - मुख}}{\text{पर}} = \text{वृद्धि}$$

$$\frac{3000 - 9500}{9}$$

$$= \frac{9500}{9} = 988 \frac{2}{3} \text{ अंगुल}$$

भूमि = 39 धनुष्य 9 हाथ
 अंगुलोमे = $(39 \times 4 + 9) \times 28$
 $924 + 9 = 925 \times 28 = 3000 \text{ अंगुल}$
 मुख = 9500 अंगुल
 पर = 9

$988 \frac{2}{3}$ अंगुल वृद्धिका प्रमाण

अंगुलोंका हाथों में परिवर्तन = $\frac{988}{28} = 6$ हाथ 22 अंगुल
 हाथोंका धनुष्यों में परिवर्तन = $\frac{6}{4} = 1$ धनुष्य 2 हाथ

अतः तीसरी पृथ्वीमें वृद्धिका प्रमाण = 9 धनुष्य 2 हाथ 22 अंगुल

तीसरी पृथ्वीके नौ महलोंमें नारकियोंकी ऊंचाई का प्रमाण

परम क्र.	पूर्व पटल ऊंचाई + वृद्धिका प्रमाण	जोड़	लक्ष ऊंचाई प्रमाण
	धनुष्य हाथ अंगुल + धनुष्य हाथ अंगुल	धनुष्य हाथ अंगुल	धनुष्य हाथ अंगुल
प्रथम	95 2 92 + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	98 3 $38 \frac{2}{3}$	96 9 $90 \frac{2}{3}$
द्वितीय	96 9 $90 \frac{2}{3}$ + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	98 3 $32 \frac{1}{3}$	95 0 $89 \frac{1}{3}$
तीसरा	95 0 $89 \frac{1}{3}$ + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	20 2 $39 \frac{2}{3} = 32$	20 3 6
चौथा	20 3 6 + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	29 5 $30 \frac{2}{3}$	22 2 $8 \frac{2}{3}$
पाचवा	22 2 $8 \frac{2}{3}$ + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	23 8 $24 \frac{1}{3} = 25 \frac{1}{3}$	24 9 $4 \frac{1}{3}$
छठा	24 9 $4 \frac{1}{3}$ + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	24 3 $26 \frac{2}{3} = 26$	24 0 4
सातवा	24 0 4 + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	26 2 $24 \frac{2}{3}$	26 3 $8 \frac{2}{3}$
आठवा	26 3 $8 \frac{2}{3}$ + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	26 5 $24 \frac{1}{3} = 25 \frac{1}{3}$	25 2 $1 \frac{1}{3}$
नववा	25 2 $1 \frac{1}{3}$ + 9 2 $22 \frac{2}{3}$	30 8 $23 \frac{2}{3} = 24$	39 9 0

चौथी पृथ्वीमें वृद्धिका प्रमाण =

$$\frac{\text{भूमि} - \text{मुख}}{\text{पद}} = \text{वृद्धि}$$

$$\frac{6000 - 3000}{6} = \frac{3000}{6} = 500 \text{ अंगुल}$$

$$\text{भूमि} = 62 \text{ धनुष्य } 2 \text{ हाथ}$$

$$\text{अंगुलोंमें } (62 \times 8) + 2 \times 28 = 284 + 2 = 286$$

$$286 \times 28 = 8008 \text{ अंगुल}$$

$$\text{मुख} = 3000 \text{ अंगुल}$$

$$\text{पद} = 6$$

अंगुलोंका हाथोंमें रूपांतर $\frac{824}{28} = 29 \text{ हाथ } 20 \text{ अंगुल}$

हाथोंका धनुष्योंमें रूपांतर = $\frac{29}{8} = 3 \text{ धनुष्य } 9 \text{ हाथ}$

अतः चौथी पृथ्वीमें वृद्धिका प्रमाण 3 धनुष्य 9 हाथ $20 \frac{4}{6}$ अंगुल

चौथी पृथ्वीके सात पटलोंमें नारकियोंकी ऊंचाईका प्रमाण

पटल क्र.	पूर्व पटल ऊंचाई + वृद्धिका प्रमाण जोड़						नब्बे ऊंचाईका प्रमाण		
	धनुष्य	हाथ	अंगुल	धनुष्य	हाथ	अंगुल	धनुष्य	हाथ	अंगुल
प्रथम	39	9		+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 34$	2		$20 \frac{4}{6}$
दूसरा	39	2	$20 \frac{4}{6}$	+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 39$	3	$40 \frac{4}{6} = 40 \frac{2}{3}$	$96 \frac{2}{6}$
तीसरा	40	0	$96 \frac{2}{6}$	+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 48$	9	$36 \frac{4}{6}$	$88 \frac{2}{6}$
चौथा	48	2	$93 \frac{4}{6}$	+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 56$	3	$33 \frac{2}{6} = 34 \frac{2}{6}$	$89 \frac{2}{6}$
पाचवा	49	0	$90 \frac{2}{6}$	+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 57$	9	$30 \frac{4}{6}$	$89 \frac{2}{6}$
छठा	49	2	$88 \frac{4}{6}$	+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 57$	3	$28 \frac{2}{6} = 28 \frac{1}{3}$	$89 \frac{2}{6}$
सातवा	49	0	$86 \frac{2}{6}$	+ 8	9	$20 \frac{4}{6} = 57$	9	28	0

पांचवी पृथ्वीमें वृद्धिका प्रमाण →

$$\frac{\text{भूमि} - \text{मुख}}{\text{पद}} = \text{वृद्धि}$$

$$\frac{92000 - 6000}{5} = \frac{86000}{5} = 17200 \text{ अंगुल}$$

$$\text{भूमि} \rightarrow 925 \text{ धनुष्य } 925 \times 8 \times 28 = 209000 \text{ अंगुल}$$

$$\text{मुख} \rightarrow 6000 \text{ अंगुल}$$

$$\text{पद} \rightarrow 5$$

$$\text{अंगुलों के हाथ} = \frac{9200}{28} = 30$$

$$\text{हाथों के धनुष्य} = \frac{30}{2} = 12 \text{ धनुष्य } 2 \text{ हाथ}$$

पृ. ६१

पांचवी पृथ्वी में वृद्धिका प्रमाण = 12 धनुष्य 2 हाथ

पांचवी पृथ्वी के पांच परतों में वृद्धिका प्रमाण

परत क्र.	पूर्व परत ऊंचाई + वृद्धिका प्रमाण	जोड़	लब्ध ऊंचाई
	धनुष्य हाथ + धनुष्य हाथ	धनुष्य हाथ	धनुष्य हाथ
प्रथम	६२ २ + १२ २	७४ ४	७५ ०
द्वितीय	७५ ० + १२ २	८७ २	८७ २
तृतीय	८७ २ + १२ २	९९ ४	१०० ०
चतुर्थ	१०० ० + १२ २	११२ २	११२ २
पंचम	११२ २ + १२ २	१२४ ४	१२५ ०

पृ. ६२ छठी पृथ्वी में वृद्धिका प्रमाण =

$$\frac{\text{भूमि-मुख}}{\text{पद}} = \text{वृद्धि}$$

$$\frac{240 - 924}{3} = \frac{924}{3} = 89 \frac{2}{3} \text{ धनुष्य}$$

$$\text{भूमि} = 240 \text{ धनुष्य}$$

$$\text{मुख} = 924 \text{ धनुष्य}$$

$$\text{पद} = 3$$

$$\text{ऊपर शेष रहे धनुष्यों के हाथ} = \frac{2}{3} \times 8 = \frac{16}{3} = 2 \text{ हाथ} + \frac{2}{3} \text{ हाथ}$$

$$\text{ऊपर शेष रहे हाथों के अंगुल} = \frac{2}{3} \times 28 = \frac{56}{3} = 18 \text{ अंगुल}$$

अतः छठी पृथ्वी में वृद्धिका प्रमाण = 89 धनुष्य 2 हाथ 18 अंगुल

छठी पृथ्वी के तीस परतों में नारकियों की ऊंचाई का प्रमाण

परत क्र.	पूर्व परत ऊंचाई + वृद्धिका प्रमाण	जोड़	लब्ध ऊंचाई
	धनुष्य हाथ अंगुल + धनुष्य हाथ अंगुल = धनुष्य हाथ अंगुल	धनुष्य हाथ अंगुल	धनुष्य हाथ अंगुल
प्रथम	१२५ ० ० + ४१ २ १६ = १६६ २ १६	१६६ २ १६	१६६ २ १६
द्वितीय	१६६ २ १६ + ४१ २ १६ = २०७ ४ ३२	२०७ ४ ३२	२०८ १ ८
तृतीय	२०८ १ ८ + ४१ २ १६ = २४९ ३ २४	२४९ ३ २४	२५० ० ०

सातवी पृथ्वी में एक ही परत है उसमें नारकियों की ऊंचाई ५०० धनुष्य

नारकियों में ऊंचाई का आठवे भागप्रमाण विष्कंभ होता है।
विष्कंभ की परिधि निकालना।

$$\frac{\text{परिधि}}{2} \times \frac{\text{विष्कंभ}}{2} \times \text{उत्सेध} = \text{नारकियों की अवगाहना}$$

सातवीं पृथिवी के नारकियों की अवगाहना प्रधान है, क्योंकि पहली पृथिवी की अवगाहना से सातवीं पृथिवी की अवगाहना संख्यातगुणी पाई जाती है।
द्रव्यप्रमाण की अपेक्षा पहली पृथिवी प्रधान है, क्योंकि द्वितीयादी शेष छह पृथिवियों के द्रव्यप्रमाण से पहली पृथिवी का द्रव्य असंख्यातगुणा पाया जाता है।
इस प्रकार सातवीं पृथिवी के अवगाहना के गुणकार से पहली पृथिवी के द्रव्यप्रमाण का गुणकार बहुत बड़ा है, इसलिये यहां पर पहली पृथिवी को प्रधान करना चाहिये।
प्रथम पृथिवी शरीर अवगाहना \times संख्यात = सातवीं पृथिवी शरीर अवगाहना
सातवीं पृथिवी जीवसंख्या \times असंख्यात = प्रथम पृथिवी जीवसंख्या
संख्यात गुणकार से असंख्यात गुणकार बड़ा है यह बात सिद्ध है।

पृ. ६३

स्वस्थान
स्वस्थान राशि - संख्यात बहुभागप्रमाण = $\frac{\text{मूलराशि} \times \text{संख्यात} - 9}{\text{संख्यात}}$
विहारवत्स्वस्थान, वेदना समुद्धात, कषाय समुद्धात, वैक्रियिक समुद्धात राशि = $\frac{\text{मूलराशि}}{\text{संख्यात}}$

स्वस्थान स्वस्थान क्षेत्र = $\frac{\text{स्वराशि} \times \text{अंगुल}}{\text{संख्यात}}$ यहां अंगुल का अर्थ प्रमाणांगुल लेना। नारकियों की अवगाहना उत्सेधांगुल की अपेक्षा संख्यात घनांगुल है उसे प्रमाणांगुल करने पर प्रमाणांगुल का संख्यातवा भाग आता है। इसलिये अंगुल का संख्यातका भाग लिया।

वेदना समुद्धात और कषाय समुद्धात क्षेत्र = स्वराशि \times मूलशरीर अवगाहना \times 9
वैक्रियिक समुद्धात क्षेत्र = स्वराशि \times मूलशरीर अवगाहना \times संख्यात
मारणान्तिक समुद्धात क्षेत्र = मारणान्तिक राशि \times ^{नारकी} मूलविस्तार \times 9 (राजु का असंख्यातवा भाग)

पृ. ६४

विग्रह करने वाली जीवराशि = $\frac{\text{प्रति समय मरने वाली राशि} \times \text{आवली का असंख्यातवा भाग} - 9}{\text{आवली का असंख्यातवा भाग}}$

एक समय में मारणान्तिक समुद्धात ^{जीव} राशि = $\frac{\text{विग्रह प्राप्त राशि} \times \text{आवली का असंख्यातवा भाग} - 9}{\text{आवली का असंख्यातवा भाग}}$

कुल मारणान्तिक समुद्धात जीवराशि = एक समय में मारणान्तिक जीवराशि \times मारणान्तिक उपक्रमण काल आवली का असंख्यातवा भाग

दूसरी पृथिवी संबंधी द्रव्य = तिर्यचों में से दूसरी पृथिवी में उत्पन्न होनेवाले मिथ्या
पल्योपम :- असंख्यात इष्टि जीव

उपर्युक्त राशि X (पल्योपम :- असंख्यात) - 9 = विग्रहगति में मारणान्तिक समुद्घात
पल्योपम :- असंख्यात से उत्पन्न होनेवाले तिर्यच मिथ्या इष्टि

विग्रहगति में मारणान्तिक समुद्घात से उत्पन्न राशि - विग्रहगति में राजुके प्रतिभागरूपसे
पल्योपम :- असंख्यात मारणान्तिक समुद्घात करके उत्पन्न होनेवाले तिर्यच मिथ्या इष्टि जीव

पूर्वोक्त सब क्षेत्रोंको सामान्य आदि चार लोकोंसे पृथक् पृथक् भाग देनेपर चार लोकोंका असंख्यातवा भाग लब्ध आता है और उक्त प्रमाणको मनुष्यलोकसे भाग देनेपर असंख्यात मनुष्यलोक आते हैं।

इसीप्रकार सासादन सम्यग्दृष्टि नारकियोंके क्षेत्र का प्ररूपण जानना। यहाँ यहाँ सासादन में उपपाद नहीं होता।

इसीप्रकार मिश्रमें - यहाँपर मारणान्तिक समुद्घात भी नहीं होता। सासादनवत् असंयत सम्यग्दृष्टि नारकियोंमें जानना - यहाँपर उपपाद होता है। मारणान्तिक समुद्घात और उपपादमें सम्यग्दृष्टि नारकी संख्यात ही पाये जाते हैं।

सातों पृथिवीयोंमें नारकी जीवोंका क्षेत्र = लोक :- असंख्यात
प्रसंख्या
 पहली पृथिवी में सामान्य प्ररूपणोंके समान है।

पहली पृथिवीके मिथ्या इष्टियोंका मारणान्तिक क्षेत्र तिर्यचलोकसे असंख्यातगुण है।

मारणान्तिक समुद्घात क्षेत्र = मारणान्तिक राशि X प्रतरांगुल X जगत्त्रोणी
संख्यात संख्यात
 जगत्त्रोणियोंके असंख्यातवे भाग जायामरूपसे मारणान्तिक समुद्घातको करके मरनेवाले जीव बहुत हैं इसलिये तिर्यचलोकका असंख्यातवा भाग बन जाता है।

दूसरी आदि पांच पृथिवीयोंमें असंयत सम्यग्दृष्टियोंका उपपाद नहीं होता है। सातवी पृथिवीमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें मारणान्तिक पद नहीं है और असंयत सम्यग्दृष्टियोंमें मारणान्तिक और उपपाद पदका अभाव है।

तिर्यच गतिमें क्षेत्रप्ररूपणा

तिर्यच गतिमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र → सर्वलोक
 वैक्रियिक समुदातका क्षेत्र - तिर्यचलोक ÷ असंख्यात
 तिर्यचोंमें विक्रिया करनेवाली राशि पत्योपमके असंख्यातके भागमात्र धनांगुलोसे
 गुणित जगत्त्रेणीप्रमाण है।

सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यचोंमें - स्वस्थान स्वस्थान, विलारवत्स्वस्थान, वेदनासमुदात
 कषायसमुदात और वैक्रियिक समुदातका क्षेत्र = सामान्यलोकादि ४ लोक, मनुष्यलोक ×
 असंख्यात

स्वस्थान स्वस्थान राशि → मूलराशिका संख्यात बहुभाग
 दोष राशियां → संख्यातवा भाग
 वैक्रियिक समुदात राशि → असंख्यातवा भाग

पृ. ६८ मारणान्तिक समुदातका क्षेत्र - ४ लोक, मनुष्यलोक × असंख्यात
 असंख्यात

सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यच आवली ÷ असंख्यात = मरनेवाली सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यच राशि

मरनेवाली सासादन तिर्यच राशि × आवली ÷ असंख्यात - १ = मारणान्तिक समुदात प्राप्त राशि

मारणान्तिक समुदात राशि आवली ÷ असंख्यात = राजु मात्र आयाम युक्त एक समयमें संचित मारणान्तिक
 समुदात राशि

एक समय संचित राजु मात्र आयाम युक्त मारणान्तिक राशि × आवली ÷ असंख्यात = मारणान्तिक समुदातके
 कालमें संचित जीवराशि

मारणान्तिक समुदात राशि × संख्यात प्रत्यांगुल × राजु = मारणान्तिक समुदात क्षेत्र

उपपादका क्षेत्र → ४ लोक, मनुष्यलोक × असंख्यात
 असंख्यात

सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यच आवली ÷ असंख्यात = उत्पन्न होनेवाली सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यच राशि

उत्पन्न होनेवाली सासादन तिर्यच राशि × आवली ÷ असंख्यात - १ = विग्रह गतिमें मारणान्तिक
 समुदातसे उत्पन्न होनेवाली तिर्यच राशि

अर्थात् उत्पन्न राशि की असंख्यात बहुभाग राशि मारणान्तिक समुदात उत्पन्न कुबके उत्पन्न
 होती है।

विग्रहगतिसे उत्पन्न राशि = प्रजुगतिसे आनेवाली सासादन तिर्यच राशि
 आवली ÷ असंख्यात

प्रजुगतिसे उत्पन्न राशि × प्रतरांगुल संख्यात × राजु = सासादन तिर्यच उपपाद क्षेत्र

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्याहृष्टि, असंयत सम्यग्मिथ्याहृष्टि और संयतासंयत तिर्यचोंके स्वस्थानस्वस्थान आदिके विषयमें जानना चाहिए।

विशेषता यह है कि उपपादमें असंयत सम्यग्मिथ्याहृष्टि तिर्यच संख्यात ही होते हैं क्योंकि जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शनके पहले तिर्यचायुका बन्ध कर लिया है ऐसे मनुष्य सम्यग्मिथ्याहृष्टियोंके (कृतकृत्यवेदक व क्षायिक सम्यग्मिथ्याहृष्टियोंके) विना दूसरे सम्यग्मिथ्याहृष्टियोंका तिर्यचोंमें उपपाद नहीं होता है।

इनकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण अथवा एक प्रतरांगुल है।
 क्योंकि चतुर्थ गुणस्थानमें उपपाद केवल भोगभूमि तिर्यचोंमें ही पाया जाता है।
 सम्यग्मिथ्याहृष्टि और संयतासंयत तिर्यचोंके उपपाद नहीं होता है।

॥ योंके मारणान्तिक समुद्धात भी नहीं होता है।

पृ. 60

पंचेन्द्रिय तिर्यच, पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यच, पंचेन्द्रिय योनिनी प्र मिथ्याहृष्टि जीवोंका स्वस्थान स्वस्थान, बिहारवत्स्वस्थान, वदना समुद्धात, कषाय समुद्धातका क्षेत्र → सामान्य, अधो, दुर्ध्वलोकका असंख्यातवा भाग, तिर्यग्लोक ÷ संख्यात, अर्द्ध द्वीप × असंख्यात
 यहाँपर अवगाहना गुणकार संख्यात घनांगुलप्रमाण
 स्वस्थान स्वस्थान राशि = संख्यात बहुभाग, शेष राशियां = संख्यातके भागमात्र

वैक्रियिक समुद्धातका क्षेत्र = 6 लोक ÷ असंख्यात, मनुष्यलोक × असंख्यात
 मारणान्तिक " " = 3 लोक ÷ असंख्यात, तिर्यग्लोक × असंख्यात, मनुष्यलोक × असंख्यात
 उपपाद क्षेत्र = " " " " " "

उपक्रमण काल लानेकी विधि →

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि
संख्यात आवलियोंमें	आवलीका असंख्यातवा भाग	उपक्रमण और अनुपक्रमणरूप आयु
	निरन्तर उपक्रमणकाल	में किलने उपक्रमणकाल

$$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \text{उपक्रमण अनुपक्रमणालोक आयु} = \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \text{उपक्रमण काल}$$

$\frac{\text{पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त राशि}^{\text{मिथ्यादृष्टि}}}{\text{पल्योपम} \div \text{असंख्यात}} = \text{मरनेवाली पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशि}$

$\frac{\text{मरनेवाली पं.प. ति. मिथ्यादृष्टि राशि} \times \text{पल्योपम} \div \text{असंख्यात} - 9}{\text{पल्योपम} \div \text{असंख्यात}} = \text{विप्रागतिसे मारणात्मिक समुद्घात करने मरनेवाली राशि}$

$\frac{\text{उपर्युक्त राशि}}{\text{पल्योपम} \div \text{असंख्यात}} = \frac{\text{एक समयमें संघित एक राजु आयामसे मारणात्मिक समुद्घात करनेवाली पं.प. ति. मिथ्यादृष्टि राशि}}{\text{पल्योपम} \div \text{असंख्यात}}$

$\text{उपर्युक्त मारणात्मिक राशि} \times \text{मारणात्मिक संबंधी उपक्रमकाल प्रवली} = \text{सर्व मारणात्मिक असंख्यात राशि}$

$\text{सर्व मारणात्मिक राशि} \times \text{संख्यात प्रतरांगुल} \times \text{एक राजु} = \text{पंचेन्द्रियपर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि मारणात्मिक समुद्घात क्षेत्र}$

$\frac{\text{सामान्यलोक/उर्ध्वलोक/अधोलोक}}{\text{पल्योपमका असंख्यातका भाग}}$

मारणात्मिक समुद्घात क्षेत्र

इसलिए मारणात्मिक समुद्घात क्षेत्र तीन लोकोंका असंख्यातका भाग है ऐसा कहा है।

इसीप्रकार उपपाद क्षेत्र भी लाना चाहिये। इतनी विशेषता है कि प्रथम दंडका उपसंहार करके दूसरे दंडमें स्थित जीवोंका प्रमाण लाना इच्छित है इसलिए पुनः एक उपर्युक्त मारणात्मिक राशिको पल्योपमके असंख्यातके भागसे भाग देना क्योंकि असंख्यात योजन आयामकाले दूसरे दंडमें स्थित जीवोंका प्रमाण बहुत नहीं पाये जाते हैं।

शेष गुणस्थानोंका कथन तिर्यंच ओधके कथनके समान जानना चाहिये।

इतनी विशेषता है कि योनिती तिर्यंचोंमें असंयत सम्यग्दृष्टियोंका उपपाद नहीं होता। क्योंकि सम्यग्दृष्टि मरकर स्त्रीवेदमें उत्पन्न नहीं होता।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषाय समुद्घातका क्षेत्र = सामान्यादि ४ लोक \div असंख्यात, मनुष्यलोक \times असंख्यात
मारणात्मिक समुद्घात व उपपाद क्षेत्र = सामान्यादि ३ लोक \div असंख्यात, तिर्यंचलोक व मनुष्यलोक \times असंख्यात
अपर्याप्तोंमें विहारवत्स्वस्थान व वैक्रियिक समुद्घात नहीं पाया जाता।

$\frac{\text{उत्सेध घनांगुल}}{\text{पल्योपम} \div \text{असंख्यात}} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवकी अवगाहना}$

समुझात

मार्गवा	स्वस्थान	स्वस्थान	विहार.स्व.	वेदना	कषाय	वैक्रियिक	मार्गान्तिक	उपपादा
नरकगति मिथ्या दृष्टि	४ लोक असंख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व के समान	स्व.स्व के समान	स्व.स्व. के समान	स्वस्थान स्वस्थान के समान	स्वस्थान स्वस्थान के समान	स्वस्थान स्वस्थान के समान
सासादन समयदृष्टि	मिथ्या दृष्टि के समान	"	"	"	"	"	"	X
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"	"	"	"	"	X	X
असंयत सम्यग्दृष्टि	"	"	"	"	"	"	स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान
तिर्य्य मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	"	३ लोक असंख्यात तिर्य्यग्लो संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक	३ लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादन सम्यग्दृष्टि असंयत सम्यग्दृष्टि	४ लोक असंख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व के समान	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	मार्गान्तिक के समान
मित्र संयतासंयत	"	"	"	"	"	"	X	X
	"	"	"	"	"	"	सासादन के समान	X
पंचेन्द्रिय तिर्य्य मिथ्यादृष्टि	३ लोक असंख्यात	तिर्य्यग्लोक संख्यात	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व के समान	स्व.स्व के समान	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	३ लोक असंख्यात तिर्य्यग्लोक X असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	मार्गान्तिक के समान
पंचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि	"	"	"	"	"	"	"	"
पंचेन्द्रिय योनिनी मिथ्यादृष्टि	"	"	"	"	"	"	"	"
सासादनादि शेष गुणस्थान	ओघ तिर्य्य विके समान	सासादना सर्वप्रिये						
मनुष्य मिथ्यादृष्टि	४ लोक असंख्यात	मनुष्यलोक संख्यात	स्व.स्व के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व के समान	स्व.स्व के समान	३ लोक असंख्यात तिर्य्यग्लोक X असंख्यात मनुष्य X असंख्यात	मार्गान्तिक के समान

मार्गणा	स्वस्थान	स्वस्थान	विहारवत्	वेदना	कषाय	वैक्रियिक	मारणान्तिक	उपचार
मनुष्य सासादन	४ लोक असंख्यात	मनुष्यलोक संख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. समान	स्व.स्व. के समान	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात	मारणान्तिक के समान
असंयत संख्य	"	"	"	"	"	"	"	"
संयतासंयत	"	"	"	"	"	"	"	X
सम्यग्मिथ्या.	"	"	"	"	"	"	X	X
प्रमत्तसंयतादि	सामान्य गुणस्थानके	समान	सर्व	पदोंमें	जानना			
मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि	४ लोक असंख्यात	मनुष्यलोक संख्यात	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात	मारणान्तिक के समान
मनुष्यिनी मिथ्या दृष्टि	"	"	"	"	"	"	"	"
लब्धयपर्यन्त मनुष्य	"	"	X	"	"	X	३ लोक असंख्यात तिर्यग्लोक x असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात	मारणान्तिक के समान
देव मिथ्यादृष्टि	३ लोक असंख्यात	तिर्यग्लोक संख्यात	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	३ लोक असंख्यात तिर्यग्लोक x असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात	मारणान्तिक के समान
शेषगुणस्थान	ओष के समान							
भवनबासी मिथ्यादृष्टि	४ लोक असंख्यात	मनुष्यलोक x असंख्यात	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	३ लोक असंख्यात तिर्यग्लोक x असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात
वागव्यंतर व ज्योतिषी मिथ्या.	३ लोक असंख्यात	तिर्यग्लोक संख्यात	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	३ लोक असंख्यात तिर्यग्लोक x असंख्यात मनुष्यलोक x असंख्यात	मारणान्तिक के समान
शौधर्म ऐशान मिथ्यादृष्टि	४ लोक असंख्यात	मनुष्य x असंख्यात	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	स्व.स्व. के समान	"	"
शेष गुणस्थान	ओष के समान							

मार्गणा	स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषाय	विहारवत्	वैक्रियिक	मारणान्तिक	उपपाद
शानकुमार से उपरिम उपरिम श्ले. मिथ्याशुष्टि	४ लोक मनुष्यलोक X असंख्यात असंख्यात	स्व. स्वस्थान के समान	स्व. स्वस्थान के समान	स्व. स्वस्थान के समान	स्व. स्वस्थान के समान
शेष गुणस्थान	" "	"	"	"	"
नौ अनुदिश, ४ अनुतर असंयत	" "	"	"	"	"
सर्वार्थसिद्धि	" मनुष्यलोक ÷ संख्यात	"	"	४ लोक मनुष्यलोक असंख्यात X असंख्यात	मारणान्तिक के समान
इन्द्रिय मार्गणा एकेन्द्रिय	सर्वलोक	X	४ लोक असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक
बादर एकेन्द्रिय बादर एके. पर्याप्त	३ लोक तिर्यग्लोक X असंख्यात संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	X	३	सर्वलोक	सर्वलोक
बादर एके. अपर्याप्त	" " "	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक
सूक्ष्म एकेन्द्रिय, पर्याप्त, अपर्याप्त	सर्वलोक	X	X	"	"
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय, पर्याप्त	३ लोक तिर्यग्लोक मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात X असंख्यात	स्व. स्वस्थान के समान		३ लोक तिर्यग्लोक X असंख्यात, असंख्यात मनुष्य X असंख्यात	मारणान्तिक के समान
द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त	४ लोक मनुष्यलोक X असंख्यात असंख्यात	X	X	३ लोक तिर्यग्लोक असंख्यात X असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	मारणान्तिक के समान
पंचेन्द्रिय, पंचे. पर्याप्त मिथ्याशुष्टि	३ लोक तिर्यग्लोक मनुष्यलोक X असंख्यात, संख्यात असंख्यात	स्व. स्वस्था न के समान	स्व. स्वस्था स्थान वत्	३ लोक तिर्यग्लोक असंख्यात X असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	मारणान्तिक वत्
सासादनादि गुणस्थान	ओष सासादनादिके समान				
लब्धपर्याप्त पंचेन्द्रिय	४ लोक मनुष्यलोक X असंख्यात असंख्यात	X	X	३ लोक तिर्यग्लोक असंख्यात X असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	मारणान्तिक के समान

मनुष्यनियों में असंयत सम्यग्दृष्टियों के उपपाद नहीं पाया जाता है। उन्हींके प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें तैजससमुद्धात और आहारकसमुद्धात नहीं पाया जाता है।

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य राशि = जगत्प्रेणी - 9
 सूच्यंगुल प्रथम मूल x तृतीय मूल

इस राशिको स्थापित करके मारणान्तिक समुद्धातका क्षेत्र पूर्वके समान लाना चाहिये

भवनवासियोंका उपपाद क्षेत्र तिर्यग्लोकका असंख्यातवा भाग ही पाया जाता है। उनके उपपादक्षेत्रका आयाम संख्यात सूच्यंगुलमात्र ही है क्योंकि इससे संख्यात योजन नीचे जाकर भवनवासियोंके विमानोंका अवस्थान नहीं पाया जाता है, तिर्यग्लोकमें भी सर्वत्र भवनवासियोंके आवास नहीं है, क्योंकि तिर्यग्लोकके मध्यवर्ती असंख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्रमें ही भवनवासी देवोंका अस्तित्व देखा जाता है। दूसरे, उपरिम देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यचोंके समान भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच और मनुष्योंका अपनी उत्पत्तिकी दिशाको छोड़कर तिरछा गमन नहीं होता। क्योंकि मनुष्य और तिर्यचोंकी बाणके समान सीधी गतिसे भवनवासी लोकके समीप आकर अधस्तन श्रेणीमें स्थित भवनवासी देवोंमें उत्पत्ति देसी जाती है। असंयतसम्यग्दृष्टियोंका भवनवासियोंमें, वानव्यन्तर और ज्योतिषियोंमें उपपाद नहीं होता है।

- असुरकुमारोंके शरीरकी ऊंचाई = 25 धनुष
- अन्य 9 कुमारोंके " " = 90 धनुष
- व्यन्तर देवोंके " " = 90 धनुष
- ज्योतिषी " " " = 7 धनुष

इस उल्लेखसे यहां अवगाहना क्षेत्र ले जाना चाहिये।

सौधर्म-ऐशान देव मिथ्यादृष्टियोंका मारणान्तिक और उपपाद क्षेत्र लाने समय एक प्रतरांगुल गुणित जगत्प्रेणीका संख्यातवा भागप्रमाण शुणकार स्थापित करना चाहिये। क्योंकि सौधर्म ईशान कल्पके इकतीसवें प्रमापटलमें उत्पन्न होनेवाले सभी तिर्यचोंके दूसरे दंडका आयाम जगत्प्रेणीके संख्यातवे भागप्रमाण पाया जाता है इसलिए सौधर्म और ईशान कल्पके देवोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा होता है।

सर्वार्थसिद्धिमें वेदनासमुद्धात और कषायसमुद्धातगत देवोंके उनके निमित्तसे उत्पन्न होनेवाला स्तोक उस्फूर्जन होता है अतः उनका क्षेत्र मानुषक्षेत्रका संख्यातवा भाग ही पाया जाता है।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव उ लोकोके संख्यातवे भागप्रमाण क्षेत्र में तथा मनुष्यलोक और तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इसका स्पष्टीकरण - मेरुपर्वतके मूलभागसे लेकर ऊपर शतार और सहस्रार कल्पतक पांच राजु उत्सेधरूपसे समचतुरस्र लोकनाली वायुसे परिपूर्ण है। उसे जगत्प्रतरके प्रमाणस्वरूप करते हैं -

यदि उनचास प्रतर राजुओंके एक परलका एक जगत्प्रतर प्राप्त होता है, तो पांच राजुप्रमाण प्रतर राजुओंका क्या प्राप्त होगा इसप्रकार त्रैराशिक करनेपर -

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि
४९ प्रतरराजुओंका	१ जगत्प्रतर	५ राजुप्रमाण प्रतरराजुओंके कितने जगत्प्रतर होंगे?

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{१ \text{ जगत्प्रतर} \times ५ \text{ राजुप्रमाण प्रतरराजु}}{४९ \text{ प्रतरराजु}}$$

$$= \frac{५ \text{ राजु}}{४९} \text{ जगत्प्रतर प्रमाण वातक्षेत्र}$$

वातक्षेत्र एक राजु चौड़ा, एक राजु मोरा और ५ राजु डुंचा है अतएव ५ धनराजु हुआ। इसको लोकप्रमाणसे करनेपर

प्रमाण राशि	फलराशि	इच्छाराशि
३४३ धनराजुओंका	१ लोक	५ धनराजुओंके कितने लोक?

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{१ \text{ धनलोक} \times ५ \text{ धनराजु}}{३४३ \text{ धनराजु}} = \frac{५}{३४३} \text{ धनलोक प्रमाण वातक्षेत्र}$$

उपर्युक्त वातक्षेत्र + लोकके चारों ओर का वातक्षेत्र + आठों पृथिवियोंके क्षेत्र और उनके नीचे स्थित वातक्षेत्र = संपूर्ण वातक्षेत्र

$$\frac{५}{४९} \text{ जगत्प्रतर} + \frac{१०२४१९८३४८०}{१०९७६०} \text{ जगत्प्रतर} + \text{संख्यात योजन बालुत्वरूप जगत्प्रतर} = \text{वातक्षेत्र}$$

सबको मिला देनेपर लोकके संख्यातवे भागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र होता है।

$$\frac{३४३ \text{ धनराजु}}{५ \text{ धनराजु}} = ६८ \frac{३}{५} \text{ लोकका } ६८ \frac{३}{५} \text{ वा भाग वातक्षेत्र होता है।}$$

मातृगणिका नाम	स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषाय	विलासत्	वैक्रियिक	मारणान्तिक	उपपाद्
कायमागठिा पृथ्वीकायिक, सूक्ष्म पृथ्वी उनके पर्याप्त, अपर्याप्त	सर्वलोक	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक
अपकायिक, सू. अप. उनके पर्याप्त, अपर्याप्त	सर्वलोक	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक
तैजसायिक, सू. तैजस, पर्याप्त, अपर्याप्त	सर्वलोक	X	५ लोक असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक
वायुकायिक, सू. वायु पर्याप्त, अपर्याप्त	सर्वलोक		४ लोक असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक
बादर पृथ्वीकायिक वा. पृथ्वी. अपर्याप्त	३ लोक असंख्यात	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक
वा. अप, बद्धापर्याप्त	" " "	X	X	" "	" "
बादर तैज. वा. अपर्याप्त	" " "	X	५ लोक असंख्यात	" "	" "
बादर वायु, वा. वा. अपर्याप्त	३ लोक असंख्यात	X	४ लोक असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक
बादर पृथ्वी. पर्याप्त बादर अप. पर्याप्त	४ लोक असंख्यात	X	X	३ लोक असंख्यात	मारणान्तिक के समान मनुष्यलोक X असंख्यात
बादर वनस्पति प्रत्येक शरीर पर्याप्त	३ लोक असंख्यात	X	X	" " " "	" " " "
बादर तैजस. पर्याप्त	५ लोक असंख्यात	X	५ लोक असंख्यात	४ लोक असंख्यात	मारणान्तिक के समान
बादर वायु. पर्याप्त	३ लोक असंख्यात	X	४ लोक असंख्यात	स्वस्थान स्वस्थान के समान	स्व. स्व. के समान
वनस्पति, सूक्ष्म वनस्पति उनके पर्याप्त अपर्याप्त निगोद, सूक्ष्म निगोद पर्याप्त अपर्याप्त	सर्वलोक	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक

भागिका नाम	स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषाय	विहार	वैक्रियिक	भारणात्मिक	उपपाद
बादर वनस्थिति, बादर निगोद, पर्याप्त, अपर्याप्त	उलोक तिर्यग्लोक X संख्यात असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक
त्रस, त्रसपर्याप्त मिथ्यादृष्टि	उलोक तिर्यग्लोक, असंख्यात संख्यात मनुष्यलोक, असंख्यात	स्व.स्व के समान	स्व.स्व.के समान	उलोक असंख्यात मनुष्य X असंख्यात	भारणात्मिक समान
सासादनादि शेष गुण स्थान	पंचेन्द्रियके सासादनादिके समान				
त्रसलब्ध्यपर्याप्त	पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तके समान				

बादर पृथिवीकायिक जीव और उन्हींके अपर्याप्त जीव तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इसका स्पर्शीकरण

बादर पृथिवीकायिक जीव और उन्हींके अपर्याप्त जीव पृथिवीका आप्रय लेकर रहते हैं इसलिये पृथिवियोंका धनफल निकालते हैं —

1) पहली रत्नप्रभा पृथिवीका धनफल →
चौडाई → एक राजु, लंबाई (उत्तरदक्षिण) ७ राजु, मोटाई (ऊंचाई) = १,८०,००० योजन

$$\bullet \text{ चौडाई} \times \text{लंबाई} \times \text{मोटाई} = \text{धनफल}$$

$$1 \text{ राजु} \times 7 \text{ राजु} \times 1,80,000 \text{ योजन}$$

$$7 \text{ राजुप्रतर} \times 1,80,000 \text{ योजन}$$

इसे जगत्प्रतरप्रमाण बनाने के लिए ऊंचाई के सात भाग करके एक भागके आगे भाग इसप्रकार सात भागोंको पसारकर रखनेसे चौडाई ७ राजु होती है, लंबाई ७ राजु है ही. और ऊंचाई १८०००० योजन का सातवा भागप्रमाण होती है।

$$\frac{1,80,000}{7} = 25698 \frac{2}{7} \text{ योजन}$$

$$7 \text{ राजु} \times 7 \text{ राजु} \times 25698 \frac{2}{7} \text{ योजन}$$

$$49 \text{ राजुप्रतर} \times 25698 \frac{2}{7} \text{ योजन} \quad 49 \text{ राजुप्रतर} = 1 \text{ जगत्प्रतर}$$

अतः $25698 \frac{2}{7}$ योजनोंके प्रदेशप्रमाण जगत्प्रतरप्रमाण पहली पृथिवीका धनफल होता है।

2) दूसरी पृथिवीका धनफल →

$$\text{पूर्वपश्चिम चौडाई} = 2 \text{ राजु} - \frac{1}{6} \text{ राजु} = \frac{12-1}{6} = \frac{11}{6} \text{ राजु} \text{ चौडाई}$$

उत्तर दक्षिण लंबाई ६ राजु , मोटाई (ऊंचाई) ३२००० योजन

$$\frac{93}{6} \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 32000 \text{ योजन}$$

$$= 93 \text{ राजुप्रतिर} \times 32000 = 2976000$$

जगत्प्रतिरप्रमाण बनाने के लिए ४९ का भाग देना क्योंकि ४९ राजुप्रतिरका एक जगत्प्रतिर होता है।

$$\frac{2976000}{49} = 60530 \frac{30}{49} \text{ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतिर}$$

द्वितीय पृथिवीका धनफल

३) तीसरी पृथिवीका धनफल →

$$\text{पूर्वपश्चिम चौडाई} = 3 \text{ राजु} - \frac{2}{6} \text{ राजु} = \frac{29-2}{6} = \frac{27}{6} \text{ राजु}$$

$$\text{उत्तर दक्षिण लंबाई} = 6 \text{ राजु} , \text{ मोटाई} = 20000 \text{ योजन}$$

$$\frac{27}{6} \times 6 \times 20000 = 540000$$

इसको जगत्प्रतिरप्रमाण बनाने के लिए ४९ का भाग देना

$$540000 \div 49 = 10999 \frac{6}{49} \text{ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतिर} \rightarrow \text{तृतीय पृथिवीका धनफल}$$

४) चौथी पृथिवीका धनफल →

$$\text{पूर्वपश्चिम चौडाई} = 4 \text{ राजु} - \frac{3}{6} \text{ राजु} = \frac{27-3}{6} = \frac{24}{6} \text{ राजु}$$

$$\text{उत्तर दक्षिण लंबाई} = 6 \text{ राजु} , \text{ मोटाई} = 28000 \text{ योजन}$$

$$\frac{24}{6} \times 6 \times 28000 \text{ योजन} = 24 \text{ राजुप्रतिर} \times 28000 \text{ योजन} = 672000$$

$$\text{इसे जगत्प्रतिर के लिए ४९ का भाग } 672000 \div 49 = 13714 \frac{14}{49} \text{ योजन बाह्यरूप}$$

जगत्प्रतिर → चौथी पृथिवीका धनफल

५) पांचवी पृथिवीका धनफल →

$$\text{पूर्वपश्चिम चौडाई} = 5 \text{ राजु} - \frac{4}{6} \text{ राजु} = \frac{35-4}{6} = \frac{31}{6} \text{ राजु}$$

$$\text{उत्तर दक्षिण लंबाई} = 6 \text{ राजु} , \text{ मोटाई} = 20000 \text{ योजन}$$

$$\frac{31}{6} \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 20000 \text{ योजन} = 31 \text{ राजुप्रतिर} \times 20000 \text{ योजन} = 620000$$

$$620000 \div 49 = 12653 \frac{17}{49} \text{ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतिर} \rightarrow \text{पांचवी पृथिवीका धनफल}$$

६) छठी पृथिवीका धनफल →

$$\text{पूर्वपश्चिम चौडाई} = 6 \text{ राजु} - \frac{5}{6} \text{ राजु} = \frac{42-5}{6} = \frac{37}{6} \text{ राजु}$$

$$\text{उत्तर दक्षिण लंबाई} = 6 \text{ राजु} , \text{ मोटाई} = 96,000 \text{ योजन}$$

$$\frac{37}{6} \times 6 \times 96000 = 37 \times 96000 = 3552000$$

$$3552000 \div 49 = 72489 \frac{31}{49} \text{ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतिर} \rightarrow \text{छठी पृथिवीका धनफल}$$

9) सातवी पृथिवीका घनफल →

$$\text{पूर्व पश्चिम चौड़ाई} = 6 \text{ राजु} - 6 \text{ राजु} = \frac{48-6}{6} = \frac{43}{6} \text{ राजु}$$

$$\text{उत्तर दक्षिण लंबाई} = 6 \text{ राजु} \quad \text{मोटाई} = 1000 \text{ योजन}$$

$$\frac{43}{6} \times 6 \times 1000 = 43 \times 1000 = 388000$$

$$388000 \div 48 = 6020 \frac{4}{9} \text{ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतर सातवी पृथिवीका घनफल.}$$

आठवी पृथिवीका घनफल

पूर्व पश्चिम 9 राजु, दक्षिणोत्तर = 6 राजु, मोटाई = 1 योजन

$$9 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \times 1 \text{ योजन} = 6 \text{ राजुप्रतर} \times 1 \text{ योजन}$$

जगत्प्रतर करनेके लिए मोटाई में 6 का भाग देना

$$\frac{6}{6} \text{ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतर}$$

9 $\frac{1}{6}$ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतर → आठवी पृथिवीका घनफल

आठो पृथिवियोंके घनफलोंका जोड़ →

$$25698 \frac{2}{6} + 1489 \frac{35}{48} + 10246 \frac{6}{48} + 92288 \frac{56}{48} + 92653 \frac{3}{48} + 92029 \frac{39}{48}$$

$$+ 6020 \frac{4}{48} + 9 \frac{9}{6}$$

$$\frac{25698}{1489} + \frac{2}{6} + \frac{35}{48} + \frac{6}{48} + \frac{48}{48} + \frac{3}{48} + \frac{39}{48} + \frac{4}{48} + \frac{9}{6}$$

$$\frac{10246}{92288} = \frac{98}{48} + \frac{35}{48} + \frac{6}{48} + \frac{48}{48} + \frac{3}{48} + \frac{39}{48} + \frac{4}{48} + \frac{6}{48} = \frac{985}{48} = 3 \frac{2}{48}$$

$$\frac{92653}{92029} \quad \frac{6020}{9} \quad \frac{33}{9} \quad \frac{9}{9}$$

$$19048 + 3 \frac{2}{48} = 19052 \frac{2}{48} \text{ इतने योजन बाह्यरूपमात्र जगत्प्रतर आठ पृथिवी-}$$

योंका घनफल है। तिर्यग्लोकका घनफल 98229 $\frac{2}{48}$ योजन बाह्यरूप जगत्प्रतर है। इससे आठों पृथिवियोंका घनफल कुछ अधिक छह गुणा है।

बादर जलकायिक, बादर नलकायिक अपर्याप्त, बादर तेजस्कायिक और बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव, बादर वायुकायिक, बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव सर्व पृथिवियोंमें रहते हैं।

बादर वनस्पति कायिक प्रत्येक शरीर, उन्हींके अपर्याप्त जीव, बादर निगोद प्रतिष्ठित और उन्हींके अपर्याप्त जीव बादर पृथ्वीकायिक के समान है अर्थात् वे भी सर्व पृथिवियोंमें रहते हैं।

इनके पर्याप्त जीव सर्व पृथिवियोंमें नहीं पाये जाते अपर्याप्त जीव ही सर्व

पाये जाते हैं।

जीवसमास का नाम	अवगाह ना	गुणकारक प्रमाण	जीवसमास का नाम	अवगाह ना	गुणकारक प्रमाण
1 सूक्ष्म निगोद ^{लाब्धि} अपर्याप्त	जघन्य	असंख्यात	30 सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
2 " वायुकायिक "	जघन्य	असंख्यात	31 " " पर्याप्त	"	" "
3 " तैजस्कायिक "	"	असंख्यात	32 बादर वायुकायिक "	जघन्य	असंख्यात
4 " जलकायिक "	"	"	33 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
5 " पृथ्वीकायिक "	"	"	34 " " पर्याप्त	"	" "
6 बादर वायुकायिक "	"	"	35 " तैजस्कायिक "	जघन्य	असंख्यात
7 " तैजस्कायिक "	"	"	36 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
8 " जलकायिक "	"	"	37 " " पर्याप्त	"	" "
9 " पृथ्वीकायिक "	"	"	38 " आकायिक "	जघन्य	असंख्यात
10 " निगोद "	"	"	39 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
11 " निगोद प्रतिष्ठित "	"	"	40 " " पर्याप्त	"	" "
12 " वनस्थिति प्रत्येक "	"	"	41 " पृथ्वीकायिक "	जघन्य	असंख्यात
13 द्वीन्द्रिय अपर्याप्त	"	"	42 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
14 त्रीन्द्रिय "	"	"	43 " " पर्याप्त	"	" "
15 चतुरिन्द्रिय "	"	"	44 " निगोद "	जघन्य	असंख्यात
16 पंचेन्द्रिय "	"	"	45 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
17 सूक्ष्म निगोद निर्वृत्तिपर्याप्त	"	"	46 " " पर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
18 " " निर्वृत्तिपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक	47 निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त	जघन्य	असंख्यात
19 " " पर्याप्त	"	विशेष अधिक	48 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक
20 सूक्ष्म वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्त	जघन्य	असंख्यात	49 " " पर्याप्त	"	" "
21 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक	50 वा. वन. प्रत्येक शरीर पर्याप्त	जघन्य	असंख्यात
22 " " पर्याप्त	उत्कृष्ट	" "			
23 " तैजस्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्त	जघन्य	असंख्यात			
24 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक	51 द्वीन्द्रिय पर्याप्त	जघन्य	असंख्यात
25 " " पर्याप्त	"	" "	52 त्रीन्द्रिय "	"	असंख्यात
26 " आकायिक निर्वृत्तिपर्याप्त	जघन्य	असंख्यात	53 चतुरिन्द्रिय "	"	"
27 " " अपर्याप्त	उत्कृष्ट	विशेष अधिक	54 पंचेन्द्रिय "	"	"
28 " " पर्याप्त	"	" "	55 त्रीन्द्रिय अपर्याप्त	उत्कृष्ट	"
29 सूक्ष्म पृथ्वीकायिक पर्याप्त	जघन्य	असंख्यात	56 चतुरिन्द्रिय "	"	"

जीवसमास का नाम	अवगाहना	गुणकार	जीवसमास का नाम	अवगाहना	गुणकार
पु० द्वीन्द्रिय अपर्याप्त	उत्कृष्ट	संख्यात	ए० चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	उत्कृष्ट	संख्यात
पु० वादर वनस्पति प्रत्येक अपर्याप्त	उत्कृष्ट		ए० द्वीन्द्रिय	"	"
पु० पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	"		ए० वा. वन प्रत्येक पर्याप्त	"	"
ए० त्रीन्द्रिय पर्याप्त	"		ए० पंचेन्द्रिय पर्याप्त	उत्कृष्ट	"

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवा भाग
 सूक्ष्म जीवसे वादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवा भाग
 वादर " सूक्ष्म " " " आवलीका " "
 वादर " अन्य वादर जीवकी " " पल्योपमका " "

प्रतर
 राजुप्रमाण मुखसे और पांच रानु आयामसे स्थित क्षेत्रमें ही प्रायः करके उन वादर
 वायुकायिक पर्याप्त जीवोंकी उत्पत्ति होती है। अन्य क्षेत्रमें जाकर उत्पन्न होनेवाले
 वादर वायुकायिक पर्याप्त जीव बहुत कम होते हैं।

मार्गिका नाम	स्वस्थान-स्वस्थान, वेदना, कषाय	वैक्रियिक	विहारवत्	मारणान्तिक	उपपाद
पापों मनोयोगी पलां क्वनयोगी मिथ्यादृष्टि	उलोक तिर्यग्लोक 'असंख्यात' संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	स्वस्थान स्वस्थान के समान	स्वस्थान स्वस्थानके समान	उलोक तिर्यग्लोक X असंख्यात असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	X
सासादनादि शेष गुणस्थान	ओघ सासादनादि के समान सर्व पद लगाना				X सासादन में असंयोगी नहीं
काययोगी मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	उलोक तिर्यग्लोक असंख्यात संख्यात मनुष्यलोक X असं ख्यात	वैक्रियिक समुद्धात के समान	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादनादि शेष गुणस्थान	ओघ सासादनादि के समान				
औदीर्घिक काययोगी मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	उलोक (असंख्यात) काययोगी के समान मनुष्यलोक X असंख्यात	" काययोगीके समान	सर्वलोक	X
सासादनादि	ओघ सासादनादि के समान				X

मार्गनाका नाम	स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषाय	विहारवत्	वैक्रियिक	भारणान्तिक	उपपाद
औदारिक मिश्र काययोगी मिथ्या दृष्टि	सर्वलोक	X	X	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादन	४ लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात असंख्यात	X	X	X	५ अथवा नहीं है
असंयत	४ लोक, मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात	X	X	X	"
सयोगकेवली कपाट समुदाय	३ लोक, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात, X असंख्यात	X	X	X	X
वैक्रियिक काययोगी मिथ्या दृष्टि	३ लोक, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात, संख्यात, असंख्यात	स्वस्थान स्वस्थान के समान	स्वस्थान के समान	३ लोक, तिर्यग्लोक X असंख्यात, असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	X
सासादनादि उ गुणस्थान	ओघ सासादनादि के समान				
वैक्रियिक मिश्र काययोगी मिथ्या दृष्टि	३ लोक, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात, संख्यात, असंख्यात	X	X	X	
सासादन साम्य असंयत साम्य	४ लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात असंख्यात	X	X	X	
औदारिक काय योगी प्रमतसंयत	४ लोक, मनुष्यलोक, वेदना व असंख्यात, संख्यात कषाय नहीं है	स्वस्थान स्वस्थान वत्	X	४ लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात, असंख्यात	X
औदारिक मिश्र	" "	X	X	X	X
कार्मण काययोगी मिथ्या दृष्टि	सर्वलोक	X	X	X	सर्वलोक
सासादन असंयत	४ लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात असंख्यात	X	X	X	स्वस्थान स्वस्थान वत्
सयोगकेवली प्रतर व लाकपूरण	लोक का असंख्यात बहुभाग, सर्वलोक	X	X	X	X

विशेष बातें -

- 1) बाधक कारकों के अभाव होने से भरपूर स्रोत हुए जीवों के समान अव्यक्त मनोयोग, और वचनयोग मारगान्तिक समुदायगत मूर्च्छित अवस्थामें भी संभव है।
- 2) सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि मनोयोगी और वचनयोगी जीवों के उपपाद पद नहीं होता है।
- 3) समस्त त्रसपर्याक्षराशिके संख्यातके भाग राशिका ही विहार होता है इसलिए औदारिक काययोगमें विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातका भाग है।
- 4) सासादन सम्यग्दृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि औदारिक काययोगी जीवों के उपपाद पद नहीं होता है। प्रमत्तगुणस्थानमें आहारक समुदायतपद भी नहीं है।
- 5) औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण काययोगमें ही उपपाद पद संभव है। अन्य योगोंमें नहीं है।

मार्गिका नाम	स्वस्थाने स्वस्थान, वेदना, कषाय	विहारवत्	वैक्रियिक	मारगान्तिक	उपपाद				
वेदमार्गिका स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि	3 लोक असंख्यात	तिर्यग्लोक संख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात	स्वस्थान के समान	सस्थान के समान	3 लोक असंख्यात	तिर्यग्लोक X असंख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात	मारगान्तिक स्वस्थान के समान
स्त्रीवेदी सासादनसे 5 वे गुणस्थानतक	ओष सासादनादिके समान								
पुरुष मिथ्यादृष्टि	3 लोक असंख्यात	तिर्यग्लोक संख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व-स्वके समान	स्व-स्वके समान	3 लोक असंख्यात	तिर्यग्लोक X असंख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात	मारगान्तिक के समान
सासादनादि 5 वे गुणस्थानतक	ओष सासादनादिके समान								
नपुंसक वेदी मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक		3 लोक असंख्यात	4 लोक असंख्यात	सर्वलोक				
			तिर्यग्लोक संख्यात	मनुष्यलोक X असंख्यात					
			मनुष्यलोक X असंख्यात						
सासादनसे 5 वे गुणस्थानतक	ओष सासादनादिके समान								
अपगतवेदी	4 लोक असंख्यात		मनुष्यलोक संख्यात	4 लोक असंख्यात		X			
			मनुष्यलोक X असंख्यात						

विशेष → असंयत सम्यञ्छि गुणस्थानमें स्त्रीवेदियोंके उपपादपद नहीं होता है।
प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदियोंके लैजससमुद्धात और आहारक -
समुद्धात नहीं होते हैं।

मार्गणाका नाम	स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय	विहारवत्	वैक्रियिक	मारगान्तिक	उपपाद
चारों कषायी मिथ्यावृष्टि	सर्वलोक	3 लोक, तिर्यग्लोक असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	विहारवत् के समान	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादन से अनिष्टितक	ओष सासादनादिक समान				
लोभकप्राय सूक्ष्मसांप्राय	4 लोक, मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात	X	X	उपशानक की अपेक्षा 4 लोक, मनुष्यलोक असंख्यात X असंख्यात	X
ज्ञानमार्गणा मध्यज्ञानी, श्रुता ज्ञानी मिथ्यावृष्टि	सर्वलोक	चारों कषायीके समान	चारों कषायीके समान	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादनसम्य.	4 लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात, संख्यात	स्वस्थानस्वस्थान के समान	स्वस्थानस्वस्थान के समान	स्वस्थानस्वस्थान के समान	स्व. स्व. के समान
विभंगज्ञानी मिथ्या वृष्टि	3 लोक, तिर्यग्लोक असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व. स्वस्थान के समान	स्व. स्वस्थान के समान	3 लोक, तिर्यग्लोक X असंख्यात, असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	X
सासादन	4 लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात, असंख्यात	स्वस्थानस्वस्थान के समान	स्वस्थानस्वस्थान के समान	स्वस्थानस्वस्थान के समान	X
आभिनिबोधिक ज्ञानी, श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी 4 से 12 गुणस्थान	ओष असंयतादि गुणस्थानोंके समान समज्ञाना				
मनःपर्ययज्ञानी 4 से 12 गुणस्थान	ओष प्रमत्तसंयतादिक समान				
केवलज्ञानी सयो अकेवली अयोगकेवली	ओष सयोगकेवलीके समान 4 लोक, मनुष्यलोक X असंख्यात, असंख्यात	X	X	X	X

मार्गशाका नाम	स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषय	विलासवत्	वैक्रियिक	प्राणान्तिक	उपपाद
संयम, ६ से १२ व १४	४ लोक मनुष्य असंख्यात, संख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	४ लोक असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	X
संयोगकेवली	४ लोक लोकका असंख्यात बहुभाग, सर्वलोक				
सामायिक, छेरो पस्थानो ६ से ९	४ लोक मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान))	X
परिवार विशुद्धि ६-७ गुणस्थान)) तेजस व आहारक समुदाय नहीं होता))))	
सूक्ष्मसांपराय	४ लोक मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात	X	X	X	X
यथाख्यात ११ से १४	ओध उपशान्तक प्रायादिके समान				
संयतासंयत	४ लोक असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	X
असंयत मिथ्या दृष्टि	सर्वलोक	ओधके समान	ओधके समान	सर्वलोक	सर्वलोक
सासादन सम्यग्मिथ्या असंयत सम्य.	४ लोक असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान
दर्शनमार्गशा यक्षुदर्शनी मिथ्या दृष्टि	उलोक असंख्यात, तिर्यग्लोक संख्यात, मनुष्यलोक असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	उलोक तिर्यग्लोक X असंख्यात, मनुष्यलोक X)	X
अयक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	ओधवत्	ओधवत्	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान
२ से १२ गुणस्थान	ओध सासादनादिके समान				
अवधिदर्शनी केवलदर्शनी	अवधिदर्शनी के समान				
	४ लोक असंख्यात, लोकका असंख्यात बहुभाग, सर्वलोक	- केवल	समुदायक	क्षेत्र	
लेश्यामार्गशा कृष्ण, नील, कापोत मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	उलोक असंख्यात, तिर्यग्लोक संख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	उलोक असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक

वर्ग/भाग का नाम	स्वस्थान/स्वस्थान, वेदना, कथा	विहारवत्	वैकिकीयक	भारणान्तिक	उपपाद
3 अमृत लेश्या सासादन, संयति मिथ्यादृष्टि असंयत	४ लोक मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान
तेजो लेश्या में मिथ्यादृष्टि	3 लोक तिर्यग्लोक असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	3 लोक तिर्यग्लोक X असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	भारणान्तिक के समान
सासादन से ७ वे गुणस्थान तक	ओद्य सासादनदिके समान				
पद्म लेश्या में मिथ्यादृष्टि	3 लोक तिर्यग्लोक असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	४ लोक असंख्यात मनुष्य X असंख्यात	४ लोक मनुष्यलोक X असंख्यात	भारणान्तिक के समान
सासादन से ७ वे गुणस्थान तक	ओद्य सासादनदिके समान				
शुक्ल लेश्या में मिथ्यादृष्टि	४ लोक मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान
सासादनदिके ओद्य गुणस्थान	ओद्य सासादनदिके समान				
भव्य मार्गण 1 से 98 गुणस्थान	ओद्यके समान				
अभ्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	विहारवत् के समान	सर्वलोक	सर्वलोक
साम्यक्त्व मार्गणा साम्यदृष्टि, क्षयिक साम्यदृष्टि ४ से 98 गुण. क्षयिक संयत/संयत	आ ओद्य असंयत/साम्यदृष्टि आदिके समान मनुष्य संयत/संयतवत्				
वेदक साम्यदृष्टि ४ से ७ गुण.	४ लोक आ ओद्यके समान असंख्यात				
उपशम साम्यक्त्व असंयत/साम्य.	४ लोक मानुषक्षेत्र X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान

मार्गिका नाम	स्वस्थान स्वस्थान, वेदना, कषाय	विलम्बवत्	वैकिकियक	मारणान्तिक	उपपाद
उपशान्त सम्यक्त्व संयत्तासंयत	४ लोक असंख्यात / मानुषक्षेत्र X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	X
शेष गुणस्थान	ओष के समान				
सासादन	४ लोक असंख्यात, मानुषक्षेत्र X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	७	"	"	X	X
मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	ओषसमान	ओषसमान	सर्वलोक	सर्वलोक
संशी मिथ्यादृष्टि	उलोक असंख्यात, तिर्यग्लोक संख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात	स्व.स्व.के समान	स्व.स्व.के समान	उलोक असंख्यात, तिर्यग्लोक X असंख्यात, मानुषक्षेत्र X असंख्यात	मारणान्तिक के समान
सासादनादि शेष ११ गुणस्थान	ओष सासादनादिके समान				
असंज्ञी	सर्वलोक	ओषसमान	ओषसमान	सर्वलोक	सर्वलोक
आहारमार्गिका मिथ्यादृष्टि	७	७	७	७	७
सासादन से संयोगकेवलीत्व	ओष सासादनादिके समान				
आहारक मिथ्यादृष्टि	X X	X	X	X	सर्वलोक
सासादन सम्य.	४ लोक असंख्यात, अर्द्धद्वीप X असंख्यात	X	X	X	४ लोक असंख्यात मनु X असंख्यात
असंयत सम्य.		X	X	X	सासादन वत्
अयोगकेवली	४ लोक असंख्यात, मनुष्यलोक संख्यात	X	X	X	X
संयोगकेवली	लोकका असंख्यात बहुभाग, २ प्रतर सर्वलोक				

विशेष बातें

- परिहारविरुद्धि संयतके तैजससमुद्धात और आहारक समुद्धात ये दो पद नहीं होते।
- निर्वृत्त्यपर्यन्त जीवोंके चक्षुदर्शन होता है क्योंकि अपर्यन्त काल समाप्त होनेके

पश्चात् निश्चयसे चक्षुदर्शनका क्षयोपशम देखा जाता है, किन्तु चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके चक्षुदर्शन नहीं होता है क्योंकि उनमें चक्षुदर्शनावरणकर्मके क्षयोपशमका अभाव है।

- 3) मारणान्तिक समुद्घात और उपपाद पदगत कृष्ण, नील, और कापोतलेश्यावाले असंयत सम्यग्रूपि संख्यात हो करके भी मानुषक्षेत्रसे असंख्यात गुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि उनके मारणान्तिक समुद्घात और उपपाद पदगत दंडका आयाम असंख्यात योनन पाया जाता है।
- 4) मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक सभी गुणस्थानोंमें मारणान्तिक समुद्घात और उपपाद पदोंमें शुक्ललेश्यावाले जीव संख्यात ही होते हैं।

सबसे कम 5) ध्रुवबंधक → अभव्यराशि
 असंख्यात सादिबंधक → सादि मिथ्यादृष्टि आदि 90 गुणस्थानवर्ती (उपशान्तमोहसे नीचे गिरने पर)
 अंख्यात अनादिबंधक → अनादि मिथ्यादृष्टि आदि " (भव्य + अभव्य)
 विशेष अधिक अध्रुवबंधक → सादि अनादि मिथ्यादृष्ट्यादि भव्य जीवही (अभव्य नहीं लेना)
 $(\text{अनादिबंधक} + \text{सादिबंधक}) - \text{ध्रुवबंधक} = \text{अध्रुवबंधक अथवा}$
 $\text{अनादिबंधक} + (\text{सादिबंधक} - \text{ध्रुवबंधक}) = "$

6) असंयत गुणस्थानवर्ती श्वायिक सम्यग्रूपि मारणान्तिक समुद्घात और उपपादमें संख्यात ही होते हैं।

स्पर्शनानुगम

स्पर्शन ६ प्रकारका → नामस्पर्शन, स्थापनास्पर्शन, द्रव्यस्पर्शन, क्षेत्रस्पर्शन, कालस्पर्शन, भावस्पर्शन.

पृ. 982

क्षेत्रके समान द्रव्यस्पर्शन और भावस्पर्शन के भेदप्रभेद जानना। विशेषता यह है → तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यस्पर्शन के तीन भेद किये हैं।

सचित्तद्रव्यस्पर्शन अचित्तद्रव्यस्पर्शन मिश्रद्रव्यस्पर्शन

मिश्रद्रव्य स्पर्शनके चेतन अचेतन स्वरूप वृहों द्रव्योंके संयोगसे ५९ भंग होते हैं। एकसंयोगी, द्विसंयोगी आदि भंग निकालनेका विधान →

जिलनी संख्याओंका संयोग करना हो उन्हें उलटे क्रमसे एक तक रखे इन्हें भाज्यराशि समझना और इनके नीचे सीधे क्रमसे एकादी संक लिखे इन्हें भागहार समझना। एकसंयोगी भंग निकालनेके लिए भाज्यसंख्याओंमें से पहिली संख्याको उसके नीचे जो भागहार है उससे भाग देनेपर जो लब्ध आवेगा वह एकसंयोगी भंगोंका प्रमाण समझना।

द्विसंयोगी भंग निकालनेके लिए उपरकी भाज्यराशिकी प्रथम दो संख्याओंका परस्पर गुणाकार करे और उसके नीचेके भागहारराशिके प्रथम दो संख्याओंका गुणकार करे। भाज्यराशिके गुणकारकी भागहार राशिके गुणनफलसे भाग देनेपर जो प्रमाण आवे वह द्विसंयोगी भंगोंका प्रमाण समझना।

इसीप्रकार त्रिसंयोगी भंगोंके लिए तीन संख्याओंका गुणकार करके भाग देवे चतुःसंयोगी के लिए चार संख्याओंका, पंचसंयोगी के लिए पांच संख्याओंका परस्पर गुणकार करके भाग देना चाहिए। उदा.

असंयोगी होनेसे एकसंयोगी भंगोंको यहां ग्रहण नहीं किये हैं।

यह संख्याओं युक्त वस्तुओंके संयोगी भंग निकालना है तो

$$\frac{6 \times 5 \times 4 \times 3 \times 2 \times 1}{9 \times 2 \times 3 \times 4 \times 5 \times 6} \quad \text{भाज्यराशि} \quad \text{एकसंयोगी} \rightarrow \frac{6}{9} = 6 \text{ भंग (अत्राद्य)}$$

$$\text{द्विसंयोगी भंग} \rightarrow \frac{6 \times 5}{9 \times 2} = \frac{30}{2} = 15 = \text{द्विसंयोगी भंग}$$

$$\text{त्रिसंयोगी भंग} \rightarrow \frac{6 \times 5 \times 4}{9 \times 2 \times 3} = \frac{120}{6} = 20 = \text{त्रिसंयोगी भंग}$$

$$\text{चतुःसंयोगी} \rightarrow \frac{6 \times 5 \times 4 \times 3}{9 \times 2 \times 3 \times 4} = \frac{360}{24} = 15 \quad \text{चतुःसंयोगी}$$

$$\text{पंचसंयोगी} \rightarrow \frac{6 \times 5 \times 4 \times 3 \times 2}{9 \times 2 \times 3 \times 4 \times 5} = \frac{620}{920} = 6 \text{ पंचसंयोगी}$$

$$\text{छह संयोगी} \frac{6 \times 4 \times 4 \times 3 \times 2 \times 1}{9 \times 2 \times 3 \times 4 \times 5 \times 6} = \frac{620}{620} = 1 \text{ छह संयोगी भंग}$$

जीवका जीवके साथ और पुद्गलका पुद्गलके साथ सहस्र संयोगी भंग दो 2 होते हैं, अन्य द्रव्योंका सहस्र भंग नहीं होते।

$$\text{उपर्युक्त भंगोंका जोड़} \quad 95 + 20 + 15 + 6 + 9 + 2 = 147$$

पृ. 988

छह प्रकारके स्पर्शनोंमें से यहांपर जीवद्रव्यसंबंधी क्षेत्रस्पर्शसे प्रयोजन है।

जो भूतकालमें नाना जीवोंने मिलकर जितने क्षेत्रको स्पर्श किया है और वर्तमानमें स्पर्श किया जा रहा है वह स्पर्श है।

चौदह भागिगास्थानोंका आश्रय लेकरके सभी गुणस्थानोंके अतीत कालविशेष क्षेत्रको स्पर्श कहा गया है।

पृ. 988

लोकको मध्यसे विभक्त करनेपर अधोलोक और ऊर्ध्वलोक ऐसे दो भाग हो जाते हैं।

$$\begin{aligned} \text{अधोलोकका घनफल} &= \frac{\text{मुख} + \text{भूमि}}{2} \times \text{लंबाई} \times \text{चौड़ाई} = \frac{9+6}{2} \times 6 \text{ राजु} \times 6 \text{ राजु} \\ &= \frac{15}{2} \times 6 \times 6 = 8 \times 6 \times 6 = 8 \times 89 = 198 \text{ राजु अधोलोकका घनफल} \end{aligned}$$

$$\begin{aligned} \text{ऊर्ध्वलोकका घनफल} &= \frac{9+4}{2} \times 6 \times 6 = \frac{13}{2} \times 6 \times 6 = 3 \times 6 \times 6 \\ &= 3 \times 89 = 980 \text{ राजु ऊर्ध्वलोकका घनफल} \end{aligned}$$

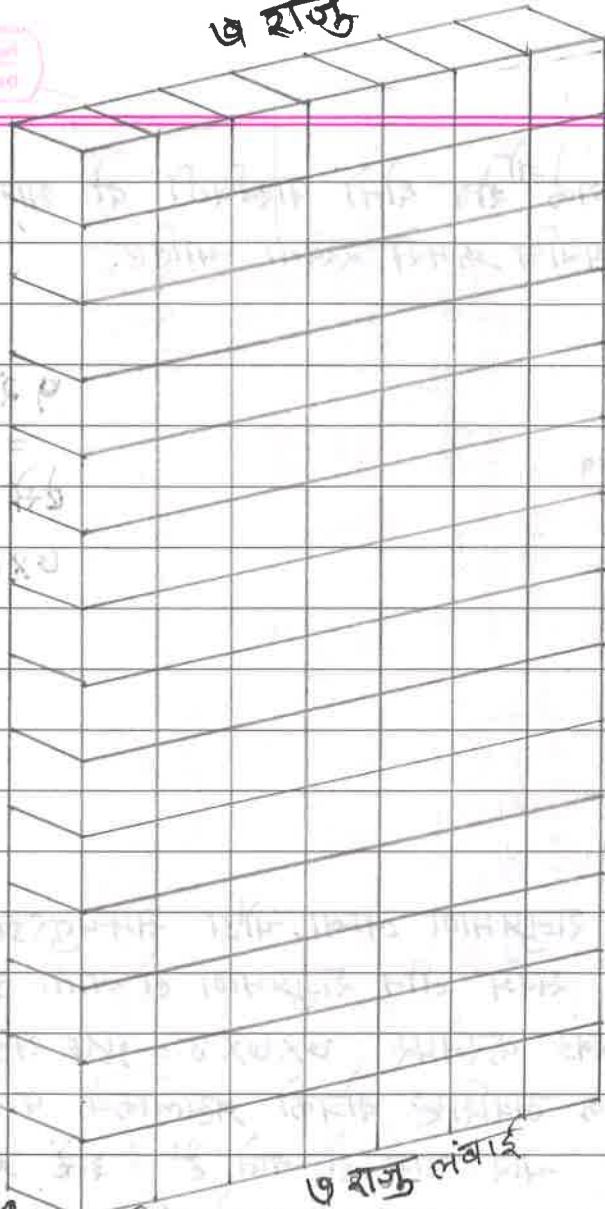
$$\begin{aligned} \text{अधोलोकका घनफल} + \text{ऊर्ध्वलोकका घनफल} &= \text{सर्वलोकका घनफल} \\ 980 + 980 &= 383 \text{ सर्वलोकका घनफल} \end{aligned}$$

दूसरे प्रकारसे लोकका घनफल निकालते हैं —

संपूर्ण लोकके बीचमें त्रिसतली एक राजु चौड़ी है उसके आगे पीछे इसके समान ही जितना क्षेत्र है उसको अलग निकालना एक राजु पूर्वपश्चिम चौड़ा, उत्तरदक्षिण 6 राजु लंबा, ऊपर नीचे चौदह राजु लंबा यह क्षेत्र है।

इस क्षेत्रके लंबाई की अपेक्षा 98 खंड करना और ^(मोटाई) विष्कंभ की अपेक्षा 6 खंड करना। ऐसा करनेपर उक्त क्षेत्रके एक राजुप्रमाण लंबे, चौड़े और मोटे घनात्मक खंड $98 \times 6 = 588$ होते हैं।

७ राजु



98 राजु
ऊंचाई

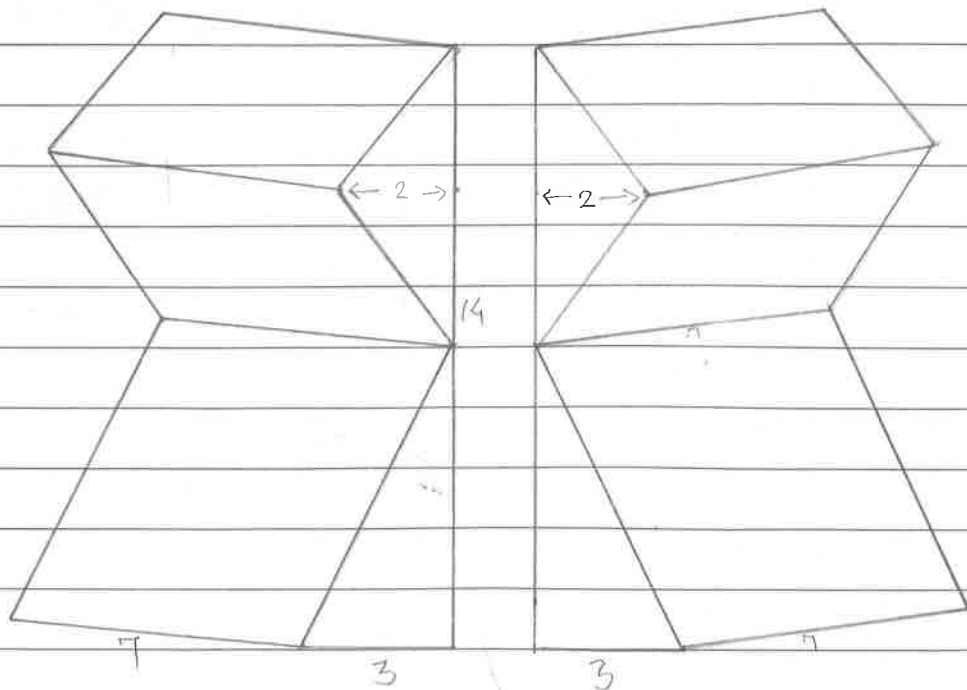
7 राजु लंबाई

9 राजु मोटाई

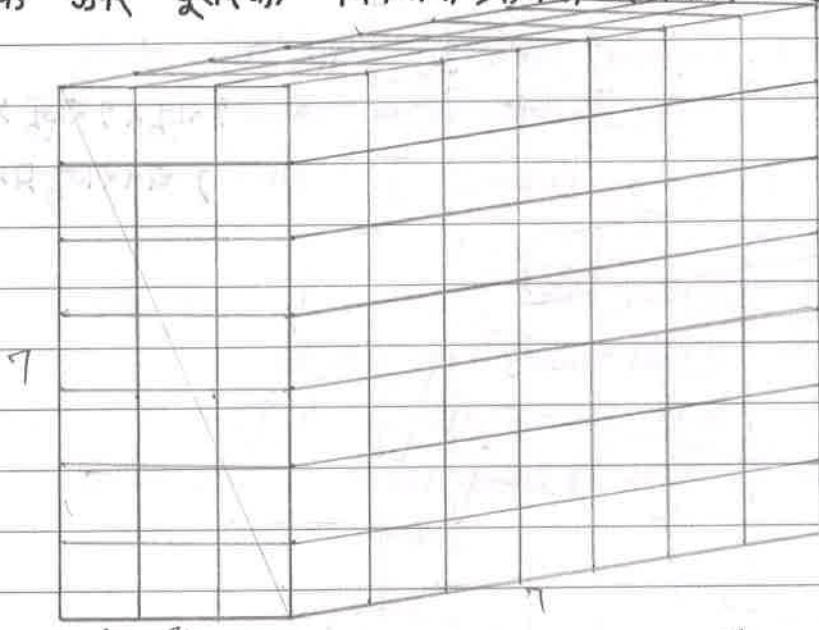
$$9 \text{ राजु} \times 9 \text{ राजु} \times 9 \text{ राजु} =$$

$$9 \text{ घनराजु प्रमाण } 81 \text{ चौकोर}$$

लोकप्रमाणमसे इस क्षेत्रके अनिरीकत अवक्षेप वचा हुआ क्षेत्र →

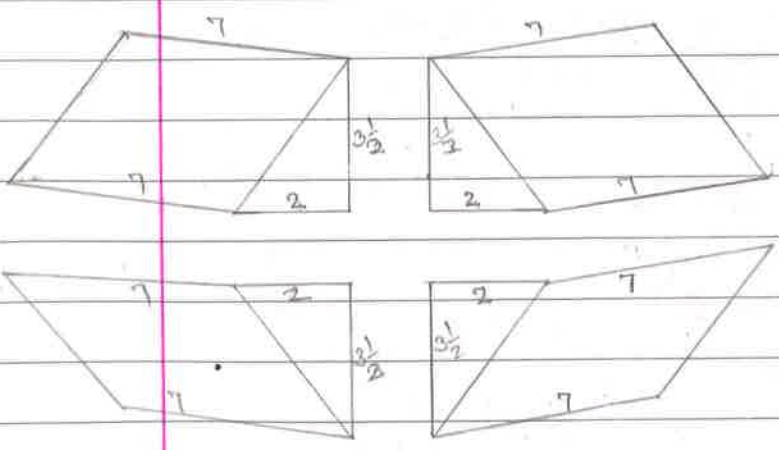


मध्यलोकसे नीचे अधोलोकके जो दोष दोनों पार्श्ववर्ती दो भाग हैं उन्हें एकके ऊपर दूसरेको विपर्यास क्रमसे रखना चाहिए



$9 \text{ राजु} \times \text{एक राजु} \times \text{एक राजु}$
 $= 9 \text{ घनराजु}$
 ऐसे 986 खंड
 $7 \times 7 \times 3 = 986$

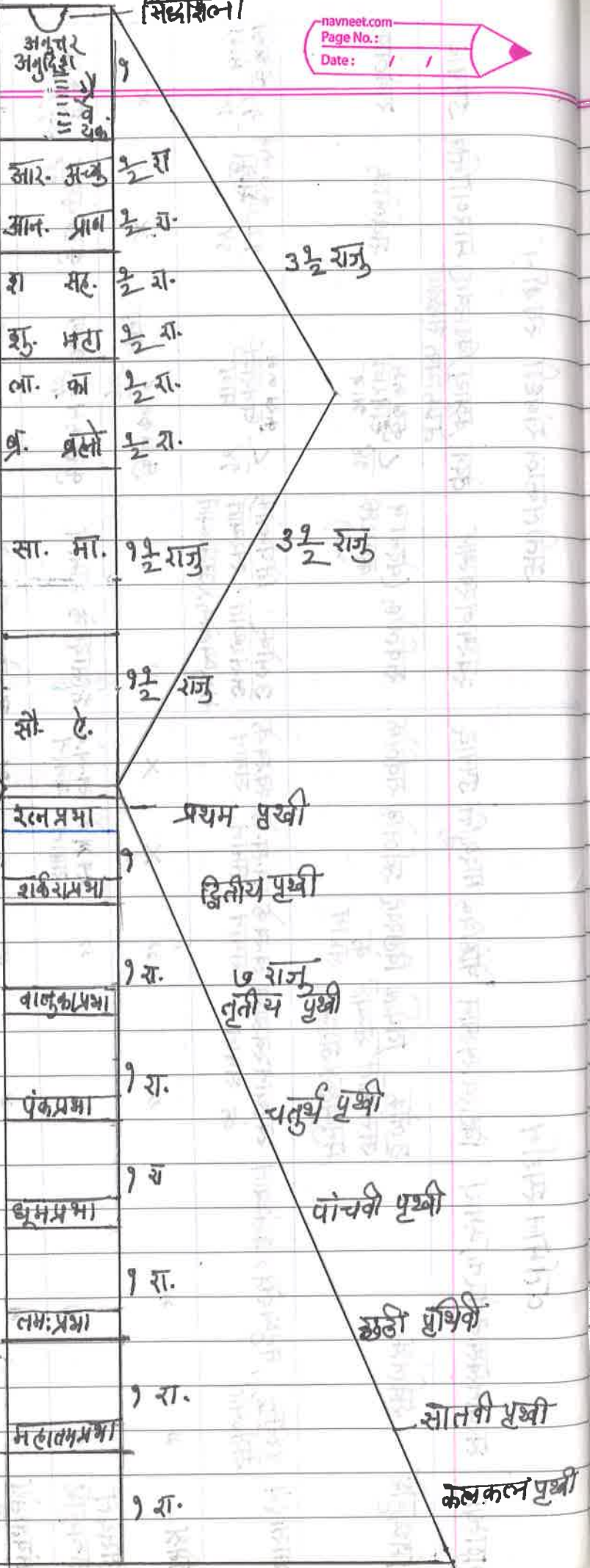
ऐसा करनेपर वह सात राजुप्रमाण लम्बा, चौड़ा समचतुरस्र क्षेत्र बन जाता है जिसकी कि मोटाई सर्वत्र तीन राजुप्रमाण हो जाती है। इसके भी एक एक घनराजुप्रमाण खंड करनेपर $7 \times 7 \times 3 = 986$ खंड होते हैं। इसी प्रकारसे ऊर्ध्वलोकके अवशिष्ट क्षेत्रको ब्रह्मलोकके पाससे छिन्न कर देनेपर समान मापवाले चार भाग हो जाते हैं। इन्हें क्रमशः विपर्यास क्रमसे स्थापित करनेपर सात राजु लम्बे, साढ़े तीन राजु चौड़े और दो राजु मोटे ऐसे दो आयत चतुस्र क्षेत्र हो जाते हैं।



वर्तमान स्थिति

अतीतकाल संबन्धी स्थिति

गुणस्थान	स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कपाय	विहार स्वस्थान	वैकृतिक	मारणात्मिक	उपपाद	स्वस्थान स्वस्थान	स्वस्थान स्वस्थान	वेदना, कपाय, विहार स्वस्थान	भारगान्तिक	उपपाद
मिथ्यादृष्टि	सर्वलोक	उ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	विहार स्वस्थान के समान	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक (वेदना व कपाय का भी)	वेदना, कपाय, विहार स्वस्थान के वैकृतिक समुहगत	सर्वलोक	सर्वलोक	सर्वलोक
आसादन	४ लोक, मनुष्य क्षेत्र X असंख्यात	स्वस्थान स्वस्थान के समान	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	उ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	उ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	८ कुछ कम १४ भाग	१२ कुछ कम १४	११ कुछ कम १० भाग
मित्र	"	"	"	X	X	"	"	कुछ कम ८ भाग	X	X
असत्य सत्यदृष्टि	"	"	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	आसादन के समान	आसादन के समान	कुछ कम ८ भाग	कुछ कम ८	६ कुछ कम १४
संयतासंयत	"	"	"	"	"	"	"	स्वस्थान स्वस्थान के समान	कुछ कम ६	X
प्रमत्त संयत	४ लोक, मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	उ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	उ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	स्वस्थान स्वस्थान के समान	कुछ कम ६	X
दोष गुण	यथायोग्य पद प्रमत्त संयत के	समान लगाना	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	स्व. स्व. के समान	४ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	४ लोक, तिर्यग्लो असंख्यात, संख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	आहार, लेजस, स्वस्थान स्वस्थान के समान	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात	४ लोक असंख्यात मनुष्यलोक X असंख्यात
अयोग्य कवली	स्वस्थान स्वस्थान ४ लोक, मनुष्यलोक असंख्यात, संख्यात	स्वस्थान स्वस्थान के समान	कपाट समुह ४ लोक असंख्यात, तिर्यग्लो असंख्यात, मनुष्यलोक X असंख्यात, असंख्यात	दोष समुह प्रतर ४ लोक असंख्यात, असंख्यात, वहुभाग लोकपूरण	वर्तमान स्थिति के समान सर्व पद लगाना कपाट को छोड़ कर	कपाट समुहगत	४ पु लाख योजन मोटा जगप्रतर समुप विर कपाट	९० लाख योजन मोटा जगप्रतर स्थिरलोक X स्वस्थान		



पृ. 984

विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिक समुद्रागत मिथ्यादृष्टि जीवों ने अतीतकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ वटे चोदह भाग क्षेत्र स्पर्श किया है।

त्रसनाली चोदह राजु लंबी, एक राजु चौड़ी और मोटी है। उसमें चोदह खंड करना। उसमें से आठ खंडप्रमाण स्पर्श लेना है।

भवनविक्रिक देव और 72 वे स्वर्गतक के देव विहार करके नीचे तीसरी पृथ्वी तक गमन करते हैं और ऊपर 76 वे स्वर्गतक गमन करते हैं।

अतः तीसरी पृथ्वी तक 2 राजु और ऊपर 76 वे स्वर्गतक के राजु इस प्रकार 7 घनराजुओं में उनका गमनागमन पाया जाता है इस प्रकार लिए 76 विहारवत् स्पर्श बन जाता है वहां जम्कर विक्रिया करते हैं इसलिए वैक्रियिक समुद्रागत भी 76 स्पर्श बन जाता है।

पृथ्वीके नीचेके एक हजार योजनों में गमन नहीं होता है इसलिए 7 राजुओं में इस एक हजार योजन कम करनेसे कुछ कम ऐसा कहा है। आगे सर्वत्र कुछ कमका कारण ऐसा विज्ञानना।

पृ. 985

शासादन सम्यग्दृष्टियोंके अतीत कालमें स्वस्थान स्वस्थान की अपेक्षा ^{उलोक असंख्यात} तिर्यग्लोक मनुष्यलोक X असंख्यात स्पर्श ^{स्पर्श} त्रसजीव त्रसनालीके भीतर ही होते हैं।

राजुप्रतरके भीतर सर्वत्र शासादन सम्यग्दृष्टि जीव संभव हैं। केवल मानुषोत्तर और स्वयंप्रभ पर्वतके मध्यवर्ती असंख्यात समुद्रोंमें शासादन सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं। इस क्षेत्रको तिर्यग्लोकके प्रमाणसे करनेपर =

$$\left(\frac{\text{राजुप्रतर} - \text{जगत्प्रतर}}{\text{संख्यात}} \right) \times \text{संख्यात अंगुल} = \text{संख्यात अंगुल बहल्यप्रमाण जगत्प्रतर}$$

यह प्रमाण तिर्यग्लोकका संख्यातवा भाग होता है।

शासादन सम्यग्दृष्टि ज्योतिषी देवोंके स्वस्थान स्वस्थान क्षेत्र -

	चन्द्र	सूर्य		चन्द्र	सूर्य
जम्बूद्वीप	2	2	पुष्करार्ध	प्रथम वलय	988
लवणसमुद्र	8	8	"	द्वितीय वलय	984
धालकी खंड	92	92	"	तृतीय वलय	952
कालोदक समुद्र	82	82	"	चवथा वलय	958
पुष्करार्ध द्वीप	62	62	"	पांचवा "	980
मानुषोत्तर पर्वतसे परे पुष्करार्ध			"	छठा "	984
द्वीपमें आठ वलय हैं।			"	सातवा "	984
			"	आठवा "	962

इससे आगे पुष्कर समुद्र में 98 वलय हैं। उसके प्रथम वलय में पुष्करार्थी द्वीपके दुगुणे अर्थात् $98 \times 2 = 224$ चन्द्र और सूर्य होते हैं। इससे आगे प्रत्येक वलय पर चार-चार चन्द्र और सूर्य की संख्या बढ़ाते जाना चाहिए। पुनः आगेके द्वीप में 32 वलय हैं। उनमें से प्रथम वलय में दुगुणे $224 \times 2 = 448$ चन्द्र और सूर्य होते हैं। आगेके प्रत्येक वलय पर चार-चार चन्द्र और सूर्य बढ़ाते जाना चाहिए। इस प्रकारसे स्वयंभूरमण समुद्र तक चन्द्र और सूर्य की संख्या बढ़ाते हुए ले जाना चाहिए।

एक चन्द्रका परिवार → चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा
 $9 \quad 9 \quad 22 \quad 22 \quad 6656400000000000000$

तिर्यग्लोक में अवस्थित सपरिवार सकल्प चन्द्रोंके प्रमाणको निकालनेका विधान → तृतीय समुद्रको आदि करके स्वयंभूरमण समुद्र तक विमानोंकी संख्या निकालनेकी प्रक्रिया →

समुद्र और द्वीपोंका व्यास जितने लाखप्रमाण है उतने वलयपर वलय जानना जो वलयोंका प्रमाण है वही वहां गच्छका प्रमाण जानना।

- तीसरे समुद्र → गच्छ 32
- चतुर्थ द्वीप → " 64
- चतुर्थ समुद्र → " 924

इसप्रकार स्वयंभूरमण समुद्रतक दूना दूना प्रमाण हैं। प्रथम वलयमें जो चन्द्रविमानोंकी संख्या है वह वहांपर गुण्यमान राशि है। उत्तरोत्तर द्वीप और समुद्रमें चन्द्रकी संख्या प्रथम वलयमें दूनी दूनी है। दूसरे आदि वलयमें चार-चार की वृद्धि होती है।

- अतः पुष्कर समुद्र में - गुण्यमान राशि → 224
- द्विथे द्वीप में " " 448
- चवथे समुद्र में " " 912
- पाचवे द्वीप में " " 1824
- " समुद्र में " " 3648

सब राशियोंको 224 से अपवर्तित कर जो प्रमाण आवे उससे अपने अपने गच्छोंको गुणित करके 224 को ही सर्व गच्छोंकी गुण्यमानराशि करना चाहिए।

$$\frac{224}{224} = 9 \quad \text{गच्छ } 32 \times 9 = 32 = 224 \times 32 = 9296 \quad \text{आदिषुन}$$

$$448 \div 224 = 2 \quad \text{गच्छ } 64 \times 2 = 128 = 224 \times 128 = 3648 \quad "$$

$$912 \div 224 = 4 \quad \text{गच्छ } 128 \times 4 = 512 = 224 \times 512 = 1464.5E \quad "$$

$$1824 \div 224 = 8 \quad \text{गच्छ } 256 \times 8 = 2048 = 224 \times 2048 = 458728 \quad "$$

ऐसा करने पर सर्व गच्छ परस्परकी अपेक्षासे चतुर्गुण क्रमसे हो जाते हैं।
प्रथम गच्छ 32 से द्वितीय गच्छ 924 चौगुणा हो गया है।

इस प्रकार सब द्वीप समुद्रोंका आदिधन आता है।

उत्तरधन निकालनेका विधान -

गच्छका प्रमाण = पूर्व गच्छ - 9, क्योंकि पहले वलयमें चार वृद्धिका अप्राव हैं।
तृतीय समुद्रमें गच्छ = $32 - 9 = 23$, चौथे द्वीपमें $23 - 9 = 14$

मध्यमधन x गच्छ = उत्तरधन

गच्छकी मध्यसंख्यापर जो वृद्धिका प्रमाण आता है, उसे मध्यमधन कहते हैं।

तृतीय समुद्रमें गच्छका प्रमाण 23 हैं, उनमें सोलहवा स्थान मध्यम रहता है

और उसकी वृद्धिका प्रमाण 16 होता है। $23 \times 16 = 368$

इसीप्रकार आगेके द्वीपका गच्छ $14 - 9 = 5$ होता है उनमें 32 वा स्थान

मध्यम होता है और उसकी वृद्धिका प्रमाण $32 \times 16 = 512$ होता है।

इस प्रकार आगे आगेके द्वीप और समुद्रोंका मध्यमधन दुगुण प्रमाणसे बढ़ता

जाता है।

चौंसठ रूपसे मध्यम धनोंको अपवर्तित कर लब्धराशिसे अपने अपने

गच्छोंको गुणा करके चौंसठ संख्याको सर्व गच्छोंकी गुण्यमान राशिरूपसे

स्थापित करना चाहिए।

तृतीय समुद्र उत्तरधन = $\frac{\text{गच्छ} \times \text{गुण्यमान}}{\text{गच्छ}} = 16 \times 23 \times 16 = 5952$ उत्तरधन

चौथा द्वीप " " = $\frac{512}{16} = 32 \times 14 \times 16 = 7168$

" समुद्र " " = $\frac{256}{16} = 16 \times 5 \times 16 = 1280$ उत्तरधन

तृतीय समुद्र सर्वधन = आदिधन + उत्तरधन = $924 + 5952 = 6876$

चौथा द्वीप " " = " + " = $7168 + 1280 = 8448$

चौथा समुद्र " " = " + " = $8448 + 1280 = 9728$

इसी क्रमसे आगेके प्रत्येक द्वीप और समुद्रका स्वयंभूरमण समुद्र तक

सर्वधन निकालते जाना चाहिए।

सब द्वीप समुद्रोंका संकलन धन निकालनेकी विधि ->

यहांपर गच्छका प्रमाण हरजूके अर्धच्छेद - (जम्बू द्वीपके अर्धच्छेद + 6 +

संख्यात)

एक राजु x एक राजु प्रमाण मध्यलोक में प्रसजिव रहते हैं। यहांपर तीसरे समुद्र

से लेकर स्वयंभूरमण समुद्रतक के द्वीप समुद्रोंका संकलन धन करवा है।

राजुके जितने अर्धच्छेद हैं उनमें एक अधिक जम्बू द्वीपके अर्धच्छेदोंको कम

करनेपर जो प्रमाण शेष रहता है उतने द्वीप समुद्र होते हैं ऐसा परिकर्मसूत्र में बताया है। किन्तु वीरसेन आचार्य की के मतसे राजुके अर्धच्छेदों में जब द्वीपके अर्धच्छेदोंके साथ संख्यात अर्धच्छेद और कम करने चाहिये तो द्वीप समुद्रकी संख्या आती है। उनके विचारसे द्वीप समुद्र समाप्त होनेपर राजु समाप्त नहीं होता है। द्वीप समुद्रके बाहर द्वीप समुद्रोंसे संख्यात गुणा स्थान जानेपर राजु समाप्त होता है। उतना स्थान द्वीपसमुद्रोंसे शेष शाली पृथ्वीरूप है। अतः राजुके अर्धच्छेदोंमें संख्यात अर्धच्छेद कम करने चाहिये क्योंकि द्वीपसागर समाप्त होनेपर पश्चात् ज्योतिषियोंके विमान नहीं हैं। राजुके अर्धच्छेद करते जानेपर प्रथम अर्धच्छेद द्वीपमें पडता है। उसके बाद संख्यात अर्धच्छेद स्वयंभूरमठा समुद्रके बाहर पडेंगे फिर उसके बाद स्वयंभूरमठा समुद्रमें एक अर्धच्छेद पडेगा, तदनन्तर स्वयंभूरमठा द्वीपमें एक अर्धच्छेद, इसप्रकार प्रत्येक द्वीप समुद्रमें एक एक अर्धच्छेद पडते हैं और लवणसमुद्रमें दो अर्धच्छेद पडते हैं। शेष एक लाख योजन शेष रहता है। लवणसमुद्रमें दो अर्धच्छेद हैं उसमें से एक जब द्वीपका समझना। शेष एक लाखके जितने अर्धच्छेद हैं उतने द्वीप समुद्र नहीं हैं। इसलिए राजुके अर्धच्छेदोंमें से एक लाख योजनके अर्धच्छेद, संख्यात अर्धच्छेद कम किये। यहांपर प्रथम 3 द्वीप और 2 समुद्र नहीं किये हैं इसलिए ये पांच और जब द्वीपमें प्रथम अर्धच्छेद गिरा वह एक कुल मिलाकर 6 अर्धच्छेद और कम किये इसप्रकार तीसरे समुद्रसे स्वयंभूरमठा समुद्रतक द्वीप समुद्रोंकी संख्या ही शेषका प्रमाण है।

गुणाकाररूप संख्याओंका संकलन करनेका सूत्र →

$$\frac{\text{गुणाकार}^{\text{पद}} - 9 \times \text{आदि}}{\text{गुणाकार} - 9} = \text{संकलनधन}$$

शेषका विरहमन करके शेषप्रमाण गुणाकारोंको रखकर परस्पर गुणा करनेपर जो लब्ध आता है उसमें से एक कम करना और उसे मुखसे गुणा करना और एक कम गुणाकारसे भाग देनेपर संकलन धन आता है। यहांपर प्रथम संकलन करने के लिए एकसे दुसरी संख्या गुणित नहीं है। चूंकि गुणे से कुछ अधिक है। अतः इसमें 64 से लेकर चारगुणित संख्या मिलाना और 64 से लेकर द्विगुणित संख्या कम करनेपर संकलन धन आता है। इसलिए यहांपर तीन प्रकारका संकलन धन निकाला है

प्रथम संकलन आदिधन से चतुर्गुणित संख्या लेकर संकलन निकालना।
दूसरा संकलन ६४ से लेकर उससे चतुर्गुणित संख्या मिलाई है
उसका संकलन है।

तीसरे संकलन में उपर्युक्त संकलन में ६४ से लेकर द्विगुणा राशि
श्रुंश्रांश्री है उसका संकलन करना।

उपर्युक्त संकलन सूत्रके अनुसार ३ द्वीप समुद्रों का ^{उदाहरणरूपसे} संकलन निकालना है

गच्छ - ३, आदिधन ११२००, गुणकारका प्रमाण ४,
प्रथम संकलन

$$\text{सूत्र} \rightarrow \frac{(\text{गुणकार}^{\text{पद}} - १) \times \text{धुस}}{\text{गुणकार} - १} = \text{संकलनधन}$$

$$\frac{(४^३ - १) \times ११२००}{४ - १} = \frac{४ \times ४ \times ४ - १}{३} \times ११२००$$

$$= \frac{६३ \times ११२००}{३} = २१ \times ११२०० = २३५२००$$

$$\text{द्वितीय संकलन} \rightarrow \frac{(४^३ - १) \times ६४}{४ - १} = \frac{६४ - १}{३} \times ६४ = \frac{६३ \times ६४}{३} = २१ \times ६४ = १३४४$$

$$\text{तृतीय संकलन} \rightarrow \frac{(२^३ - १) \times ६४}{२ - १} = २ \times २ \times २ = \frac{(८ - १) \times ६४}{१} = ७ \times ६४ = ४४८$$

(प्रथम संकलन + द्वितीय संकलन) - तृतीय संकलन

$$(२३५२०० + १३४४) - ४४८$$

$$२३६५४४ - ४४८ = २३६०९६ \quad \text{तीसरा समुद्र, चौथा द्वीप और चौथे समुद्र के चन्द्र विमानों की संख्या।}$$

यही प्रमाण तीन का ^{पृथक् पृथक्} पहले निकाले हुए चंद्रो की संख्याके योगसे होता है

$$११२०० + ४४९२८ + १७९९६ = २३६०९६$$

इसी प्रकार ^{पुसेच्यून} सिब द्वीप समुद्रों को गच्छ बनाकर संकलन निम लानेपर पांच द्वीप समुद्रोंको छोडकर सब द्वीप समुद्रों के चन्द्रविमानोंका प्रमाण निकलता है।
उसमें पांच द्वीप समुद्रोंके चंद्रो की संख्याको $२ + ४ + १२ + ४२ + ७२ = १३२$
जोडनेपर समस्त चन्द्रविंशोंका प्रमाण निकलता है।

सब चन्द्रपरिवार में बताये गये ^{चन्द्र} सूर्य, अह, नक्षत्र, और ताराओंके प्रमाणको

चन्द्रबिम्बकी शलाकाओं से गुणा कर देनेपर समस्त ज्योतिषी देवों के विमानों का प्रमाण आता है। यह प्रमाण $\frac{\text{जगत्प्रतर}}{54438 \times \text{प्रतरांगुल}}$ आता है। एक एक विमान में संख्यात ज्योतिष्क देव निवास करते हैं। अतः विमानों की संख्याको संख्यात से गुणा करनेपर ज्योतिष्क देवों की राशि ले जाती है। विमानसंख्याको

ज्योतिष्क विमान संख्या \times संख्यात = ज्योतिष्क देवराशि

" " " \times संख्यात घनांगुल = ज्योतिष्क विमानों का स्वस्थान क्षेत्र

ज्योतिष्क देव शरीरोत्सेध \times विमानों के भीतरी प्रतरांगुल = ज्योतिष्क देवों का स्वस्थान क्षेत्र

यह स्वस्थान क्षेत्र तिर्यग्लोक का संख्यातवा भाग है। क्योंकि तिर्यग्लोक

$\frac{900000}{6}$ बाल्यरूप जगत्प्रतर प्रमाण होता है।

देवों के शरीरके उत्सेधसे गुणित विमानों के भीतरी प्रतरांगुल उत्सेधांगुलरूप हैं उनके प्रमाणांगुल करना चाहिए।

यदि उन प्रतरांगुलोंको उत्सेधांगुल न माना जाय तो जम्बूद्वीपके भीतर जम्बूद्वीपस्थ तारागणोंके रहनेको अवकाश न मिल सकेगा।

जम्बूद्वीपसंबंधी दो चन्द्र परिवारमें तारोंकी संख्या = $6896500000000000000 \times 2 =$

93395000000000000000 एक लाख तैतीस हजार नौ सौ पचास कोडाकोडी हैं।

एक तारेका जघन्य विष्कंभ $\frac{1}{3}$ कोश और उत्कृष्ट विष्कंभ $\frac{1}{9}$ कोश

उत्सेध विष्कंभसे आधा $\frac{1}{2}$ आकार उत्तान गोलार्ध सदृश

मध्यम विष्कंभ $\frac{2}{3}$ कोश लेकर एक तारेका स्थूल घनफल =

$$\text{व्यास} \times 3 \times \frac{\text{व्यास}}{2} \times \text{उंचाई}$$

$$\frac{2}{3} \times 3 \times \frac{2}{9} \times \frac{2}{9} = \frac{2}{27}$$

जम्बूद्वीपके समस्त तारोंका घनफल = $93395 \times 10^{14} \times \frac{2}{27} = 6922$ कोडाकोडी

तारागण पृथिवीसे 690 योजन ऊपरसे लगाकर 900 योजन तक 990 योजन

बाल्य आकाशमें रहते हैं।

एक लाख योजन व्यास, 990 योजन उंचाई, इसका कोशमें रूपांतर

करनेपर एक योजन = 8 कोश आतः $900000 \times 8 = 8000000$ कोश व्यास

$990 \times 8 = 880$ कोश उंचाई

घनफल = व्यास $\times 3 \times \frac{\text{व्यास}}{2} \times \text{उंचाई} =$

$$8000000 \times 3 \times \frac{8000000}{2} \times 880 = 920000000 \times 9000000 \times 880 =$$

$92 \times 90^{99} \times 44 = 42 \times 90^{99}$ धनकोश हुआ।
इस प्रकार तारों के धनफल में 92 अंक हैं, किन्तु उक्त क्षेत्र 98 अंकप्रमाण है। यदि तारों में उल्लेधांगुलों का प्रमाण और क्षेत्र में प्रमाणांगुलों का प्रमाण स्वीकार किया जाय तो उतने क्षेत्र में तारे समा सकते हैं।

$$42 \times 400^3 \times 90^{99} = 42 \times 4 \times 90^{99} = 28 \times 90^{99}$$

$$42 \times 400 \times 400 \times 400 \times 90^{99} = 42 \times 124 \times 90^{96} = 28 \times 90^{96} = 28 \times 90^{26}$$

अर्थात् 22 अंकप्रमाण हो जाता है।

पृ. 982 सासादन साम्यदृष्टि व्यन्तर देवों का स्वस्थानक्षेत्र भी तिर्यग्लोक का संख्यातवा भागमात्र होता है।

सासादन साम्यदृष्टि तिर्यच स्वस्थानक्षेत्र + ज्योतिष्क स्वस्थानक्षेत्र + व्यन्तर देवों का स्वस्थानक्षेत्र = तिर्यग्लोक = संख्यात

विहारवस्वस्थान, वेदना समुद्धात, कषायसमुद्धात और बैक्रियिक समुद्धातगत सासादन साम्यदृष्टि स्पर्शनि $\frac{कुछ कम}{78}$ भ्रमण राजु मिथ्यादृष्टि के समान विश्लेषण जानना।

सासादन साम्यदृष्टि मारणान्तिक समुद्धात स्पर्शनिक्षेत्र $\frac{कुछ कम}{78}$ राजु कोई सासादन साम्यदृष्टि देव अथवा तिर्यच मरण करके ईषत्प्राग्भार पृथिवी में अथवा वातवलय में जलकायिक जीवों में उत्पन्न होनेवाले हैं तो वे सासादन गुणस्थानवर्ती सुमेरुपर्वत के मूलभाग से उपर ईषत्प्राग्भार पृथिवी तक $\frac{अथवा वातवलय पर्यंत}{78}$ सात राजु पर्यंत मारणान्तिक समुद्धात करते हैं इसलिए उपर सात राजु स्पर्शनि होता है।

छोटी पृथिवी तक के नारकी सासादन साम्यदृष्टि, तिर्यचों में मारणान्तिक समुद्धात करते हैं उसकी अपेक्षा नीचे छोटी पृथिवी तक $\frac{78}{78}$ स्पर्शनि संभव है। सासादन गुणस्थानवर्ती तिर्यच मनुष्य $\frac{मरण कर}{78}$ नरक में उत्पन्न नहीं होते और वहां मारणान्तिक समुद्धात भी नहीं करते। इसलिए उपर से नीचे पांच राजु न लेकर नीचे से उपर मारणान्तिक समुद्धात करते हैं उस अपेक्षा पांच राजु लेना। स्पर्शनि नाना जीवों की अपेक्षा घटित होता है और तीनों कालों में मिलकर घटित करना है।

सासादन गुणस्थान $\frac{वर्ती नाना जीवों के}{78}$ भूतकाल में $\frac{जहां जहां स्पर्शनि किया है}{78}$ वर्तमान काल में $\frac{जहां जहां स्पर्शनि कर रहे हैं}{78}$ और आगे $\frac{जहां जहां स्पर्शनि करेंगे वही संपूर्ण क्षेत्र स्पर्शनि कहलाता है।}{78}$

सासादन गुणस्थानवर्ती लोकनालीके भीतर ही मारणान्तिक समुद्धात करते है और भवनवासी लोकके मूलभागेसे ऊपर ही देव या तिर्यच सासादन सम्यवृष्टि जीव मारणान्तिक समुद्धात करते हैं उससे नीचे नहीं। सासादन सम्यवृष्टि तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंमें मारणान्तिक समुद्धात नहीं करते। पृथिवीके परिणामनस्वरूप विमान, इन्ध्या, शिला, स्तम्भ, स्थूल, तलभाग खडी हुई बालभंजिका (पुतली), मिति और तोरणादिक उनकी उत्पतिके योग्य देसे जाते हैं।

सासादन सम्यवृष्टि उपपादगत स्पर्शन \rightarrow $\frac{99}{2}$ राजु = नीचे 49 + ऊपर 50
 मरुतलसे नीचे छठी पृथिवी तक 49 राजु और ऊपर आरण अच्युत कल्पक छह राजु, आयाम और विस्तार एक राजु छठे नरक तक के नारकी मरणकर तिर्यचोंमें सासादन गुणस्थान सहित उत्पन्न होते हैं उस अपेक्षा नीचे 49 राजु और सासादन गुणस्थान सहित मनुष्य तिर्यच मरण कर बारहवे स्वर्गतक उत्पन्न होते हैं और बारहवे स्वर्गतक के देव मरणकर तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हैं। क इसलिये ऊपर 49 राजु ही होते हैं किन्तु बारहवे स्वर्गतक के देव विहार करते हुए सोलहवे स्वर्गमें जानेपर वहां उनका मरण हुआ तो सोलहवे स्वर्गसे ही उनका उपपाद प्रारंभ हुआ इसलिये गौरुपर्वत के मूलसे सोलहवे स्वर्गतक छह राजु स्पर्शन संभव है।

असंघत सम्यवृष्टि मारणान्तिक समुद्धात स्पर्शन \rightarrow 7 घनराजु नीचे 2 + ऊपर छह पूर्वके समाप्त
 " " " उपपादगत स्पर्शन \rightarrow 6 घनराजु ^{नीचे} प्रथम पृथिवीतक और ऊपर 98 वे स्वर्गतक। तिर्यच असंघत सम्यवृष्टि 98 वे स्वर्गतक उत्पन्न होते हैं।

मनुष्य प्रथम नरकसे और ऊपर सर्वार्थ सिद्धितक उत्पन्न होते हैं किन्तु उनका एक राजु \times एक राजु स्पर्शन नहीं पाया जाता मतः पूर्ण राजुमें स्पर्शन नहीं होता।

संघतसंघत स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना समुद्धात, कषाय समुद्धात और वैक्रियिक समुद्धात स्पर्शन \rightarrow उलोक, तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक \times असंख्यात असंख्यात, संख्यात

स्वस्थान स्वस्थान क्षेत्रके निकालनेका विधान -

$$\begin{aligned} \text{स्वयंप्रमण समुद्रका विष्कंभ} &= \text{एक तरफ } \frac{1}{2} \text{ राजु} + \text{दूसरी तरफ } \frac{1}{2} \text{ राजु} = \frac{2}{2} = \frac{1}{1} \text{ राजु} \\ \text{स्वयंप्रमण पर्वतका परभागवती क्षेत्र} &= " " \frac{1}{68} \text{ राजु} + " " \frac{1}{68} " = \frac{2}{68} = \frac{1}{34} \text{ राजु} \\ &= \frac{1}{2} + \frac{1}{34} = \frac{17}{34} + \frac{1}{34} = \frac{18}{34} = \frac{9}{17} \text{ क्षेत्र} \end{aligned}$$

26 को जगत्प्रतर प्रमाण करनेके लिए 45 का भाग दिया और उसको जगत्प्रतरके 258 घनफल से गुणा किया $\frac{26 \times 45}{258 \times 45} = \frac{9323}{92548}$ ऐसा कहे अथवा $\frac{26}{258}$ जगत्प्रतर कहे दोनो अर्थ एक है

एक राजु - $\frac{4}{2} = \frac{9 \times 4}{2} = \frac{4}{2} = \frac{4-4}{2} = \frac{3}{2}$

इस 3/2 भागवाले सूर्यमंडलके आकारसे संस्थित और भोगभूमिसे प्रतिबद्ध क्षेत्रमें संयतासंयत जीव नहीं होते हैं।

किन्तु बाहरी 4/2 भागोंमें, जम्बूद्वीप, धालकी सड और पुष्करार्थ द्वीप, लवणोदधि और कालोदधि समुद्र इनमें संयतासंयत जीव रहते हैं क्योंकि वहांपर कर्मभूमि है।

भोगभूमि प्रतिबद्ध क्षेत्र 3/2 राजुप्रमाण है उसका क्षेत्रफल =

$(\frac{मास}{2})^2 \times 3 =$ समस्त क्षेत्रफल अथवा व्यास $\times 3 \times$ व्यास = क्षेत्रफल

$(\frac{3}{2} \times \frac{1}{2})^2 \times 3 = \frac{3 \times 3 \times 3}{2 \times 2} = \frac{9}{2} \times \frac{3}{2}$

$= \frac{3 \times 3}{9 \times 9} \times 3 = \frac{26}{258}$ राजुप्रतर $= \frac{26}{258}$ राजुप्रतर

यह प्रमाण जगत्प्रतरका कितनेवा भाग है यह निकालनेके लिए जगत्प्रतरमें इसका भाग देना जगत्प्रतर अथवा 6 रासु $\frac{26}{258} = \frac{45 \times 258}{26} = \frac{12488}{26} = 484$ 1/2 जगत्प्रतरका इतनेवा भाग है अतः 6² वर्गको इसका भाग दिया।

उपर देखना

यह स्वयंप्रमाणत्वके आन्तर भागवर्ती मध्यमक्षेत्रका क्षेत्रफल है।

(राजुप्रतर - उपर्युक्त क्षेत्रफल) \times संख्यात अंगुल = संयतासंयत स्वस्थान क्षेत्र एक जीवकी ऊंचाई संख्यात घनांगुलप्रमाण होती है इसलिये घनफल निकालनेके लिए संख्यात घनांगुलसे गुणा करना चाहिए। यह तिर्यग्लोकका संख्यातवा भाग स्वस्थानक्षेत्र हो जाता है।

विहारवत्स्वस्थान स्पर्शनि \rightarrow जगत्प्रतर \times संख्यात अंगुल $\frac{45}{26}$

संयतासंयत जीवोंको पूर्वभवे वैरी देव मध्यवर्ती असंख्यात द्वीप समुद्रोंमें फेक देते है उस अपेक्षा संपूर्ण राजुप्रतर स्पर्शनि बन जाता है। एक जीवकी ऊंचाई संख्यात सूच्यंगुल प्रमाण है उससे गुणा करनेपर विहारवत्स्वस्थान क्षेत्र बन जाता है। उसे जगत्प्रतरप्रमाण करनेके लिए उनंचास का भाग देना।

भारणान्तिक समुद्रांतगत संयतासंयत जीवोंका स्पर्शनि \rightarrow कुछ कम 6/9 भाग संयतासंयत तिर्यग्ल 98 वे स्वर्गतिक भारणान्तिक समुद्रांत करते है। 98 वे स्वर्गतिक 6 राजु होते है। मनुष्य संयतासंयत नववे धैर्यकतक उत्पन्न होते है किन्तु उनका स्पर्शनि के 84 लाख योजन ही है अतः पूर्ण राजुप्रतर नहीं है इसलिये उनकी अपेक्षा स्पर्शनि 6 राजु नहीं होता।

कुछ कमका प्रमाण \rightarrow चित्रा पृथिवी संबंधी नीचेके एक हजार योजन और आरण अव्युत्

विमानोंका उपरिम भाग

पृ. 968 नारकी मिथ्यादृष्टि मारणान्तिक समुद्घात और उपपाद पदमें स्पर्शन \rightarrow कुछ कम $\frac{6}{98}$ सातवे नरकसे मध्यलोक पर्यन्त 6 राजु होते हैं।
 आनुपूर्वी नामकर्मके उदयके अयोग्य क्षेत्रमें उत्पन्न होनेके प्रथम, द्वितीय, तृतीय विग्रहोंमें अवस्थान नहीं है अतः कुछ कम लेना।

नारक सासादनं सम्भृष्टि मारणान्तिक समुद्घात पदमें स्पर्शन \rightarrow कुछ कम $\frac{4}{98}$ छठे नरकसे मध्यलोक पर्यन्त 9 राजु होते हैं। सातवी पृथिवीके नारक सासादन सम्भृष्टियोंका मारणान्तिक समुद्घात करना संभव नहीं है।

पृ. 969-970 एक नारकावासका विष्कम्भ \rightarrow जगत्त्रेणी
 जगत्त्रेणीका द्वितीय वर्गमूल जगत्त्रेणी 24E
 क्षेत्रफल = व्यास \times व्यास $\frac{24E \times 24E}{8} = \frac{24E}{8}$ डि.मू. 3
 $\frac{\text{जगत्त्रेणी} \times \text{जगत्त्रेणी}}{\text{डि.मू.}} = \frac{24E \times 24E}{8} = \frac{54432E}{9E} = \text{जगत्प्रतर } 5443E$
 डि.मू. प्र.मू. 3E

पृ. 973-973 प्रथम पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि नारकियोंका मारणान्तिक और उपपाद पदमें स्पर्शन \rightarrow उं लोक \div अस्संख्यात, तिर्यग्लोक \div संख्यात, मनुष्यलोक \times संख्यात तिर्यग्लोकका संख्यातवा भाग किस प्रकार होता है उसका स्पष्टीकरण \rightarrow
 प्रथम पृथिवीकी मोटाई (वाहत्य) 9,20,000 योजन है उसमें नीचे एक हजार योजनोंमें नारकियोंका गमन नहीं होता अतः 9,09,000 योजन वाहत्यरूप वाजुप्रतरोंमें उनका स्पर्शन पाया जाता है।

9 राजु \times 9 राजु \times 9,09,000 योजन = प्र.पू. नारकियोंका मारणान्तिक स्पर्शन
 9 राजुप्रतर \times 9,09,000 योजन \rightarrow इसको जगत्प्रतर प्रमाण करने के लिए
 9 राजुप्रतर \times 9,09,000 यो 89 का भाग देनेपर
 $\frac{89}{89} = 3643 \frac{3}{89}$ योजन वाहत्यरूप जगत्प्रतर आता है।

तिर्यग्लोक \rightarrow एक राजु चौड़ा, 9 राजु लम्बा, 9,00,000 योजन मोटा है

$$\frac{9000000}{965000} = \frac{9000000}{85} \times \frac{85}{965000} = \frac{600}{965} = 3 \frac{983}{965} \text{ इतना होता है}$$

9 राजु X 6 राजु X 900000 योजन = 6 राजुप्रतर X 900000 योजन

इसे जगत्प्रतर प्रमाण करने के लिए डुवाई में 6 का भाग देना

6 राजुप्रतर = 9 जगत्प्रतर

$\frac{9000000 \text{ योजनप्रमाण}}{6} \text{ जगत्प्रतर} = 98225.9 \text{ योजन बाहल्यप्रमाण जगत्प्रतर}$

पूर्वोक्त प्रथम पृथिवी के मारगान्तिक स्पर्शन से यह क्षेत्र कुछ कम अतः मारगान्तिक स्पर्शन तिर्यग्लोक का संख्यातवा भाग होता है। लोक को गोलाकार मानने पर उक्त क्षेत्र तिर्यग्लोक से अधिक होता है।

गोला तिर्यग्लोक = 9 राजु व्यास, 9 लाख योजन डुवाई

तिर्यग्लोक का घनफल = व्यास X 3 X व्यास X डुवाई

9 राजु X 3 X 9 राजु X 9,00,000 योजन

इसको जगत्प्रतर प्रमाण करने के लिए

85 का भाग दिया। एक प्रदेश मोटाई प्रमाण X जगत्प्रती X नगत्प्रती = जगत्प्रतर होता है

अतः 85 का गुणा किया $\frac{3}{85}$ राजुप्रतर X 9,00,000 योजन X 85 यह तिर्यग्लोक का घनफल

गोलाकार मारगान्तिक क्षेत्र = 9 राजु व्यास, 965000 योजन डुवाई

9 राजु X 3 X 9 राजु X 965000 योजन

$\frac{3}{85}$ राजुप्रतर X 965000 योजन

इसको जगत्प्रतर प्रमाण करने के लिए 85 का भाग देना। और एक प्रदेश प्रमाण जगत्प्रतर के घनफल 85 से गुणा करना

$\frac{3}{85}$ राजुप्रतर X 965000 योजन X 85 ऐसा अथवा $\frac{3}{85} \times \frac{965000}{85}$ मोटाई प्रमाण जगत्प्रतर

घट्ट प्रमाण तिर्यग्लोक से कुछ 85 अधिक है।

पृ. 950	मारगान्तिक समुद्धान और उपपादगत मिथ्यादृष्टि	नारकी	पृथिवी की	अपेक्षा	स्पर्शन	भाग	कुछ कम
	"	"	दूसरी	"	"	$\frac{1}{85}$	"
	"	"	तिसरी	"	"	$\frac{2}{78}$	"
	"	"	चौथी	"	"	$\frac{3}{78}$	"
	"	"	पाचवी	"	"	$\frac{4}{78}$	"
	"	"	छठी	"	"	$\frac{5}{78}$	"
	"	"	सातवी	"	"	$\frac{6}{78}$	"

वैक्रियिक समुद्धानगत तिर्यक स्पर्शन -> 3 लोक तिर्यग्लोक X असंख्यात असंख्यात, मनुष्यलोक X "

वायुकारिक जीव भेरुपर्वत के मूल से डुपर पांच राजु बाहल्यवाले एक राजुप्रतर प्रमाण क्षेत्र को

स्पर्श करते हैं।

तिर्य्य सासादन सम्यग्दृष्टि स्वस्थानस्वस्थान क्षेत्र \rightarrow तिर्य्यलोक \div संख्यात हैं। उसको निकालनेका विधान \rightarrow

लवणसमुद्र, कालोदक समुद्र और स्वयंभूरमण समुद्रको छोड़कर शेष समुद्रोंमें सासादन सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं क्योंकि उन समुद्रोंमें त्रस जीव नहीं उत्पन्न होते हैं। मात्र सर्व द्वीपोंमें स्वस्थानस्वस्थान पदवाले सासादन-सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं क्योंकि वहांपर त्रसजीवोंकी उत्पत्ति देखी जाती है।

सर्व द्वीप और तीन समुद्रका प्रमाण लानेकी विधि -

जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल = 690489950 वर्गयोजन

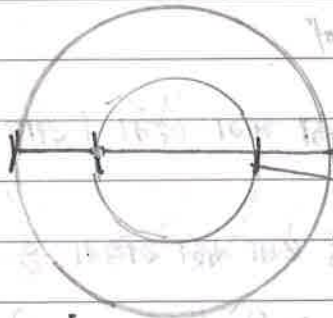
जम्बूद्वीपके उक्त क्षेत्रफलकी एक शलाका मानकर इस प्रमाणसे लवणसमुद्रके खंड करनेपर चौबीस खंड होते हैं।

खंडोंका प्रमाण लानेका करणसूत्र \rightarrow

$$\frac{(\text{बाह्यसूची})^2 - (\text{अभ्यन्तरसूची})^2}{(\text{जम्बूद्वीपव्यास})^2} = \text{विक्षिप्त द्वीपसमुद्रमें जम्बूद्वीपप्रमाण खंड}$$

लवणसमुद्र बाह्यसूची 5 लाख योजन बाह्यसूची = एक ओरके दूसरी ओरका
" अभ्यन्तरसूची 9 लाख योजन अभ्यन्तरसूची = बाह्यतट से बाह्यतट

जम्बूद्वीपप्रमाण



लवणसमुद्रके खंड =

$$\frac{(5 \text{ लाख})^2 - (9 \text{ लाख})^2}{(9 \text{ ल})^2} = \frac{25 \text{ लाख लाख} - 81 \text{ लाख लाख}}{81 \text{ लाख लाख}}$$

$$= \frac{28 \text{ लाख लाख}}{9 \text{ लाख लाख}} = 28 \text{ खंड लवणसमुद्रमें}$$

बाह्यसूची व्यास निकालनेका सूत्र = (व्यास \times 8) $-$ 3 लाख

लवणसमुद्रका व्यास 2 लाख = 2 लाख \times 8 = 16 लाख $-$ 3 लाख = 13 लाख

धातकी खंडमें जम्बूद्वीपप्रमाण खंडोंका प्रमाण =

धातकी खंडका बाह्यसूचीव्यास = (8 \times 8) $-$ 3 = 64 $-$ 3 = 61 लाख योजन

आभ्यन्तरसूची व्यास = 5 लाख योजन

$$\frac{(61 \text{ लाख})^2 - (5 \text{ लाख})^2}{(9 \text{ लाख})^2} = \frac{3721 \text{ लाख लाख} - 25 \text{ लाख लाख}}{81 \text{ लाख लाख}}$$

$$\frac{3696 \text{ लाख लाख}}{81 \text{ लाख लाख}} = 2 \times 968 \text{ खंड धातकी खंडमें}$$

3) कालोदधि समुद्र में जंबू द्वीपप्रमाण खंड -

षाट्सूची = $(2 \times 4) - 3 = 32 - 3 = 29$ लाख आयन्तर सूची 13 लाख योजन
संक्षेपमें: $29^2 - 13^2 = 649 - 169 = 480$

पुष्कर द्वीप में 2000
इस प्रकार, पुष्कर समुद्र में 99908, वारुणी द्वीप में 48328 वारुणी समुद्र में 935062,
इत्यादी. स्वयंभूरमण समुद्रपर्यंत खण्ड लाना।

लवण समुद्र प्रमाण एक खंड मानकर सब समुद्रों के खंडों का प्रमाण लाना।
सब समुद्रों के खंडों में 28 का भाग देने पर लवण समुद्र समान खंड होते हैं।

लवण समुद्र में $\frac{28}{28} = 1$ खंड

कालोदक समुद्र में $480 \div 28 = 17$ खंड वारुणी समुद्र में $935062 \div 28$

पुष्कर समुद्र में $99908 \div 28 = 3568$ खंड 2920 खंड

इन खंडों के प्रमाण को :-

उपर्युक्त खंडप्रमाण \times लवण समुद्र के जंबू द्वीपप्रमाण खंड \times जंबू द्वीप क्षेत्रफल = विवक्षित
द्वीप अथवा समुद्र का क्षेत्रफल

कालोदक समुद्र का क्षेत्रफल = $28 \times 28 \times 649058950$

अपने अपने इष्ट समुद्रों की लवण समुद्र प्रमाण गुणकार शलाकाओं के निकालने का
विधान -

जितनेवा समुद्र हो उतनी ^{उसकी} क्रमशलाका होती है, उसमें से एक करके जो
संख्या हो उसका विरलन कर प्रत्येक पर सोलह रखकर परस्पर गुणा
करना उसका दुगुणा करना। उसमें से घटाने का प्रमाण -

प्रथम विरलन को विरलित कर प्रत्येक के उपर चार रखकर परस्पर गुणा
करके जितना लब्ध आवे उतना उपर्युक्त द्विगुणित संख्या में से घटाना।

कालोदक समुद्र की गुणकार शलाका =

क्रमशलाका = 2 $2-1=1$

$\frac{16}{9} = 16$ $16 \times 2 = 32$

$\frac{8}{9} = 8$ $32-8 = 24$ कालोदक समुद्र की गुणकार शलाका

पुष्कर समुद्र की गुणकार शलाका = क्रमशलाका 3

$3-1=2$ $\frac{16}{9} \frac{16}{9} = 256$ $\frac{8}{9} \frac{8}{9} = 64$ अंग

$256 \times 2 = 512 - 64 = 448$ पुष्कर समुद्र की गुणकार शलाका

वारुणीवर समुद्र की गुणकार शलाका \rightarrow क्रमशलाका 4

$4-1=3$ $\frac{16}{9} \frac{16}{9} \frac{16}{9} = 4096$, $4096 \times 2 = 8192$ $\frac{8}{9} \frac{8}{9} \frac{8}{9} = 512$ अंग

1982-88 = 1924 चतुर्थ समुद्र की गुणकारशलाका

गुणकार शलाका \times लवणसमुद्र का क्षेत्रफल = विवक्षित समुद्र का क्षेत्रफल

इस प्रकार सभी समुद्रों का क्षेत्रफल निकालना।

सब समुद्र के खंडों में क्रमसे एकको आदि लेकर चौगुना गुण मिलानेपर

खण्डशलाकाए क्रमसे सोलह गुणित होती है।

$$\text{लवणसमुद्र } 9 + 9 = 2 \quad 2 \times 9E = 32$$

$$\text{कालोदक समुद्र } 24 + 8 = 32 \quad 32 \times 9E = 492$$

$$\text{पुष्कर समुद्र } 89E + 9E = 992$$

$$\text{वारुणीवर समुद्र } 1924 + 88 = 1982$$

स्वयंभूरमण समुद्र की गुणकारशलाकाए

सर्व द्वीप समुद्रों की संख्या = 2 अ मानी सर्व समुद्रों की संख्या = 2 अ = अ

सर्व द्वीप समुद्रों की संख्या को आधा करनेपर सर्व समुद्रों की संख्या हो जाती है। स्वयंभूरमण समुद्र अंतिम है अतः समुद्रों की संख्या ही उसकी क्रमशलाका है। उपर्युक्त विधिनुसार क्रमशलाका में से एक कम करके उतनी बार

9E अंकों को रखकर परस्पर गुणा करना।

सर्व द्वीप समुद्रों की संख्या राजुके अर्धच्छेदों से कुछ कम है उसका यथा आधा प्रमाण समुद्रों की संख्या है।

राजुके अर्धच्छेदप्रमाण स्थानों में दो-दो रखकर परस्पर गुणा करनेपर राजु होता है।

उतनी जगह चार-चार रखकर परस्पर गुणा करनेपर राजुका वर्ग होता है।

राजुके अर्धच्छेदके आधे प्रमाण मात्र स्थानों में 9E रखकर परस्पर गुणा करनेसे भी

राजुका वर्ग होता है। क्योंकि किसी भी गच्छके आधे प्रमाण मात्र स्थानों में

विवक्षित गुणकारको रखकर परस्पर में गुणा करनेपर जो प्रमाण जाता है वही प्रमाण

विवक्षित गच्छ प्रमाण मात्र स्थानों में विवक्षित गुणकारका वर्गमूल रखकर परस्पर में गुणा करनेपर होता है।

यहां राजुके अर्धच्छेदोंके आधे प्रमाण बार 9E = 9E रखकर परस्पर

गुणा करनेपर राजुका वर्ग होता है। राजुका वर्ग = जगत्प्रातर

राजुके अर्धच्छेदों में से 900000 योजनके अर्धच्छेद

और मेरुपर्वतपर का एक अर्धच्छेद कम करना है। जो राशि कम करना

है उतनी बार 9E-9E का परस्पर गुणा करके जो लब्ध आता है वह

भागहार राशि होती है। यहां एक लाख योजनके अर्धच्छेदोंके आधे प्रमाण बार

9E रखनेपर एक लाख का वर्ग आता है और एक के आधे प्रमाण बार 9E

रखने पर उसका वर्गमूल ६ होगा। और क्रमबद्धाकार में से एक कम करने पर है उसका ~~वर्ग~~ प्रमाण। ज्ञाते सब भाग्य राशि में जलिखेंगे

जल:

$$9E - 9 = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{49 \times 100000^2 \times 4 \times 9E} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{100000^2 \times 393E}$$

इस लब्ध राशिको 'ब' प्रमाण माना

$$b \times 2 = 2b$$

ऋण राशि

उपर्युक्त गच्छप्रमाण बार ४-४ रखकर गुणा करने पर छपरकी संख्याका वर्गमूल प्रमाण राशि लेगी अर्थात्

$$\frac{\text{जगत्क्षेत्री}}{6 \times 9000000 \times 2} = \frac{\text{जगत्क्षेत्री}}{5E000000} \quad \text{स जो लब्ध आया उसको स माना}$$

2b - स = स्वयंभूरमणसमुद्रकी गुणकारबालाकार

$$(2b - स) \times \text{लवणसमुद्रका क्षेत्रफल} = \text{स्वयंभूरमण समुद्रका क्षेत्रफल} = \frac{16-21 \times 10^2}{22}$$

अर्थात् जगत्क्षेत्री

इन सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफले का संकलन →

$$\text{संकलन सूत्र} = \frac{(\text{गुणकार} - 9) \times \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 9}$$

उदा.

यहांपर लवणोद और कालोदक समुद्रका जोड →

$$\frac{(9E \times 9E - 9) \times 2}{9E - 9}$$

सर्वत्र दो का गुणकार है इसलिये दो से गुणा करना

$$\frac{(24E - 9) \times 2}{9E} = \frac{244 \times 2}{94} = 96 \times 2 = 38$$

ऋणोंका जोड उपर्युक्त सूत्रानुसार →

$$\frac{(4 \times 4 - 9) \times 9}{4 - 9} = \frac{(9E - 9) \times 9}{3} = \frac{94}{3} = 4$$

उपर्युक्त धनका जोड - ऋणका जोड = संकलन गुणकार शलाका

$$38 - 4 = 29 \quad \text{लवणोद और कालोदक समुद्रकी गुणकार शलाका}$$

लवण समुद्र समान खण्डोंका प्रमाण
 लवण समुद्रकी १ शलाका, कालोदक समुद्रकी २८ शलाकाएं, पुष्कर समुद्रकी ४९६ शलाकाएं हैं इन गुणकार शलाकाओंका जोड़ करने के लिए ये संख्याएं समान गुणकार रूप लेनी चाहिए इसलिए इसमें एकसे लेकर चतुर्गुणित क्रम मिलानपर ये संख्याएं १६ गुणकार से गुणित हो जाती हैं।

समुद्र	धनराशि					ऋणराशि				
क्षीरवर	२	१६	१६	१६	१६	१	४	४	४	४
पारुणीवर	२	१६	१६	१६		१	४	४	४	
पुष्कर	२	१६	१६			१	४	४		
कालोद	२	१६				१	४			
लवणोद	२	१				१				

ऐसे स्वयंभूरमणसमुद्रपर्यन्त धन व ऋण जानना।

धनमेंसे ऋण घटानपर जो प्रमाण रहे उतने ही लवणसमुद्रसमान खण्ड उस समुद्रमें होते हैं ऐसा जानना।

जैसे - दूसरे स्थानमें धन - ऋण = खण्डोंका प्रमाण

$$(2 \times 16) - (3 \times 4) = 32 - 12 = 20 \text{ कालोद समुद्रमें खण्डोंका प्रमाण}$$

इन पूर्वोक्त संकलन शलाकाओंसे लवणसमुद्र समुद्र संबंधी क्षेत्रफलको गुणित करनेपर विवक्षित समुद्रोंका क्षेत्रफल हो जाता है।

लवणसमुद्रका क्षेत्रफल 690489490×28

लवणोदकालोदक की संकलित गुणकार शलाका \times लवणोद क्षेत्रफल = दो समुद्रोंका क्षेत्रफल

$$29 \times 690489490 \times 28 = \text{लवणोद और कालोद का क्षेत्रफल}$$

पूर्वोक्त गुणकार शलाकाओंको ही लानेका विधान \rightarrow

तीन समुद्रोंके क्षेत्रफलका संकलन =

$$\frac{(\text{गुणकार}^3 - 9) \times \text{आदि}}{\text{गुणकार} - 9} = \text{गुणकार शलाकाओंका संकलन}$$

$$\left(\frac{9 \times 9 \times 9 - 9}{9 - 9} \right) \times 2 = \frac{809 - 9}{9} = \frac{800}{9} = 263 \times 2 = 526 \text{ संकलन}$$

ऋणराशिका संकलन \rightarrow

$$\left(\frac{4 \times 4 \times 4 - 9}{4 - 9} \right) \times 1 = \frac{64 - 9}{3} = \frac{55}{3} = 29$$

५४६ - २१ = ५२५ तीन समुद्रों की गुणकार शलाकाओं का जोड़

गुणकार: यहां पर ऋण राशियों का संकलन करने की दूसरी सूत्र बताते हैं।
इष्ट शलाकाराशिका जो प्रमाण हो उतने बार चारको रखकर परस्पर में गुणा
करे पुनः उसे पांचसे गुणा करे और फिर एक आदि चतुर्गुण संकलन राशिकों
प्रक्षेप करना चाहिए ऐसा करने पर अपनचन राशिका प्रमाण आ जाता है।
यहां पर सर्वत्र दो कम गच्छराशि को इष्ट शलाका समझना।

चार समुद्रों के ऋणों का संकलन =

$$४ - २ = २ इष्ट शलाका \frac{४}{१} \frac{४}{१} = १६ (१६ \times ५) + ५ = ८० + ५ = ८५$$

पांच समुद्रों का संकलन

$$५ - २ = ३ इष्ट शलाका \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} = ६४ (६४ \times ५) + २९ = ३२० + २९ = ३४९$$

छह समुद्रों का ऋण संकलन

$$६ - २ = ४ इष्ट शलाका \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} = २५६ (२५६ \times ५) + ८५ = १२८५$$

स्वयंभूरमण समुद्र को छोड़कर शेष सर्व समुद्रों के क्षेत्रफल निकालने का विधान →

(द्वीपसमुद्रों संख्या ÷ २) - १ = विवक्षित गच्छ

द्वीपसमुद्रों की संख्या = राजुके अर्धच्छेद - (लारव योजनके अर्धच्छेद + मेरुके मसूका अर्धच्छेद)

राजुके अर्धच्छेद प्रमाण बार २-२ रखकर परस्पर गुणा करने पर राजु आता है।

राजुके अर्धच्छेदके आधे प्रमाण बार २-२ रखकर परस्पर गुणा करने पर राजुका वर्गमूल

आता है यहां गच्छ उसमें भी एक कम है इसलिए राजुके वर्गमूल का आधा आता है।

राजुके अर्धच्छेदमें जितनी संख्या घटानी है उतने प्रमाण २-२ रखकर जो लब्ध

आयेगा वह भागहार राशि होती है। राजु = जगत्श्रेणी ७ राजु ७

$$१) \text{राजुका वर्गमूल} \div १००,००० \text{ यो.} \times २ = \sqrt{\frac{\text{राजु } ७}{१० \times १०००० \text{ यो.} \times २}} = \sqrt{\frac{\text{राजु } ७}{२}} = \sqrt{१४०००००}$$

२) विवक्षित गच्छ प्रमाण बार ४-४ रखेंगे तो उपर्युक्त राशिका वर्ग आता है

$$\text{अतः} \frac{\text{राजु } ७}{४ \times ४} \div १४००००० \text{ यो.}$$

५) विवक्षित गच्छ प्रमाण बार १६-१६ रखने पर उपर्युक्त दूसरी राशिका वर्ग आता है

$$\frac{\text{राजु } ७^2}{१६ \times १६ \times १०००००^2 \times ४ \times ४} = \frac{\text{राजु } ७^2}{१०००००^2 \times ४९ \times ६४} = \frac{\text{राजु } ७^2}{१०००००^2 \times ७ \times ७ \times ८ \times ८} = \frac{\text{राजु } ७^2}{१०००००^2 \times ५६ \times ५६}$$

$$21जु०^2 \div 48000000^2 = 21जु०^2 \div 9000000^2 \times 3938 \text{ यो.}$$

$$\text{गुणकार संकलन सूत्र} = \frac{\text{गुणकार}^{\text{पद}} - 1}{\text{गुणकार} - 1} \times \text{आदि} = \text{गुणित राशिका संकलन धन}$$

98 गुणकार को उक्त पद प्रमाण वार रखने पर 3938 से गुणित लक्ष योजने के वगैरे भाजित जगत्प्रतर लब्ध आया है उसे रखकर

$$\left\{ \left(\frac{21जु०^2}{9000000^2 \times 3938} \right) - 1 \right\} \times 2 = \frac{21जु०^2}{9000000^2 \times 3938 \times 99} = \frac{20^2 \times 2}{900000^2 \times 86060}$$

इसमें से ऋणराशिका संकलन धन घटाकर लवणसमुद्र के क्षेत्रफल से गुणा करने पर स्वयंभूरमणसमुद्र से रहित शेष समस्त समुद्रों का क्षेत्रफल होता है

ऋणराशिका संकलन धनराशिका संकलन का वर्गमूल प्रमाण आता है

$$\text{अतः ऋणराशि संकलन} = \frac{21जु०}{900000 \times 48} = \frac{20}{48000000 \text{ यो.}}$$

जगत्त्रेणी को छप्पन लाख योजने का भाग देने पर जगत्त्रेणी का असंख्यात-का भाग आता है अतः बड़ा ऋणराशि जगत्त्रेणी का असंख्यातवे भागप्रमाण बतानी लवणसमुद्र का क्षेत्रफल = 28×6904894940

$$\left\{ \left(\frac{20^2 \times 2}{9000000^2 \times 86060} \right) - \left(\frac{20}{48000000 \text{ यो.}} \right) \right\} \times 28 \times 6904894940 = \frac{20^2}{9238}$$

स्वयंभूरमणसमुद्र को छोड़कर शेष समुद्रों का क्षेत्रफल

$$\text{राजुप्रतर} - \left(\text{स्वयंभूरमणसमुद्र रहित समुद्र क्षेत्रफल} - \text{लवण और कालोद समुद्र का क्षेत्रफल} \right) = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{कुछ 49 अधिक}}$$

तिर्यंच सासादन जीवों का स्वस्थान स्वस्थान स्वरनि

$$2^2 - \left(\frac{20^2}{9238} - 29 \times \text{लवणसमुद्र क्षेत्रफल} \right) = \frac{20^2}{\text{कुछ अधिक 49}}$$

दो समुद्रों का क्षेत्रफल संख्यात सूत्र्यंगुल प्रमाण है उसको पूर्वोक्त धनराशि में से कुछ कम हो जायेगा

$$\begin{aligned} \text{र जगत्प्रतर} - \frac{\text{जगत्प्रतर}}{89} &= \frac{20^2 \times 9238}{9238} - \frac{20^2 \times 89}{89 \times 9238} = \frac{20^2 \times 9238 - 89}{9238 \times 89} \\ &= \frac{20^2 \times 9990}{89 \times 9238} = \frac{20^2}{49 \text{ कुछ अधिक}} \end{aligned}$$

तिर्यंच सासादन स्वस्थान स्वस्थान स्वरनि

पृ. 208 मारणान्तिक समुद्घात प्राप्त तिर्यच सासादन सम्यग्रृष्टि का स्पर्शन ^{कुछ} $\frac{9}{98}$ भाग मेरुपर्वतके मूलसे ऊपर लोकान्तक 6 राजु लेना क्योंकि सासादन सम्यग्रृष्टि नरकमें मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते।

पृ. 209 उपपादपदमें तिर्यच सासादन का स्पर्शन $\frac{99}{98}$ भाग नीचे छठी पृथिवीसे मध्यलोकपर्यंत 9 राजु और ऊपर 98 वे स्वर्गसे मध्यलोकपर्यंत 6 राजु इस प्रकार $9+6 = 99$ राजु स्पर्शन संभव है। यद्यपि 92 स्वर्गलोकके ही देव तिर्यच होते हैं तथापि नीचले स्वर्गके देव किलार करते हुए 98 वे स्वर्गमें गये और वहां उनका मरण हुआ तो वहीसे उपपाद पद प्रारंभ होगा इसलिए 98 वे स्वर्गसे मध्यलोकपर्यंत 6 राजु स्पर्शन बताया।

पृ. 208 असंयत और संयत/संयत गुणस्थानवर्ती तिर्यच मारणान्तिक समुद्घात स्पर्शन ^{सम्यग्रृष्टि} कुछ कम $\frac{6}{98}$ है - तिर्यच सम्यग्रृष्टि सोलहवे स्वर्गतक उत्पन्न होते हैं अतः मेरुपर्वतके मूलसे 98 वे स्वर्गतक 6 राजु स्पर्शन संभव है।

पृ. 209 उपपादपदगत असंयत सम्यग्रृष्टि तिर्यचोंका स्पर्शन \rightarrow 3 लोकः असंख्यात तिर्यग्लोक \div संख्यात, मनुष्यलोक \times असंख्यात ^{योगभूमि} केवल क्षाधिक सम्यग्रृष्टि अथवा कुलकृत्यवेदक सम्यग्रृष्टि मनुष्य ही तिर्यचोंमें ही चतुर्थ गुणस्थानसहित उत्पन्न होते हैं। अन्य सम्यग्रृष्टि जीव तिर्यचमें उत्पन्न नहीं होते। स्वयंप्रभ पर्वतका भीतरका सर्व भाग उपपादपारिगत असंयत सम्यग्रृष्टि तिर्यचोंके द्वारा स्पर्श किया गया है। अतः उसको निकालनेका विधान ^{अन्तर्भागवती} स्वयंप्रभ पर्वतसे परभागवती प्रदेश $\frac{5}{9}$ राजु 9 राजु $-\frac{5}{9} = \frac{8-5}{9} = \frac{3}{9}$ भाग अन्तर्भागवती प्रदेश

सूक्ष्म क्षेत्रफल निकालनेका सूत्र = $\sqrt{\text{व्यास}^2 \times 90} \times \frac{\text{व्यास}}{8}$

व्यास $\frac{3}{2}$

$$\sqrt{\frac{3}{2} \times \frac{3}{2} \times 10} \times \frac{3}{8}$$

5 का वर्गमूल 3, 10 का वर्गमूल 3.16

$$= \sqrt{\frac{90}{4}} \times \frac{3}{8} = \frac{\sqrt{90}}{2} \times \frac{3}{8} = \frac{9.48}{2} \times \frac{3}{8} = \frac{14.22}{8} = \frac{1.7775}{1}$$

$\frac{1.7775}{1} \times \frac{3}{32} = \frac{5.3325}{32}$ इसको जगत्प्रतरप्रमाण करनेके लिए 48 का भाग देना।

$$\frac{5.3325}{32} \times 48 = \frac{255.6}{32} = 7.9875$$

यह जगत्प्रतर का कितनेवा

भाग है उसे निकालने के लिए जगत्प्रतर में इसका भाग देना

$$\frac{26^2}{46} = \frac{89 \times 25000}{46} = \frac{89 \times 480}{46}$$

तिर्य्य सम्यग्दृष्टियोंका उपपाद क्षेत्र = $\frac{26^2}{46} = \frac{89}{460 \times 46} = \frac{89}{25000} = \frac{89 \times 46}{25000}$ उपपाद क्षेत्र

स्वस्थान स्वस्थान पदस्थित संयता संयत तिर्य्योंका स्पर्शन = उलोक संख्यात, तिर्य्यलोक संख्यात
अदाई द्वीप X असंख्यात

जगत्प्रतर - असंयत सम्यग्दृष्टि तिर्य्योंका उपपाद प्रतर क्षेत्र

$$9 - \frac{46 \times 89}{25000} = 9 - \frac{2693}{25000} = \frac{25000 - 2693}{25000} = \frac{22297}{25000}$$

89 से भाग जाता है $\frac{89}{46}$ आता है

यह जगत्प्रतरका कितनेवा भाग है इसको निकालने के लिए इससे जगत्प्रतरको भाग देना $\frac{89}{46} = \frac{89 \times 492}{46 \times 492} = \frac{24000}{46 \times 492} = 49 \frac{8}{492}$ जगत्प्रतरको कितनेवा भाग क्षेत्रफल जोचना

उसे संख्यात उल्लेधांगुल्य प्रमाण ऊंचाई से गुणा करने पर तिर्य्य संयतासंयतोंका स्वस्थान स्वस्थान स्पर्शन आता है।

भारगान्तिक समुद्धात में तिर्य्य संयतासंयतोंका स्पर्शन कुछ कम है।
मेरुपर्वतके मूलसे 18 वे स्वर्गतक संयतासंयत जीव भारगान्तिक समुद्धात करते हैं।

पृ. 227 भारगान्तिक समुद्धात गत असंयत मनुष्योंका स्पर्शन -> तिर्य्यलोकका संख्यातवा भाग
उसको निकालनेका विधान -
पहले तिर्य्यचायुको बाधा है ऐसे मनुष्य पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण करके तिर्य्यों में उत्पन्न होते हैं इसकी अपेक्षा तिर्य्यलोकका संख्यातवा भाग स्पर्शन होता है।
स्वयंप्रभ पर्वतके भीतर असंख्यात द्वीपोंमें भोगभूमि है वहां असंयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्य्य होते हैं अतः स्वयंप्रभ पर्वतसे भीतरके क्षेत्रका क्षेत्रफल निकालते हैं।

$$\frac{व्यास \times 18 + 18}{993} + \frac{व्यास \times 3}{2} = \text{सूक्ष्म परिधि} \quad \text{व्यास} = \frac{3}{2}$$

$$\frac{3}{2} \times \frac{18 + 18}{993} = \frac{54 + 18}{993} = \frac{72}{993} = \frac{72 \times 13}{2 \times 993} = \frac{936}{1986} = \frac{936}{1986}$$

$$\frac{936}{1986} + \frac{3}{2} = \frac{936}{1986} + \frac{3 \times 993}{2 \times 993} = \frac{936 + 2979}{1986} = \frac{3915}{1986} \text{ परिधि}$$

परिधि \times व्यास $\div 8$ = सूक्ष्म क्षेत्रफल

$$\frac{9983}{508} \times \frac{3}{2 \times 4} = \frac{9983 \times 3}{508 \times 32} = \frac{3999}{22928} \text{ राजुप्रतर क्षेत्रफल}$$

यह क्षेत्र राजुप्रतरकेइ आठवे भागसे कुछ अधिक है अतः तिर्यग्लोकका संख्यातवा भाग और अट्ठाईवीपसे असंख्यातगुणा है

पृ. 225

विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक समुद्घात पदमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसाम्यदृष्टि देवोंका स्पर्शन कुछ कम $\frac{2}{3}$ है। वह नीचे तिसरी पृथ्वीतक ^{2 राजु} और ऊपर सोलहवे स्वर्गतक ६ राजु

मारणान्तिक समुद्घातमें उपर्युक्त जीवोंका स्पर्शन $\frac{2}{3}$ ^{कुछ कम} \rightarrow नीचे तिसरी पृथ्वी तक और ऊपर लोकान्ततक ७ राजु \rightarrow भवनत्रिक और सौधर्मदिकके देवोंने तिसरी पृथ्वी में विहार करनेपर वहां से मारणान्तिक समुद्घात किया तो स्पर्शन होता है। वे देव आठवी पृथ्वी में अथवा बालवल्लयके अपकायिक जीवों में उत्पन्न हो सकते हैं।

उपपादपदगत देवोंने (मिथ्या. और सासा.) कुछ कम $\frac{5}{9}$ भाग स्पर्श किये हैं। क्यों कि मिथ्यादृष्टि और सासादन साम्यदृष्टि तिर्यच $\frac{5}{9}$ १२ वे स्वर्गतक ही पैदा हो सकते हैं अतः मध्यलोकसे १६ वे स्वर्गतक ५ राजु स्पर्शन नीचे भवनवासी में भी पैदा होते हैं। वहांका क्षेत्र बढ़नेपर भी तिर्यच १२ वे स्वर्गकी उपपादशय्यासे ऊपरका शेष क्षेत्र संख्यातगुणा है अतः ५ राजुसे अधिक नहीं होता।

उपपादपदगत असंयत साम्यदृष्टि देवोंका स्पर्शन \rightarrow कुछ कम $\frac{2}{3}$ \rightarrow क्योंकि असंयत साम्यदृष्टि तिर्यच $\frac{2}{3}$ १६ वे स्वर्गतक उत्पन्न होते हैं। मध्यलोकसे ऊपर १६ वे स्वर्गतक ६ राजु होते हैं।

पृ. 235

आनतादि चार कल्पवासी देवोंका उपपाद पदमें स्पर्शन - ४ लोक मनुष्यलोक \times असंख्यात \rightarrow क्योंकि चार कल्पोंमें मिथ्यादृष्टि मनुष्यही उत्पन्न होंगे, तिर्यच नहीं। अतः पैलातीस लाख योजन विष्कम्भवाला और ६ राजुप्रमाण आयत उपपाद क्षेत्र भी तिर्यग्लोकके संख्यातवे भागको नहीं प्राप्त होता है।